मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 63 | अंक : 08 | फरवरी, 2023 | पृष्ठ : 56 | मूल्य : ₹20

18 National Jamboree
4-10 JANUARY 2023
ROHAT, PALI MARWAR, RAJASTHAN
Progress With Peace

इस अंक में...
शिक्षा पर संवाद : माननीय मुख्यमंत्री के साथ

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

चित्र वीथिका : फरवरी, 2023

माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला द्वारा दिनांक 27 जनवरी, 2023 को निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर में शिशु गृह (क्रेच), कार्यालय पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ बीकानेर में डिजिटल स्टूडियो एवं हेरिटेज हॉल के उद्घाटन की झलकियाँ।

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा), संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, (पंचायती राज के अधीनस्थ), कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

"माननीय मुख्यमंत्री जी की बजट घोषणा वर्ष 2022-23 के तहत 5 से 14 जनवरी तक संभागवार मेधावी एवं विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों ने ए.पी.जे. अब्दुल कलाम व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम के तहत अन्तर्राज्य भ्रमण किया। जिसमें सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत के साथ प्रकृति के करीब लाने के लिए महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश से होते हुए रामेश्वरम् तक का सफर सम्मिलित किया गया, जो विद्यार्थियों के लिए काफी रोचक एवं शिक्षाप्रद रहा।"

उमंग एवं उत्साह के साथ परीक्षा की तैयारी

सफल व्यक्ति दूरदृष्टि से भविष्य का अनुमान लगाकर अपने लक्ष्य निर्धारित करते हैं, फिर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रहकर लक्ष्य प्राप्त करने की योजना बनाते हैं। आवश्यक कार्य को सही समय पर करना सफलता की ओर पहला कदम है। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो प्रगति की राह में स्वयं ही बाधा बनेंगे। लक्ष्य को प्राप्त करने की व्याकुलता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है, कि आप इसके लिए क्या कीमत चुका सकते हैं या त्याग कर सकते हैं। जब आप स्वयं को बदलने के लिए तैयार होंगे तभी आगे बढ़ सकेंगे। सूर्य की किरण उत्तरायण होने के साथ भारत वर्ष में पुनः त्योहारों का आगाज हो चुका है। इसके साथ ही परीक्षाओं का मौसम भी नजदीक है। जिस उत्साह और उमंग के साथ त्योहार मनाए जाते है; विद्यार्थी उसी आत्मविश्वास से भरपूर होकर परीक्षा की तैयारी करें। परीक्षा का जीवन में बहुत महत्त्व होता है, निरन्तरता एवं एकाग्रता के साथ की गई तैयारी से परीक्षा देने पर निश्चित रूप से विद्यार्थी सफलता अर्जित करेंगे।

विद्यार्थियों को प्रातःकाल में अध्ययन करना चाहिए। देर रात तक पढ़ने से दिनचर्या बिगड़ जाती है जिससे जैविक चक्र प्रभावित होता है तथा विद्यार्थी बीमार हो जाते है। स्वस्थ रहना जरूरी है क्योंकि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। विद्यार्थियों को नियमित रूप से पढ़ाई करनी चाहिए न कि परीक्षा के दिनों में एक महीने की शृंखला (one month series), एक सप्ताह की शृंखला (one week series) ऐसी पुस्तकें पढ़कर परीक्षा में विद्यार्थी उत्तीर्ण तो हो सकता है किन्तु विषय की मूलभूत जानकारी एवं विषय का ज्ञान अधूरा रहता है। अतएव निरंतर अभ्यास एवं ज्ञानार्जन जारी रखने वाला विद्यार्थी विषय ज्ञान में पारंगत होकर श्रेष्ठता को प्राप्त करता है।

कोविड काल के विगत वर्षों में उत्पन्न हुई शिक्षण बाधा को पार करने के लिए विद्यार्थी को पुस्तक अध्ययन के साथ-साथ ऑनलाइन शिक्षण प्रक्रिया को भी आत्मसात करना चाहिए। ज्ञान की परिसीमा में वृद्धि हेतु ऑनलाइन माध्यम से अध्ययन करना आवश्यक बनता जा रहा है। यह एक ऐसा अवसर है जिसमें यदि अनुशासन एवं नैतिकता को ध्यान में रखा जाए तो विद्यार्थी असीम ज्ञान के भण्डार एवं व्यापकता से रूबरू होंगे। ऑनलाइन अध्यापन में विद्यार्थी भटके नहीं बल्कि आवश्यकता के अनुरूप इन साधनों का उपयोग करें ताकि भौतिक एवं नैतिक जीवन में इसका प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। इन्ही भावनाओं को ध्यान में रखते हुए आगामी सत्र में वर्चुअल गैर सरकारी विद्यालय संचालित करने का निर्णय लिया गया है।

जीवन में ऊर्जावान होना अत्यन्त आवश्यक है जिसकी शुरूआत व्यक्ति को अपने अन्तर्मन से करनी होगी। अतः बालकों को उपलब्ध संसाधनों में सामंजस्य रखते हुए अभिभावक एवं अध्यापकों के मार्गदर्शन अनुसार आगे बढ़ना होगा। जो बातें आपको प्रेरित करें उन्हें अपनी सोच में लाए एवं जिन बातों से नीरसता झलकती हो उनसे दूरी बनाए रखे। यदि आप स्वयं का सही विश्लेषण करते हुए निर्धारित लक्ष्य पर निगाह रखेंगे तो निश्चित ही सफलता आपके कदम चूमेगी।

विभाग द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के लिए निरन्तर योजनाएं चलाई जा रही है। कमजोर आर्थिक पृष्ठ भूमि एवं ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले विद्यार्थियों हेतु नवम्बर 2022 तक कुल 1668 महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय प्रारम्भ किए गए हैं जिनमें अध्ययनोंपरान्त विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन कर पाएंगे ऐसा मेरा विश्वास है। इन विद्यालयों में पर्याप्त शिक्षकों की व्यवस्था करने हेतु सहायक अध्यापक लेवल-प्रथम व द्वितीय के पदों पर संविदा आधार पर भर्ती के लिए कुल 9712 पदों हेतु ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गये है। माननीय मुख्यमंत्री जी की बजट घोषणा वर्ष 2022-23 के तहत 5 से 14 जनवरी तक संभागवार मेधावी एवं विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों ने ए.पी.जे. अब्दुल कलाम व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम के तहत अन्तर्राज्य भ्रमण किया। जिसमें सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत के साथ प्रकृति के करीब लाने के लिए महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश से होते हुए रामेश्वरम् तक का सफर सम्मिलित किया गया, जो विद्यार्थियों के लिए काफी रोचक एवं शिक्षाप्रद रहा।

परीक्षाओं में विद्यार्थियों को सफलता की शुभकामनाएं।

(डॉ. बुलाकी दास कल्ला)

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

जाहिदा खान
राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार
शिक्षा (प्राथमिक और माध्यमिक),
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (स्वतंत्र प्रभार)
मुद्रण एवं लेखन सामग्री (स्वतंत्र प्रभार)
कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

"विद्यार्थियों से मेरा आग्रह है कि बचे हुए समय में योजनाबद्ध तरीके से पाठ्यक्रम का दोहरान करें। इस समयावधि में आपको अपने स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखना होगा। मनोरंजन और पारिवारिक मेल-जोल द्वारा मस्तिष्क एवं शरीर को तरोताजा रखा जा सकता है। यदि किसी प्रकार का तनाव महसूस हो तो शिक्षकों एवं स्वजनों से चर्चा कर तनाव को कम करने और मन को हल्का करने संबंधी क्रियाकलापों को अपनी दिनचर्या में शामिल करें। अभिभावकों को मेरी यही सलाह है कि बच्चें के आराम एवं नींद का पूरा ख्याल रखें।"

तकनीक भी तरक्की का राजपथ

स्वामी दयानंद सरस्वती ने समाज के प्रत्येक वर्ग को करीब से देखा। वे समाज के सभी वर्गों के विकास के समर्थक रहे हैं। उन्होंने शिक्षा के ऐसे रूप की कल्पना की जिससे बालक का सम्पूर्ण मानसिक एवं आत्मिक विकास हो सके। वह भावनात्मक दृष्टि से मजबूत हो और अपने विवेक से निर्णय लेने में सक्षम हो। उनका मानना था कि जो व्यक्ति स्वयं को उत्साहित और प्रेरित करता है वो ही स्वयं का अच्छा मित्र होता है और जीवन की राह में समय रहते कामयाबी को हासिल कर सकता है। निरंतर प्रयास से ही कार्यों को आसान किया जा सकता है, जो व्यक्ति में निहित इच्छा शक्ति पर निर्भर करता है। कार्य के प्रति दृढ़ इच्छाशक्ति ही हमें सफलता के द्वार तक ला सकती है। आपका जीवन एक कर्मभूमि है, जीने के लिए कर्म तो करने ही होंगे। सकारात्मक सोच जीवन में एक अलग ही महत्त्व रखती है। इसलिए कहा भी गया है कि सकारात्मक सोच के साथ सद्कर्म करके आप जीवन को सार्थक बना सकते है। जीवन में सफल होने के लिए प्रतिभा ही पर्याप्त नहीं अपितु निरंतर अभ्यास करना भी जरूरी है।

जीवन में श्रेष्ठता एवं विशिष्टता लाने के लिए सभी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को अपना रहे हैं। तकनीक ने लगभग हर भौतिक क्षेत्र को छू लिया है। प्रत्येक व्यक्ति डिजिटलाइजेशन की राह पर अग्रसर है। तकनीकी युग में विद्यार्थियों को स्मार्ट वर्क के साथ-साथ नवाचारों की प्रवृत्ति को भी विकसित करना होगा तभी वह अपने निर्धारित लक्ष्य प्राप्त कर पाएगा। आज के दौर में तकनीक भी तरक्की का राजपथ है। संस्थाप्रधानों से मेरा विशेष आग्रह है कि हमारे युवाओं को सृजनात्मक एवं रचनात्मक विकास के लिए प्रेरित करें। नवाचारों के माध्यम से विद्यार्थियों की कार्यक्षमता एवं गुणवत्ता का मार्ग प्रशस्त होगा।

पिछले दिनों मुझे Haemin Sunim की पुस्तक **''दी थिंगिस यू केन सी ऑनली वैन यू स्लो डॉउन''** पढ़ने का मौका मिला। अक्सर हमें लगता है कि हमें भी दुनिया से कदम ताल करनी होगी। तेज गति का जमाना आ गया है हमने तेज गति से दौड़ने को ही जीवन समझ लिया है। तेज चलकर हम सबसे आगे तो निकल सकते है लेकिन यदि हम स्वयं को परिसज्जित करना चाहें तो हमें सचेत रहकर धीमी गति से चलकर ही आगे बढ़ना होगा। विद्यार्थियों के लिए व्यस्तता का दौर आरम्भ हो गया है। वर्ष भर की गई मेहनत को व्यक्त करने का समय आ गया हैं। सीमित समय में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का दोहरान करना है। इस दौरान कई बार अतिभार होने से असामान्य स्थिति महसूस होती है जिसका प्रभाव मन मस्तिष्क पर पड़ने लगता है, साथ ही सोचने एवं ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता प्रभावित होती है।

विद्यार्थियों से मेरा आग्रह है कि बचे हुए समय में योजनाबद्ध तरीके से पाठ्यक्रम का दोहरान करें। इस समयावधि में आपको अपने स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखना होगा। मनोरंजन और पारिवारिक मेल-जोल द्वारा मस्तिष्क एवं शरीर को तरोताजा रखा जा सकता है। यदि किसी प्रकार का तनाव महसूस हो तो शिक्षकों एवं स्वजनों से चर्चा कर तनाव को कम करने और मन को हल्का करने संबंधी क्रियाकलापों को अपनी दिनचर्या में शामिल करें। अभिभावकों को मेरी यही सलाह है कि बच्चें के आराम एवं नींद का पूरा ख्याल रखें। उन्हें उनकी आवश्यकतानुसार संसाधन उपलब्ध करवा मनःस्थिति को जानते हुए परीक्षा की तैयारी में आने वाली दिक्कतों को दूर करने में सहयोग प्रदान करें।

शिक्षकवृंद को मेरा स्पष्ट संदेश है कि अपनी व्यक्तिगत एवं पारिवारिक व्यस्तताओं के बीच वर्तमान समय की मांग को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को स्वस्थ माहौल में प्राथमिकता के साथ अध्ययन की कठिनाइयों को दूर करते हुए दोहरान करवाएं एवं परीक्षा में बेहतर अभिव्यक्ति के लिए तैयार करें।

Zahida
(जाहिदा खान)

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

गौरव अग्रवाल
आइ.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

"सत्र पर्यन्त शिक्षक और शिक्षार्थी अध्ययन अध्यापन की कठोर साधना करते हैं। सत्रान्त में इस साधना के फल रूपी श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम की आशा रखना नितान्त स्वाभाविक है। परीक्षा मूल्यांकन का माध्यम है, यह मूल्यांकन केवल विद्यार्थी का नहीं हम सभी का है। परीक्षा कार्यक्रम घोषित हो चुका है, बोर्ड परीक्षाएँ मार्च में हैं अत: कर्मण्यवाधिकारस्ते के मूल मंत्र को ध्यान में रखते हुए हमारा दायित्व है कि विद्यार्थी तनाव मुक्त होकर बिना किसी भय के आनन्ददायी वातावरण में सहजता के साथ प्राप्त ज्ञान को सर्वश्रेष्ठ रूप में प्रदर्शित करते हुए उच्चतम अंक प्राप्त करें।"

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

कर्मण्येवाधिकारस्ते.....

जनवरी 2023 में अद्भुत संयोग ही था कि 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस के साथ वसन्त पंचमी का उत्सव था। वसन्त पंचमी अर्थात ज्ञानदायिनी का प्राकट्य दिवस! इस प्राकट्य दिवस पर सम्पूर्ण राष्ट्र ने हृदय की अतल गहराइयों से ज्ञान की देवी माँ शारदे की आराधना की, ज्ञान की प्राप्ति हेतु शिक्षा के माध्यम से.........

शिक्षा शक्ति दात्री है और मानव की अंतर्निहित शक्तियों के प्रस्फुटन का माध्यम भी। मनुष्य की जीवन दृष्टि का विकास और व्यवहारगत परिवर्तन का आधार उसका ज्ञान और शिक्षा है। शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र सेवा का अवसर हमारा सौभाग्य है। माननीय मुख्यमंत्री द्वारा आरंभ किए गए RKSMBK के आकलन-2 के परिणाम शाला संवाद, शाला दर्पण व विभागीय वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। समस्त शैक्षिक जगत के लिए यह सुखद है कि एप के उपयोग से यह दक्षता परिणाम विद्यार्थी, विषय और दक्षतावार विश्लेषण के साथ एक क्लिक के साथ हमारे सामने आ जाता है, जिसके द्वारा आप सभी ने गत 21 जनवरी को अध्यापक अभिभावक की संयुक्त बैठक में छात्रों की प्रगति की सकारात्मक चर्चा करते हुए आगामी कार्य-योजना बनाकर वर्तमान शैक्षिक सत्र हेतु शैक्षणिक लक्ष्यों का निर्धारण किया होगा ऐसा मेरा विश्वास है।

सत्र पर्यन्त शिक्षक और शिक्षार्थी अध्ययन अध्यापन की कठोर साधना करते हैं। सत्रान्त में इस साधना के फल रूपी श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम की आशा रखना नितान्त स्वाभाविक है। परीक्षा मूल्यांकन का माध्यम है, यह मूल्यांकन केवल विद्यार्थी का नहीं हम सभी का है। परीक्षा कार्यक्रम घोषित हो चुका है, बोर्ड परीक्षाएँ मार्च में हैं अत: कर्मण्यवाधिकारस्ते के मूल मंत्र को ध्यान में रखते हुए हमारा दायित्व है कि विद्यार्थी तनाव मुक्त होकर बिना किसी भय के आनन्ददायी वातावरण में सहजता के साथ प्राप्त ज्ञान को सर्वश्रेष्ठ रूप में प्रदर्शित करते हुए उच्चतम अंक प्राप्त करें। इस हेतु शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे विशेष कक्षाओं का आयोजन करते हुए उनकी समस्याओं को हल करने के साथ-साथ विद्यार्थियों के आत्मविश्वास व मनोबल को बढ़ाने में सहयोग करें।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वैदिक धर्म के माध्यम से यह सिद्ध किया कि व्यक्ति कर्म से ही भाग्य का निर्माण करता है। आवश्यकता है आज के युग में हम भी भाग्यवादी न बनते हुए कर्म को प्रोत्साहन दें। महाशिवरात्रि की आप सभी को बधाई! आशा है कि आप शिव के 'शिवत्व' को जीवन का आधार बनाते हुए कार्य करेंगे। 28 फरवरी को विज्ञान दिवस मनाया जाता है। ये मात्र एक दिवसीय उत्सव नहीं अपितु हमारे जीवन में निरन्तर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने को दृढ़ संकल्पित होने का अवसर है। हमें रुढ़ियों से मुक्त होकर दैनन्दिनी कार्यों को अधिकतम वैज्ञानिक सोच के साथ सम्पादित करना चाहिए।

रात कितनी भी लंबी और स्याह क्यों ना हो उजाला पाने की चाह न केवल नयी राह बनाती है अपितु स्याह रात की भयावहता से भी मुक्त करती है। मुझे आशा है दृढ़ संकल्प और कठिन परिश्रम के बल पर RKSMBK कार्यक्रम द्वारा शिक्षा विभाग राजस्थान राज्य में ही नहीं वरन् राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा का सिरमौर बनेगा। हम सभी अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूर्ण मनोयोग से करते रहें। आप सभी के उज्जवल भविष्य की मंगलकामना के साथ......

आपका अपना

(गौरव अग्रवाल)

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

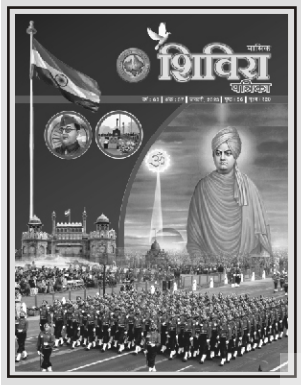

▼ चिन्तन

उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये।
पयःपानं भुजंगानां केवलं विषवर्द्धनम्।।

–मूर्खों को दिया हुआ उपदेश उनके क्रोध को बढ़ाता ही है शांत नहीं करता। जिस प्रकार साँपों को पिलाया हुआ दूध हमेशा उनका विष ही बढ़ाता है। इसलिए उपदेश सदा योग्य और पात्र व्यक्तियों को ही देने चाहिए। अपात्र और अयोग्य व्यक्ति कमियाँ ढूँढ़ने का की प्रयास करेंगे, अच्छाइयों को जीवन में अपनाना उनके संस्कारों में निहित नहीं होती है।

पाठकों की बात

- हमारे जननायकों को याद करता हुआ निदेशक महोदय का उद्‌बोधन RKSMBK कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए इसकी उपयोगिता एवं निहितार्थ स्पष्ट करते हुए छात्रों–अभिभावकों तक समुचित पहुँच का आह्वान है। 'कॅरियर–डे' की उपयोगिता बतलाता डॉ. कृष्ण आचार्य का लेख छात्रों एवं अभिभावकों हेतु उपयोगी है एवं कॅरियर प्लानिंग हेतु लाभप्रद है। स्वामी विवेकानंद पर प्रकाशित राजीव अरोड़ा का लेख पढ़कर स्वामी जी के संबंध में नवीन जानकारियाँ प्राप्त हुई। कुलदीप व्यास के लेख 'राजकीय विद्यालयों में अभिनव प्रयोग' श्री गाँधी बाल निकेतन की इंटरेक्टिव बोर्ड परियोजना' विशेष जानकारी वाला रहा। शंकर लाल माहेश्वरी का अभिवादन का मनोविज्ञान भारतीय परम्परा में अभिवादन की उपयोगिता पर प्रकाश डालता है। ओमप्रकाश सारस्वत एवं सुधा रानी तैलंग ने भी उपयोगी जानकारी उपलब्ध करवाई है। हमेशा की तरह ही आदेश–परिपत्र, शिविरा रिपोर्टर, नवाचार, शिक्षक की कलम से, बाल शिविरा, पुस्तक समीक्षा, शाला प्रांगण आदि स्थाई स्तंभ भी उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक रहे हैं। समस्त संपादक मण्डल बधाई के पात्र है।

योगेश चन्द तीतरी, राजसमंद

- शिविरा पत्रिका जनवरी 2023 का अंक समय पर उपलब्ध हुआ। इस अंक का कवर पृष्ठ अति सुंदर लगा। इस कवर पर गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य पर सुभाष चन्द्र बोस, स्वामी विवेकानंद का चित्र, झण्डा, सैनिकों की परेड बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक रही। अपनों से अपनी बात में मंत्री महोदय ने एक शिक्षक के रूप में हमारा जो भी कर्त्तव्य है उसका निर्वहन ईमानदारी से करें का आह्वान किया है। राज्यमंत्री महोदया ने कहा विज्ञान एवं तकनीकी स्वास्थ्य, शिक्षा आदि क्षेत्रों में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध भी की है। दिशा कल्प में मेरा पृष्ठ में निदेशक महोदय जी ने कहा RKSMBK एक ब्रिज प्रोग्राम है सभी अध्यापक इस एप को अपडेट करें। ओमप्रकाश सारस्वत का लेख हारिये न हिम्मत बिसारिये ना राम, गोविन्द नारायण शर्मा जी का लेख परीक्षा परिणाम उन्नयन बहुत ही बढ़िया लेख लगा। एक अनुरोध रहेगा कि आदेश परिपत्र अधिक से अधिक शिविरा में शामिल करे। नए वर्ष की सभी को शुभकामनाएँ।

श्रीमती किरण व्यास, बीकानेर

- शिविरा पत्रिका जनवरी 2023 के अंक आवरण पृष्ठ हमें युग पुरुष स्वामी विवेकानंद व गणतंत्र दिवस की झलक दिखा रहा है। माननीय शिक्षामंत्री जी ने 'अपनों से अपनी बात' में कहा है कि नववर्ष 2023 में मेहनत और उत्साह से आगे बढ़कर कर्मशील बने रहकर अपने जीवन में निखार ला सकते हैं। इसी क्रम में शिक्षा राज्यमंत्री जी ने मेरा संदेश में बताया है कि लोकतांत्रिक देश का नागरिक होने के नाते हमारी जिम्मेदारी है कि संविधान में दिए कर्त्तव्यों का निर्वहन करते हुए अपने अधिकारों की रक्षा करें। माध्यमिक शिक्षा निदेशक गौरव अग्रवाल जी ने दिशाकल्प मेरा पृष्ठ में नूतन वर्ष में नूतन संकल्प लेने व महापुरुषों के जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। 12 जनवरी राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष्य में स्वामी विवेकानंद जी जैसे महान और विराट व्यक्तित्व का स्मरण तभी सार्थक होगा जब हम उनके प्रेरणादायी जीवन से शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे। बाल शिविरा में आकर्षक चित्र के साथ कविताएँ बहुत ही मोहक लग रही है। राज्यस्तरीय कला उत्सव समारोह 2022 की झलकियाँ, चित्र वीथिका जनवरी 2023 के चित्र सुंदर आवरण के साथ बहुत ही आकर्षक लग रही है। शिविरा पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति करती रहे। ऐसी शुभकामना।

श्रीमती हेमलता चौधरी, बीकानेर

- शान से लहराते तिरंगे, देश की शौर्य गाथा लिखते जवानों के कदमताल एवं देश की सांस्कृतिक विरासत को दुनिया के कोने–कोने तक ख्याति दिलाने वाले युगपुरुष स्वामी विवेकानन्द के ओजस्वी चित्रों से सजे आवरण के साथ जनवरी का अंक पाते ही नववर्ष की नई उमंग का संचार महसूस हुआ। मंत्री महोदय तथा निदेशक महोदय का नववर्ष संकल्प प्रेरणास्पद रहा। राष्ट्रीय युवा दिवस पर राजीव अरोड़ा का आलेख 'स्वामी विवेकानन्द' जानकारी से परिपूर्ण और उपयोगी रहा। मानवीय मूल्यों की उपयोगिता एवं महत्त्व पर प्रकाश डालता सुधा रानी तैलंग का आलेख सामाजिक जीवन एवं शिक्षा पद्धति में मूल्यपरकता पर ध्यानाकर्षित करता है। अध्यापिका इन्द्रा का दृष्टान्त 'जाजम कहाँ गई?' वर्तमान की स्थिति पर एक कटाक्ष प्रतीत होती है जिसे पुनः सार्वजनिक विचार–विमर्श का जरिया बनाये जाने की आवश्यकता है। बाल शिविरा में रितिका, सुनीता, शबनम और गुड़िया की रचनाएँ मनमोहक लगी। अन्य स्थाई कॉलम हमेशा की तरह जानकारी से ओतप्रोत रहे। समस्त संपादक मंडल का धन्यवाद।

विकास चन्द्र भारु, झुंझुनूं

Rajasthan Education Department

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 63 | अंक : 08 | माघ-फाल्गुन २०७९ | फरवरी, 2023

प्रधान सम्पादक
गौरव अग्रवाल

वरिष्ठ सम्पादक
सुनीता चावला

सम्पादक
डॉ. संगीता पुरोहित

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
सुचित्रा चौधरी
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक सदस्यता राशि व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चेक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

शिक्षा पर संवाद
- माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत से संवाद के कुछ अंश 9
  सुनीता चावला

अपनों से अपनी बात
- उमंग एवं उत्साह के साथ परीक्षा की तैयारी 3

मेरा संदेश
- तकनीक भी तरक्की का राजपथ 4

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- कर्मण्येवाधिकारस्ते...... 5
- साक्षात्कार - अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्कूल शिक्षा एवं भाषा विभाग 13
  डॉ. रणवीर सिंह
- परीक्षा पर चर्चा : माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 17
  डॉ. संगीता पुरोहित

आलेख
- युग सेतु दयानंद सरस्वती 19
  कमल कुमार जाँगिड़
- देखीया, परखीया और सीखीया को साकार कर रहे मास्टर मदन 20
  ओमप्रकाश सुथार
- भारत कोकिला सरोजिनी नायडू 21
  देवेन्द्रराज सुथार
- राजकीय विद्यालयों को ब्रेल साहित्य भेंट 22
  शिवशंकर चौधरी
- विज्ञान दिवस 25
  अनामिका चौधरी
- सफलता की कहानी : शिक्षक की जुबानी 33
  सुनीता
- कैसे करें जल परख, बचायें जल 34
  डॉ. पी. सी. जैन
- CHALLENGES AND ACHIEVEMENTS 35
  Renuka Sharma

मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर!
- राजकीय प्राथमिक विद्यालय केसर सिंह जी का गुड़ा 36
  हीर सिंह राजपूत
- बच्चों में सृजनशीलता का विकास 41
  रामजीलाल घोड़ेला
- आदर्श विद्यार्थी के लक्षण 42
  हर्षित व्यास

रपट
- माननीय शिक्षामंत्री द्वारा डिजीटल स्टूडियो व शिशु गृह का शुभारंभ 8
  डॉ. संगीता पुरोहित
- 18वीं राष्ट्रीय जम्बूरी 23
  राजेन्द्र कुमार शर्मा
- 49वीं राज्य स्तरीय मंत्रालयिक खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता-22 सुसम्पन्न 38
  कमलेश सिंघल
- स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल सूरतगढ़ 39
  दलराज सिंह ढिल्लो
- वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह 40
  विकास चन्द्र 'भारु'
- **स्तम्भ**
- पाठकों की बात 6
- आदेश-परिपत्र : फरवरी, 2023 27-31
- शिविरा पञ्चाङ्ग : फरवरी, 2023 32
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 31
- Telecast Schedule of pm e-vidya 32
- बाल शिविरा 45-46
- शाला प्रांगण से 47-48
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 49-50
  शारदा
- हमारे भामाशाह 50
- ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृत प्रोजेक्ट 51

पुस्तक समीक्षा 43
- हेली रा हेला
  कवि : राजेन्द्र जोशी
  समीक्षक : **डॉ. मदनगोपाल लढ़ा**
- सुनो विद्यार्थी 44
  लेखक : गिरिराज व्यास
  समीक्षक : **मंजू ओझा**

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

विभागीय वेबसाइट : **www.education.rajasthan.gov.in/secondary**

माननीय शिक्षामंत्री द्वारा डिजीटल स्टूडियो व शिशु गृह का शुभारंभ

रपट

❐ डॉ. संगीता पुरोहित

अतीत की भव्य सुदृढ़ प्राचीरों के झरोखों से झाँकता शिक्षा जगत का प्रतिपल आगे बढ़ता राज्य शिक्षा निदेशालय बीकानेर! स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात 22 देशी रियासतों का विलीनीकरण राजस्थान में हुआ। देशी रियासतों की शिक्षा व्यवस्थाओं का स्वरूप भिन्न-भिन्न था। प्रगति की दौड़ में कदम से कदम मिलाते हुए आगे बढ़ने की चाह रखने वाले राजस्थान में स्वतंत्रता के ऊषाकाल के साथ ही राष्ट्रीय विकास हेतु एक सुदृढ़ शैक्षिक ढाँचे की आवश्यकता महसूस की गई। प्रजातांत्रिक मूल्यों के अन्तर्गत शिक्षा के प्रचार-प्रसार को मूर्त रूप देने के लिए 16 दिसम्बर 1950 को राजस्थान सरकार द्वारा प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय की स्थापना बीकानेर में की गई। शिक्षा के विस्तार के साथ-साथ विद्यालयों, अध्यापकों, शिक्षा अधिकारियों एवं मंत्रालयिक कर्मचारियों की संख्या में गुणोत्तर रूप से वृद्धि हुई एवं शिक्षण संस्थाओं के संख्यात्मक विकास के साथ-साथ गुणात्मक विकास भी संभव हुआ है।

27 जनवरी 2023 का दिन शिक्षा निदेशालय के लिए खास था। इस अवसर पर माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला शिक्षा विभाग (प्राथमिक एवं माध्यमिक) संस्कृत शिक्षा, कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व पंचायतीराज के अधीनस्थ प्राथमिक शिक्षा विभाग (स्वतंत्र प्रभार) राजस्थान सरकार ने शिक्षा निदेशालय का अवलोकन किया। माननीय के अभिनंदन में परम्परागत तरीके से राजकीय सादुल उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों द्वारा भव्य रंगोली बनाई गई। निदेशक श्री गौरव अग्रवाल, अतिरिक्त निदेशक श्रीमती रचना भाटिया एवं समस्त निदेशालय के अधिकारी/कर्मचारी वर्ग ने माननीय शिक्षा मंत्री का स्वागत किया।

शिक्षा मंत्री महोदय ने निदेशालय परिसर में स्थित हेरिटेज भवन में बैठक हॉल का शुभारंभ किया। इसके साथ ही निदेशालय में कार्यरत महिला कार्मिकों के छोटे बच्चों के लिए भी शिशु गृह का शुभारंभ किया। इस शिशु गृह में महिला

कार्मिक अपने छोटे बच्चों को छोड़कर निश्चिन्त होकर कार्यालयी कार्य कर सकेंगी व समय-समय पर बच्चों को भी संभाल सकेंगी।

माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने पंजीयक, शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ, बीकानेर में डिजीटल स्टूडियो का शुभारंभ करते हुए संपूर्ण शिक्षा विभाग को लाइव संदेश दिया। माननीय शिक्षा मंत्री ने कहा ''माध्यमिक शिक्षा निदेशालय के माध्यम से आज डिजीटल स्टूडियो का शुभारंभ हुआ है इसके लिए मैं शिक्षा जगत से जुड़े हुए लोगों को हार्दिक बधाई देता हूँ। खासतौर से आज का जमाना विज्ञान का जमाना है। मन चाहे तो आकाश में उड़ो, मन चाहे तो समुद्र के साथ खेलो और मन चाहे तो अमेरिका, लन्दन, जापान, जर्मनी कहीं भी बैठे व्यक्ति से बातचीत करो। यहाँ जो भी चीज हो रही है उसे संसार में कहीं भी दिखाया जा सकता है। इस टेक्नोलॉजी के माध्यम से हमारे स्टूडियो में बैठकर मैं आपसे मुखातिब हो रहा हूँ। हमारे तमाम स्कूलों में आई.सी.टी. लैब बना दी गई है जहाँ नहीं बनी है वहाँ बनाने जा रहे है।'' जिसके कारण यहाँ कोई भी विषय विशेषज्ञ चाहे वह फिजिक्स का हो, कैमेस्ट्री का हो, गणित का हो अथवा इतिहास, भूगोल का हो वो अध्यापक विषय विशेषज्ञ जो यहाँ पर लेक्चर देगा उसका प्रसारण यू-ट्यूब के माध्यम से समस्त विद्यालयों में हो सकेगा। आई.सी.टी. लैब बहुत उन्नत प्रणाली है। इसका स्टूडियो से सीधा जुड़ाव होने के कारण विषय विशेषज्ञ जो जानकारी देंगे विद्यार्थी अपने क्लास रूम में सीख सकेंगे। पिछले दिनों हमारे यहाँ कोविड के कारण कुछ विद्यार्थी स्कूल में पढ़ने नहीं जा सके। डिजीटल शिक्षण के माध्यम से भी नहीं पढ़ सके। उनके लिए हमारे माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के कहने से ब्रिज कोर्स बनाया गया था। उसका लाभ भी इस तकनीक के माध्यम से विद्यार्थियों को मिल सकेगा''

इस अवसर पर निदेशक श्री गौरव अग्रवाल ने कहा माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला साहब द्वारा डिजीटल स्टूडियो का शुभारंभ किया गया है यह शिक्षा जगत में टेक्नोलॉजी के अपडेशन में मील का पत्थर साबित होगा। स्टूडियो के माध्यम से शुरूआती दौर में हमारे अध्यापक आई.सी.टी. लैब से डिजीटल कान्टेन्ट बना सकेंगे। उनकी हम ट्रेनिंग करवाएंगे और हमारे जितने भी विद्यालयों में स्मार्ट टी.वी. व आई.सी.टी. लैब लग गये है या लगने वाले है वहाँ पर लेक्चर का सीधा प्रसारण करेंगें उससे यह होगा कि किसी विषय के अध्यापक नहीं है या अध्यापक छुट्टी पर है तो विद्यार्थियों का लर्निंग लॉस नहीं होगा और बालक सीख पाएँगे। इन सारे वीडियो को यू-ट्यूब चैनल पर भी होस्ट किया जाएगा। जिससे बच्चे घर बैठकर भी पढ़ाई कर पाएँगे। जिस तरीके से दुनिया टेक्नोलॉजी में आगे बढ़ रही है मुझे विश्वास है कि शिक्षा विभाग इसे सही तरीके से अडॉप्ट करेगा व आने वाले वर्षों में शिक्षा का पूरा स्वरूप बदलेगा।

अतिरिक्त निदेशक श्रीमती रचना भाटिया ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सभी का आभार व्यक्त कर कार्यक्रम का समापन किया।

संपादक शिविरा
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो: 9950956577

Rajasthan Education Department

माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत से संवाद के कुछ अंश

❒ सुनीता चावला

शिविरा : 1 वर्तमान में राजस्थान को शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में किस प्रकार देखते हैं?

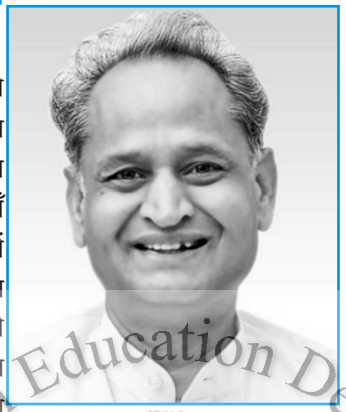

माननीय मुख्यमंत्री महोदय : शिक्षा सदैव से ही राज्य सरकार की प्राथमिकताओं में शुमार रही है। देश भर में शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान राज्य अग्रणी है। विगत कुछ समय की राज्य के शैक्षिक क्षेत्रों में उपलब्धियाँ इसकी साक्षी रही हैं। एन.ए.एस 2021 के परिणाम में हमारा प्रदेश एवरेज से ऊपर रहा है। इसमें कक्षा 3 का राष्ट्रीय औसत जहाँ 59 प्रतिशत है, वहीं हमारे राज्य की उपलब्धि 66.1 प्रतिशत, कक्षा 5 का राष्ट्रीय औसत 49 प्रतिशत, जबकि हमारे प्रदेश का 57.61 प्रतिशत रहा है। कक्षा 8 का राष्ट्रीय औसत 41.9 प्रतिशत और हमारे प्रदेश का 50.51 प्रतिशत है। इसी प्रकार कक्षा 10 का राष्ट्रीय औसत 37.8 प्रतिशत और हमारे प्रदेश का 45.1 प्रतिशत रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर इंस्पायर अवार्ड मानक योजना में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार द्वारा आयोजित राष्ट्र स्तरीय प्रदर्शनी एवं प्रोजेक्ट प्रतियोगिता में हमारे 07 विद्यार्थियों के प्रोजेक्ट चयनित हुए हैं। राजकीय विद्यालयों के प्रति आमजन के विश्वास में हुई वृद्धि के परिणाम स्वरूप हमारे राजकीय विद्यालयों में पिछले कुछ वर्षों से सतत् रूप से नामांकन में वृद्धि हो रही है। वर्ष 2018-19 में जहाँ हमारे विद्यालयों में लगभग 81 लाख नामांकन दर्ज हुआ था, वहीं आज यह नामांकन बढ़कर 92 लाख के करीब आ पहुँचा है।

शिविरा : 2 नामांकन वृद्धि विभाग के समक्ष नयी चुनौतियाँ भी लेकर आयी है। इस संबंध में सरकार ने क्या कदम उठाए हैं?

माननीय मुख्यमंत्री महोदय : नामांकन वृद्धि के कारण शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए हमने मानवीय और भौतिक संसाधन दोनों स्तरों पर बेहतर काम किया है। विभिन्न शैक्षिक, गैर शैक्षिक एवं प्रशासनिक पदों पर हमारी सरकार अब तक 76,000 से अधिक नयी भर्तियाँ कर चुकी है। इसी क्रम में प्राध्यापक-स्कूल शिक्षा के विभिन्न विषयों के 6,000 पदों पर माह अक्टूबर 2022 में परीक्षा आयोजित की जा चुकी है। इसी प्रकार पदोन्नति से विभिन्न संवर्गों के तकरीबन 29,000 पद भरे गए हैं। लगभग 900 नए विद्यालय खोले गए हैं और 8,000 विद्यालय क्रमोन्नत किए गए हैं। विभिन्न स्तरों पर लगभग सभी पीईईओ/यूसीईईओ विद्यालयों में उप प्राचार्य का नया पद दिया गया है। जिन उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थी नामांकन 275 या उससे अधिक है, वहाँ भी उप प्राचार्य का पद दिया गया है। महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के लिए 10,000 संविदा आधारित शिक्षकों का नवीन कैडर बनाया गया है।

मैं बताना चाहूँगा कि इसी सत्र में हमारी सरकार ने 140 विद्यालयों में विज्ञान संकाय एवं 22 विद्यालयों में अन्य अतिरिक्त संकाय खोले हैं। सरकार की शिक्षा के प्रति संवेदनशीलता को देखते हुए ही अनेक भामाशाह आगे बढ़कर विद्यालयों में सुधार एवं नवाचारों में अपेक्षित सहयोग दे रहे हैं। अब तक लगभग 750 करोड़ रुपए की राशि का कार्य/सामग्री भामाशाहों द्वारा करवाया गया है।

मुझे यह बताते हुए भी हर्ष हो रहा है कि अनेक शिक्षकों ने अपना नैतिक दायित्व मानते हुए मुख्यमंत्री विद्यादान कोष और ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से विद्यालयों में आर्थिक सहयोग दिया है। इन उपायों से हमारी स्कूलों में मानवीय और भौतिक संसाधनों की कमी काफी हद तक दूर हुई है। मैं सभी भामाशाहों को इसके लिए साधुवाद देता हूँ। हम इन भामाशाहों को राज्य और जिला स्तर पर सम्मानित भी करते हैं ताकि अन्य उदारमना लोग और संस्थाएं इस दिशा में आगे आएँ।

शिविरा : 3 राजीव गाँधी ग्रामीण ओलम्पिक खेलों का लाभ भविष्य में विद्यार्थियों को किस रूप में मिलेगा?

माननीय मुख्यमंत्री महोदय : राजीव गाँधी ग्रामीण ओलम्पिक खेलों का आयोजन अपने आप में एक अनूठी पहल है। इससे प्रदेश की ग्रामीण प्रतिभाओं को आगे आने का मंच मिला है। इस योजना में छः खेलों (कबड्डी, खो-खो, वॉलीबॉल, शूटिंगबाल, हॉकी, क्रिकेट) का चयन किया गया है। हमारा प्रयास है कि राज्य की प्रतिभाएँ ना केवल राष्ट्रीय बल्कि ओलम्पिक, एशियाड, कॉमनवेल्थ जैसी अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी देश के लिए मेडल लेकर आएँ। प्रदेश की प्रतिभाओं को तराशने और उनको अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धाओं हेतु तैयार करने में राज्य सरकार की यह पहल आने वाले समय में बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी। ऐसा मेरा मानना है।

इन खेलों में हार जीत का प्रश्न नहीं है। इस प्रकार के आयोजनों से खेलों के माध्यम से प्रदेश की जनता विशेषकर विद्यार्थियों

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

और युवाओं में खेल भावना जागृत होगी। गाँव–गाँव में, उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम तक सब जगह खेलमय वातावरण बना है। आज के डिजिटल युग में समाज में खेलों के महत्त्व को बरकरार रखा जा सकता है। मेरा मानना है कि खेलों के माध्यम से अच्छा स्वास्थ्य एवं अच्छी समझ विकसित की जा सकती है। जरूरी नहीं कि प्रत्येक खिलाड़ी राष्ट्र या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना पाए, लेकिन यह जरूर है कि इनमें सहभागिता से वह अनुशासित जीवन शैली, एकाग्रता, भरपूर आत्मविश्वास एवं अच्छी नेतृत्व क्षमता हासिल कर पाने में सक्षम होगा।

शिविरा: 4 महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की सर्वत्र सराहना हो रही है। सरकार की इस फ्लैगशिप योजना की शुरूआत के बाद विगत 3 वर्षों में इस योजना की क्या उपलब्धियाँ रही हैं?

माननीय मुख्यमंत्री महोदय : महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) राज्य सरकार की एक फ्लैगशिप योजना है और ये विद्यालय पुराने स्थापित विद्यालयों को अंग्रेजी माध्यम में रूपांतरित कर शुरू किए गए हैं। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि जिन बच्चों के लिए कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि की वजह से अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा प्राप्त करना एक स्वप्न था वे बच्चे अपने स्वप्न को हकीकत में बदलता हुआ देख पा रहे हैं। ग्रामीण व पिछड़े बालक इन विद्यालयों से जुड़कर न केवल अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं; बल्कि अंग्रेजी बोलने में भी सक्षम हो रहे हैं। इन विद्यालयों की लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जयपुर शहर के एक राजकीय महात्मा गाँधी विद्यालय में प्रवेश हेतु उपलब्ध सीटों के प्रति तकरीबन सौ गुणा आवेदन प्राप्त हुए हैं। इन स्कूलों का एक सीधा फायदा यह है कि स्कूली शिक्षा के बाद भी यह बच्चे जब कॉलेज या प्रतियोगी परीक्षाओं का सामना करेंगे तो अंग्रेजी भाषा की अच्छी जानकारी इनको बेहतर उपलब्धि दिलाने में मददगार होगी।

शिविरा : 5 देश के लिए सुबोध नागरिक तैयार करने की उद्देश्य पूर्ति के लिए शिक्षा विभाग अपना दायित्व किस प्रकार निभा रहा है?

माननीय मुख्यमंत्री महोदय : वस्तुत: शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास का सबसे सशक्त माध्यम है, जिसके लिए शिक्षा विभाग द्वारा हर सम्भव प्रयास किए जा रहे हैं। हमने वर्ष 2022–23 में बजट घोषणा 231.0.0 के तहत राजकीय विद्यालयों में एपीजे अब्दुल कलाम व्यक्तित्व विकास योजना की शुरूआत की है। इसके तहत विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक, वाद–विवाद, देशभक्ति गीत गायन, निबंध प्रतियोगिताओं के माध्यम से विभिन्न स्तरों पर अत्युत्तम प्रस्तुति देने वाले चुनिंदा मेधावी विद्यार्थियों को अन्य राज्यों में 10 दिवसीय भ्रमण करवाया गया। इस अन्तर्राज्यीय भ्रमण के माध्यम से विद्यार्थी अन्य राज्यों की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक एवं वैज्ञानिक विरासत से रूबरू होंगे। उन्हें वहाँ की स्थापत्य कला, प्राकृतिक धरोहरों की जानकारी मिलेगी। विद्यार्थियों को अन्य राज्यों के सामुदायिक जीवन से जुड़ने का अवसर मिलेगा। इस प्रकार ये विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों के लिये प्रेरणा बनेंगे।

राज्य सरकार ने बच्चों को राहत प्रदान करते हुए प्रदेश के सभी राजकीय विद्यालयों में प्रत्येक शनिवार को नो बैग डे का आयोजन किया जा रहा है। शनिवार को राजस्थान को पहचानो, भाषा कौशल विकास, खेलेगा राजस्थान बढ़ेगा राजस्थान, मैं वैज्ञानिक बनूँगा एवं बाल सभा मेरे सपनों के साथ, पाँच थीम रखी गई है। इनके माध्यम से विद्यार्थियों को जहाँ राजस्थान के इतिहास एवं संस्कृति की जानकारी मिलेगी वहीं जिस भाषा को विद्यार्थी बोल रहे हैं, सुन रहे हैं, उसकी जानकारी, उच्चारण एवं लेखन कौशल का विकास होगा। विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ेगी, प्रत्येक घटना का कारण समझेंगे। इससे हमारे बच्चों में सृजनात्मक शक्ति एवं संप्रेषण क्षमता विकसित होगी। इन प्रयासों से विद्यालयों में दबावमुक्त और आनन्ददायी वातावरण बनेगा। बाल सभा की संकल्पना हालांकि पुरानी है, लेकिन बहुत उपयोगी है। इस प्रकार विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में सामूहिक सहयोग, आपसी समझ, संप्रेषण एवं आत्मविश्वास बढ़ेगा। मुझे पूरा विश्वास है कि इन समन्वित प्रयासों से हमारे बच्चे होनहार बनेंगे।

शिविरा : 6 राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम (आरकेएसएमबीके) कार्यक्रम का आगाज आपके द्वारा ही किया गया था। वर्तमान में यह कार्यक्रम विभाग की सर्वोच्च प्राथमिकता में है। विद्यार्थियों और अभिभावकों में यह बहुत लोकप्रिय हो रहा है। इसके बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

माननीय मुख्यमंत्री महोदय : मेरा मानना है कि यदि शुरूआती कक्षाओं में बच्चों पर विशेष ध्यान परिवार एवं विद्यालय स्तर पर दिया जाए, तो बुनियाद मजबूत होगी और इससे उनके जीवन में आत्मविश्वास बढ़ेगा। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों को जानकारी अथवा

Rajasthan Education Department

सूचनाएँ देने की बजाए सीखना, समझना और समझी हुई विषयवस्तु का जीवन में उपयोग करने पर आधारित है। दक्षता आधारित शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों को निर्धारित दक्षताओं में सक्षम बनाया जाता है। यदि विद्यार्थी किसी दक्षता को प्राप्त नहीं कर पाता है, तो उपचारात्मक शिक्षण के माध्यम से प्रयास किया जाता है। विद्यार्थियों के लिए वर्कबुक्स तैयार करवायी गई है, इसमें दक्षता आधारित गतिविधियाँ हैं। शिक्षक को यह भी स्वतंत्रता है कि वह स्वयं के स्तर पर गतिविधियाँ तैयार कर सके। आरकेएसएमबीके एप के माध्यम से शिक्षकों को बहुत मदद मिली है।

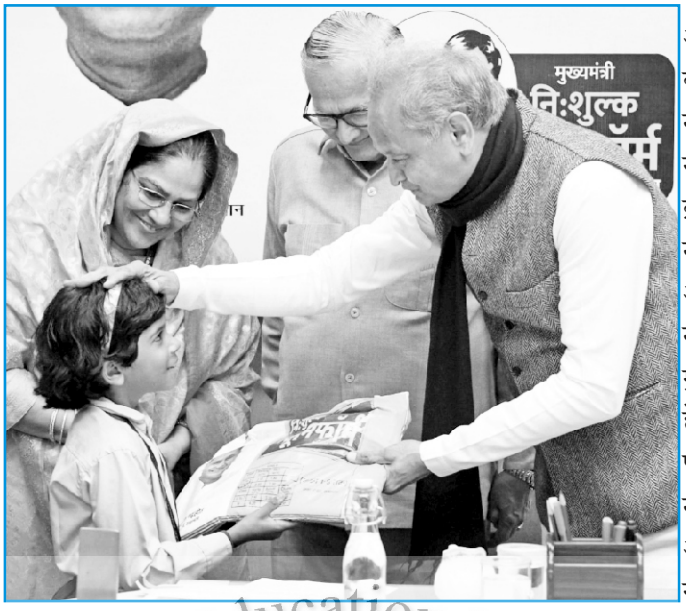

मैंने इसके रिपोर्ट कार्ड भी देखे हैं। मुझे अच्छा लगा, इसमें भी अंक नहीं देकर विद्यार्थियों की दक्षता प्रदर्शन/प्रवीणता की जानकारी अंकित है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से विद्यार्थियों के 1,38,00,000 आकलन पत्रकों की जाँच की गई है। यह प्रयास देश में ही नहीं, बल्कि विश्व में शिक्षा के क्षेत्र में एक अद्वितीय शैक्षिक नवाचार है। पूरे देश में इस कार्यक्रम को सराहा गया है।

शिविरा : 7 शिक्षा के सार्वजनीकरण की शत प्रतिशत सुनिश्चितता हेतु सरकार क्या कदम उठा रही है?

माननीय मुख्यमंत्री महोदय: राज्य में प्रत्येक स्कूल जाने योग्य बालक-बालिकाओं के स्कूल में एडमिशन की सुनिश्चितता हेतु पहले से ही प्रवेशोत्सव जैसे आयोजन प्रतिवर्ष किए जा रहे हैं। स्कूलों में बालक-बालिकाओं के अधिकतम ठहराव एवं निरन्तर अध्ययन को प्रोत्साहन देने हेतु राज्य सरकार द्वारा अभी हाल ही में बाल गोपाल योजना के माध्यम से सप्ताह में दो दिन नि:शुल्क दूध वितरण योजना प्रारम्भ की गई है। इसी प्रकार राजकीय विद्यालयों में कक्षा 8 तक अध्ययनरत सभी बालक-बालिकाओं को नि:शुल्क यूनिफॉर्म योजना के अन्तर्गत नि:शुल्क पोशाक एवं सिलाई पेटे 200 रुपये डीबीटी द्वारा वितरित किए गए हैं।

शिविरा : 8 राज्य में शिक्षा सेक्टर में वर्तमान में सरकार की क्या धारणाएँ और योजनाएँ हैं?

माननीय मुख्यमंत्री महोदय : विगत चार सालों में प्रदेश की प्रत्येक गाँव-ढाणी तक स्कूली शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित किए जाने और प्रत्येक कस्बाई/शहरी क्षेत्र तक कॉलेज शिक्षा की उपलब्धता हेतु सरकार ने जिस व्यापक पैमाने पर नए स्कूल एवं कॉलेज खोले हैं या क्रमोन्नत किए हैं, उसके बहुत सकारात्मक और बड़े अच्छे परिणाम आने वाले समय में देखने में आएंगे। सरकार की विद्यार्थियों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की सीधी पहुँच हेतु किए जा रहे विभिन्न प्रयासों के परिणामस्वरूप हमारे बच्चे आने वाले समय में राष्ट्र स्तर की विभिन्न प्रवेश और प्रतियोगी परीक्षाओं में निश्चित रूप से अपना कमाल दिखाएँगे। इसी परिप्रेक्ष्य में मैं विभागीय अधिकारियों, कार्मिकों, शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों से भी अनुरोध करना चाहूँगा कि वे सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदमों तथा विभिन्न योजनाओं का अधिकाधिक लाभ हमारे नौनिहालों तक पहुँचाएं। इसके लिए स्वयं भी पहल करके इन उपायों तथा योजनाओं की सफलता के लिए हर संभव सहयोग देवें।

शिविरा: 9 कोविड महामारी जैसी विकट परिस्थितियों के दौरान विद्यार्थियों के अध्ययन- अध्यापन में हुए नुकसान और भविष्य में ऐसी परिस्थितियों से निपटने के लिए शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा क्या नवाचार किए जा रहें हैं?

माननीय मुख्यमंत्री महोदय : कोविड महामारी जैसी विकट परिस्थितियों से निपटने के लिए शिक्षा विभाग, राजस्थान प्रारम्भ से ही सतर्क रहा है। विभाग के शिक्षकों द्वारा कोविड गाइडलाइन की पालना करते हुए घर-घर सम्पर्क कर विद्यार्थियों का अध्ययन सुचारू रखने का प्रयास किया गया। इस कड़ी में आओ घर से सीखें, स्माइल, स्माइल 2.0 जैसे नवाचारों द्वारा विद्यार्थियों के शिक्षण कार्य में हुई कमी की भरपाई की गई। वर्तमान में विभाग द्वारा शैक्षिक सत्र 2023-24 से गैर सरकारी वर्चुअल स्कूल संचालित करने की अनुमति दी जा रही है। जो विद्यार्थी किसी कारणवश विद्यालय नहीं जा सकते उनके लिए परिस्थितियों के अनुकूल वर्चुअल स्कूल में प्रवेश लेकर घर से ही अध्ययन कार्य की ऑनलाइन सुविधा उपलब्ध होगी। भविष्य में ऐसी विपदाओं से शिक्षण कार्य में बाधा उत्पन्न न हो इसके लिए विभाग हमेशा तत्पर रहेगा।

शिविरा : 10 आपकी सरकार द्वारा राजस्थान में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने एवं बालिकाओं के प्रोत्साहन

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं?

माननीय मुख्यमंत्री महोदय: हमने राजस्थान में नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा के अधिकार के दायरे को बढ़ाते हुए निजी विद्यालय में कक्षा 09 से 12 में अध्ययनरत बालिकाओं के लिए इन्दिरा महिला शक्ति फीस पुनर्भरण योजना सत्र 2022-23 से लागू कर दी है। आरटीई के अन्तर्गत निजी विद्यालयों में कक्षा 08 में अध्ययनरत बालिकाओं को क्रमोन्नति उपरान्त आगे के सत्रों हेतु कक्षा 09 से 12 तक पढ़ाई निरन्तर जारी रखने एवं अभिभावकों पर आर्थिक बोझ न पड़े इसलिए इन्दिरा महिला शक्ति निधि से फीस पुनर्भरण करने की घोषणा की है। इसके अलावा जो पूर्व में कालीबाई भील मेधावी स्कूटी योजना चल रही थी उसमें मेधावी छात्राओं के लिए चल रही अन्य स्कूटी योजनाओं को सम्मिलित करते हुए राजस्थान के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में पढ़ने वाली सभी वर्गों की छात्राओं के लिए कक्षा 12वीं में अधिक अंक प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित एवं आत्मसम्बलन प्रदान करने हेतु कालीबाई भील मेधावी स्कूटी योजना संचालित की जा रही है। इसके अन्तर्गत इसी साल 17537 स्कूटी वितरित की जानी है। साथ ही राजस्थान मूल की अति पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के लिए देवनारायण छात्रा स्कूटी वितरण योजना का भी आगाज किया गया है। इसमें अब तक 2484 स्कूटी वितरित की जा चुकी है। कृषि अध्ययनरत छात्रा प्रोत्साहन योजना द्वारा कक्षा 11 से पीएचडी तक कृषि संकाय के साथ अध्ययन करने वाली छात्राओं को प्रतिवर्ष 5000 से 15000 रुपये की राशि प्रोत्साहन के रूप में दी जाएगी। बच्चियों को घर के निकट शिक्षा मुहैया करवाने के लिए एवं ड्राप आउट कम करने के लिए 389 माध्यमिक स्तर के 1846 उच्च प्राथमिक स्तर के और 115 प्राथमिक स्तर के बालिका विद्यालयों को वरीयता क्रम में चरणबद्ध रूप से क्रमोन्नत किया जा रहा है। विद्यालयों में पढ़ रही छात्राओं के स्वास्थ्य के मद्देनजर आई.एम. शक्ति उड़ान योजना संचालित है।

शिविरा: 11 आपका व्यक्तित्व एवं कार्यशैली राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के सिद्धांतों एवं मूल्यों से प्रेरित रही है। आने वाली नई पीढ़ी गाँधी जी के विचार एवं उनके दर्शन शिक्षा काल के साथ ही समझ सके इसके लिए राज्य सरकार के क्या प्रयास है?

माननीय मुख्यमंत्री महोदय: राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के सिद्धांत और जीवन मूल्य देश ही नहीं पूरी दुनिया के लिए धरोहर हैं। इसकी प्रासंगिकता युगों-युगों तक बनी रहेगी। समाज के वंचित एवं पिछड़े तबकों के उत्थान, ग्रामस्वराज, अहिंसा, सत्य, लोकतंत्र और जन सेवा को लेकर बापू की जो सोच थी, उसे अंगीकार कर लिया जाए तो सुशासन के हर मापदण्ड को पूरा किया जा सकता है। हमारी सरकार इस भावना के साथ जनता के ट्रस्टी के रूप में काम कर रही है। हमारा प्रयास है गाँधीवादी चिंतन और उनकी शिक्षाएँ शासन का अंग बनने के साथ-साथ जन-जन तक पहुँचे। इसके लिए प्रदेश में महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ गवर्नेन्स और गाँधी दर्शन म्यूजियम की स्थापना की गई है। सर्वोदय विचार परीक्षा का आयोजन किया गया है। अहिंसा एवं शांति निदेशालय की स्थापना की गई है। महात्मा गाँधी मार्गदर्शी सिद्धांतों का अनुपालन एवं अनुशीलन करने वाले नागरिकों, संस्थानों एवं संगठनों को सम्मानित करने के लिए गाँधी सद्भावना सम्मान योजना लागू की। ग्राम स्वराज बापू का सपना था। वे मानते थे कि अंतिम छोर तक बैठे व्यक्ति को सुशासन का लाभ पहुँचे। इसी भावना के साथ हमारी सरकार ने 02 अक्टूबर को महात्मा गाँधी की जयंती से प्रशासन गाँवों के संग और प्रशासन शहरों के संग जैसे महत्त्वाकांक्षी अभियान शुरू किए, जिनमें 22 विभागों के माध्यम से एक स्थान पर लोगों के काम हो रहे हैं। इन शिविरों में लाखों लोगों की समस्याओं का हाथों-हाथ समाधान हुआ है। महात्मा गाँधी के जीवन-दर्शन को जन-जन तक पहुँचाने तथा जन सामान्य में पढ़ने की रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से शिक्षा विभाग के माध्यम से पूर्व संचालित 8869 महात्मा गाँधी पुस्तकालयों को बढ़ाकर 14970 करने की प्रक्रिया जारी है और 11341 महात्मा गाँधी पुस्तकालय एवं वाचनालयों के संचालन के लिए आदेश जारी कर दिए गए हैं।

राज्य सरकार प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र के विकास के लिए संकल्पबद्धता से कार्य कर रही है और हमारी मंशा है कि सभी विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा के अनुरूप आगे बढ़ने के सुअवसर प्राप्त हों। इस दृष्टि से हमने प्रतिवर्ष 200 प्रतिभावान विद्यार्थियों को सरकारी खर्च पर दुनिया के जाने-माने विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने की योजना की शुरूआत की है।

शिविरा: माननीय आपके सशक्त एवं कुशल नेतृत्व में प्रदेश के उत्तरोत्तर विकास हेतु शिक्षा विभाग में गुणात्मक शैक्षिक अभिवृद्धि हेतु आपने अनेक कदम उठाते हुए नित नूतन योजनाओं एवं नवाचारों से विद्यार्थियों को लाभान्वित किया है। शिक्षा के क्षेत्र में आपकी सकारात्मक सोच का लाभ राजस्थान के प्रदेशवासियों को मिलेगा और निश्चित ही राजस्थान शिक्षा के क्षेत्र में संपूर्ण राष्ट्र का सिरमौर बनेगा ऐसा मेरा विश्वास है। आपने शिविरा पत्रिका के माध्यम से शैक्षिक जगत का मार्गदर्शन करते हुए अपना बहुमूल्य समय दिया है इसके लिए समस्त सम्पादक मण्डल की ओर से आपका बहुत बहुत आभार-शुक्रिया!

वरिष्ठ संपादक-शिविरा
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो: 9414426063

Rajasthan Education Department

साक्षात्कार - अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्कूल शिक्षा एवं भाषा विभाग

❒ डॉ. रणवीर सिंह

श्री पवन कुमार गोयल अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्कूल शिक्षा एवं भाषा विभाग का शिविरा पत्रिका के लिए माह जनवरी, 2023 में डॉ. रणवीर सिंह विशेषाधिकारी-शिक्षा द्वारा लिया गया साक्षात्कार .....

शिविरा-1. आपने दीर्घ सेवाकाल में लंबी अवधि तक शिक्षा विभाग में अपनी उत्कृष्ट सेवाएँ दी है और शिक्षा में काम करने का आपका लंबा अनुभव है। राजस्थान में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा को आप किस प्रकार देखते हैं ?

अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय, स्कूल शिक्षा- शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान संभावनाओं से भरा प्रदेश है। भौगोलिक चुनौतियों एवं विविधताओं के बावजूद भी विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए राज्य में शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक काम हुआ है। आने वाला समय शिक्षा के क्षेत्र में निश्चित ही राजस्थान के विद्यार्थियों का है। एक समय था जब राजस्थान की गिनती शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े राज्यों में हुआ करती थी, लेकिन विगत कुछ सालों में राजस्थान में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में अपने कदम मजबूती से आगे बढ़ाए हैं। राजस्थान भामाशाहों का प्रदेश है, शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देने में भामाशाहों ने सदैव आगे होकर कार्य किया है।

हमारे शिक्षकों और विद्यार्थियों में अपार क्षमता और संभावनाएँ है। अभी हाल ही में राज्य ने शिक्षा के क्षेत्र में कई रिकार्ड बनाएं हैं जो हमारी टीम शिक्षा विभाग की कार्यक्षमता को दर्शाता है।

आजादी के अमृत महोत्सव में 12 अगस्त 2022 को सामूहिक देशभक्ति गीत गायन, 2 अक्टूबर 2022 को गाँधी जयंती पर सामूहिक प्रार्थना सभा का आयोजन, 19 नवम्बर, 2022 को आयोजित Chess in School Activity एवं RKSMBK के तहत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) द्वारा लगभग 50 लाख विद्यार्थियों की 1.38 करोड़ उत्तर पुस्तिकाओं का आकलन आदि हमारी संभावनाओं के छोटे-छोटे उदाहरण हैं।

शिविरा-2. देश में शिक्षा नीति-2020 लागू की जा रही है। NEP-20 के क्रियान्वयन की दिशा में राजस्थान की क्या तैयारी है ?

अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की क्रियान्विति की दिशा में राज्य के कदम काफी आगे बढ़ चुके हैं। भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार राज्य में विभिन्न स्तरों पर NEP-20 को लेकर समितियों का गठन एवं समूहवार नोडल अधिकारियों की नियुक्ति की जा चुकी है। राज्य में ECCE के लिए लगभग 40,000 आँगनबाड़ी केन्द्रों का समन्वयन विद्यालयों के साथ किया जा चुका है तथा 1,033 बाल वाटिकाएँ प्रारम्भ की जा रही है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा की दिशा में यह

श्री पवन कुमार गोयल

अतिरिक्त मुख्य सचिव (स्कूल शिक्षा)

एक परिचय

आप वर्ष 1988 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी रहे हैं। आपने नेक, कर्तव्यनिष्ठ एवं ईमानदार प्रशासनिक अधिकारी के रूप में छवि बनाई है। आप सरल, सहृदय, दूरद्रष्टा एवं त्वरित निर्णय की मिसाल हैं। आपका जन्म 01 फरवरी, 1963 तथा गृह राज्य राजस्थान है।

आपने राजस्थान में प्रशासनिक सेवा में सर्वप्रथम वर्ष 1990 में बीकानेर उत्तर के उपखण्ड अधिकारी के रूप में कार्य किया। वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के रूप में आपने राज्य के विभिन्न संवेदनशील विभागों का कुशल एवं सशक्त नेतृत्व किया। आपने शिक्षा विभाग में अग्रांकित पदों को सुशोभित किया-

1. उपसचिव, शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर।
2. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
3. प्रमुख सचिव, माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर।
4. प्रमुख सचिव, स्कूल शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर।
5. प्रमुख सचिव, प्रारम्भिक शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर।

आपके नेतृत्व से लाभान्वित होकर शिक्षा विभाग ने समय-समय पर उत्कृष्टता प्राप्त की। यही कारण है कि राजस्थान ने शिक्षा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित कर राष्ट्रीय स्तर पर विषेष पहचान बनाई है।

Rajasthan Education Department

एक महत्त्वपूर्ण कदम है। NEP-20 के निर्देशों के अनुसार सभी ड्रॉप आउट बालकों को विद्यालय से जोड़ते हुए सकल नामांकन अनुपात शत-प्रतिशत करना (GER 100%), शिक्षक-शिक्षा (Teacher Education), शिक्षा में तकनीकी का प्रयोग एवं बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (FLN) कार्य प्रगति पर है। राज्य की पाठ्यचर्या (SCF) तैयार कर शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार को भेजी जा चुकी है। NEP-20 के लिए शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित ऑनलाइन ट्रेकर में दिए गए टॉस्क की प्रगति को नियमित रूप से अपडेट किया जा रहा है।

शिविरा-3.शिक्षा की पहुँच (Access) एवं नामांकन की दिशा में आपके क्या प्रयास है ?

अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय- विगत सत्रों में सभ्य में राजकीय विद्यालयों का नामांकन बढ़ा है। हमारा प्रयास है कि इस विद्यार्थियों को उनके परिवेश में समीपस्थ स्थान पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध हो सके, इसके लिए राज्य के सभी 4 हजार से अधिक माध्यमिक विद्यालयों को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर क्रमोन्नत किया गया है, दिसम्बर, 2018 से अब तक 342 नवीन प्राथमिक विद्यालय खोले गए एवं 1,503 प्राथमिक से उच्च प्राथमिक स्तर, 1,195 उच्च प्राथमिक से माध्यमिक स्तर, 4,443 माध्यमिक से उच्च माध्यमिक स्तर एवं 1,194 उच्च प्राथमिक विद्यालयों को सीधे ही उच्च माध्यमिक स्तर पर क्रमोन्नत किया गया है।

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 500 अतिरिक्त संकाय/विषय खोले जा रहे हैं। हमारे प्रयासों से समुदाय का विश्वास राजकीय विद्यालयों में बढ़ा है। विगत 03 वर्षों में राज्य में नामांकन में 16 लाख से अधिक की वृद्धि होना इसका परिचायक है। हमारा प्रयास है कि शिक्षा राज्य के गाँव-ढाणी तक पहुँचे और कोई भी प्रवेश योग्य बालक अनामांकित नहीं रहे।

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत सभी विद्यार्थियों को नि:शुल्क पाठ्य-पुस्तकें, कक्षा 1-8 तक के सभी विद्यार्थियों को नि:शुल्क पोशाक उपलब्ध करवाई गई है एवं पौष्टिक मध्याह्न भोजन के साथ **'बालगोपाल'** योजना के तहत सप्ताह में दो दिन दूध उपलब्ध करवाया जा रहा है।

शिविरा -4. कोरोना से उत्पन्न परिस्थितियों के कारण विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में व्यवधान उत्पन्न हुआ है। इस हेतु राजस्थान ने स्माइल 0.1, 0.2 एवं 0.3, आओ घर से सीखें तथा ई-कक्षा आदि नवाचारों से विद्यार्थियों को शिक्षा से जोड़ने का प्रयास किया है, लेकिन फिर भी विद्यार्थियों के Learning Losses बहुत अधिक रहे हैं, इनकी पूर्ति के लिए आपके क्या प्रयास हैं।

अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय- जैसा कि आपने बताया कोरोना काल में विद्यार्थियों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से जोड़े रखने के लिए स्माइल 0.1, 0.2 एवं 0.3, आओ घर से सीखें, ई-कक्षा, हवामहल, दूरदर्शन आदि के माध्यम से प्रयास किए हैं लेकिन फिर भी हमारी पहुँच सभी विद्यार्थियों तक विभिन्न कारणों से नहीं हो पाई। इस दौरान हुए Learning Losses की पूर्ति के लिए माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने बजट में विशेष घोषणा की है, जिसके तहत हम 'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम' (RKSMBK) ब्रिज कोर्स कार्यक्रम द्वारा Learning Losses की पूर्ति प्रारम्भ कर रहे हैं, जिसके तहत :-

i. दक्षता आधारित वर्कबुक:

- विद्यार्थियों में गत कक्षा की छूट गई एवं विस्मृत हुई दक्षताओं की सहज प्राप्ति के लिए विभाग में लर्निंग लॉस को समाप्त करने हेतु आरएससीईआरटी द्वारा कक्षा 1 से 8 के लिए लर्निंग लेवल आधारित 18 कलस्टर वर्कबुक्स विकसित की गई हैं।
- नियमित अध्ययन के साथ-साथ उक्त वर्कबुक्स के प्रयोग से विद्यार्थी द्वारा सीखी गई दक्षताओं की ट्रेकिंग की जानी है, जिसके आधार पर विद्यार्थियों को रेमिडिएशन देकर एट ग्रेड स्तर पर लाना है।

ii. निरंतर आकलन से लर्निंग गैप का चिह्नीकरण

- रेमेडिएशन कार्यक्रम में शिक्षण उपरान्त कक्षा 3-8 के विद्यार्थियों की दक्षता प्राप्ति का आकलन हेतु निर्धारित कार्यक्रम के तहत तीन प्रकार के आकलन करवाएं जाएँगे। 1. बेसलाइन आकलन, 2. रचनात्मक आकलन, 3.योगात्मक आकलन।

iii. लर्निंग गैप के लिए रेमेडिएशन

- कोविड महामारी की वजह से लर्निंग लॉस की पूर्ति के लिए कक्षा 03 से 08 ब्रिज रेमेडिएशन कार्यक्रम चलाया जाएगा।
- आरएससीईआरटी द्वारा विशेष रूप से तैयार कार्य पुस्तिकाओं के माध्यम से बेसलाइन आकलन द्वारा विद्यार्थियों का समूहीकरण किया गया।
- समूहीकरण के अनुसार वांछित दक्षताओं को अर्जित करने के लिए गतिविधि आधारित शिक्षण से प्रभावी अधिगम करवाया गया।
- RKSMBK के तहत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) द्वारा लगभग 50 लाख विद्यार्थियों की 1.38 करोड़ उत्तर पुस्तिकाओं का आकलन।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

iv. अभिभावकों को विद्यार्थियों की प्रगति से जोड़ना हॉलिस्टिक रिपोर्ट कार्ड तथा पीटीएम:

विद्यार्थी के अभिभावकों को उनकी अध्ययन की प्रगति में सक्रिय भागीदार बनाने के लिए, योगात्मक आकलन के आधार पर डिजिटल रूप से समग्र रिपोर्ट कार्ड्स तैयार किए एवं पीटीएम में इन रिपोर्ट कार्ड्स पर चर्चा की।

प्रत्येक विद्यार्थी को डिजिटल रूप से तैयार (शाला दर्पण से डाउनलोड किया गया) हॉलिस्टिक रिपोर्ट कार्ड प्रदान कर माता-पिता/अभिभावकों को उनके बालक-बालिकाओं की दक्षताओं से अवगत कराया गया।

शिविरा -5. राज्य में इस वर्ष 5000 से अधिक विद्यालयों को उच्च माध्यमिक स्तर पर क्रमोन्नत किया गया है। इनमें पदों की पूर्ति के लिए आपके क्या प्रयास है ?

अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय– उपलब्धियाँ सदैव ही चुनौतियों को बढ़ा देती है लेकिन हम इसके लिए भी तैयार है। विगत चार वर्षों में शिक्षा विभाग में विभिन्न पदों पर 81,000 से अधिक नियुक्तियाँ प्रदान की जा चुकी है एवं 90,000 हजार से अधिक पदों पर भर्तियाँ प्रक्रियाधीन है। शीघ्र ही इन पदों पर भी नियुक्तियाँ प्रदान की जा सकेगी। हमारा विश्वास है कि विद्यार्थियों का शिक्षण सुचारू रूप से चलेगा।

अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के लिए 10,000 शिक्षकों की भर्ती की विज्ञप्ति जारी की जा चुकी है।

शिविरा -6. NEP-20 में शिक्षा में तकनीकी के समावेश पर विशेष जोर दिया गया है। राजस्थान में इसके लिए क्या किया जा रहा है ?

अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय– शिक्षा में तकनीकी के अनुप्रयोग को लेकर के राजस्थान में महत्त्वपूर्ण कार्य हुआ है, जिसकी सराहना राष्ट्रीय स्तर पर भी की गई है। शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से राजस्थान में अध्ययनरत सभी स्कूली विद्यार्थियों एवं शिक्षा विभाग के कार्मिकों का डेटाबेस संधारित किया जाता है। यही नहीं बल्कि शिक्षक/विद्यार्थी उपस्थिति, परीक्षा परिणाम, टी.सी., शिक्षकों का ए.पी.ए.आर., आश्वासित कॅरियर प्रोग्रेस के प्रकरण, कार्यग्रहण/कार्यमुक्ति एवं अन्य कई मॉड्यूल के माध्यम से विद्यालयों के कार्य शाला दर्पण के माध्यम से सम्पादित किए जा रहे हैं।

कोरोना काल में तकनीकी का प्रयोग करते हुए ई-कक्षा, स्माईल (0.1, 0.2 एवं 0.3), हवामहल कार्यक्रम सफलतापूर्वक संचालित किए गए। प्रतिदिन कक्षावार एवं विषयवार विषयवस्तु विद्यार्थियों/अभिभावकों के मोबाइल पर उपलब्ध करवाई गई। शिक्षण की निरन्तरता को बनाए रखने में विषम परिस्थितियों में तकनीकी का सफल प्रयोग किया गया। आने वाले समय में सभी विद्यालयों में इन्टरनेट कनेक्शन एवं स्मार्ट क्लास की सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है।

विद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षा के महत्त्व को देखते हुए प्रथम बार बेसिक एवं वरिष्ठ कम्प्यूटर अनुदेशक के 10,453 पदों का सृजन किया गया है।

शिविरा-7. ऐसा कहा जाता है कि राजस्थान बालिका शिक्षा में पीछे है, इस क्षेत्र में क्या प्रयास किए जा रहे हैं ?

अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय– विगत वर्षों में बालिका शिक्षा के क्षेत्र में राज्य में उल्लेखनीय कार्य हुआ है। बालिका शिक्षा की पहुँच गाँव-ढाणी तक सुनिश्चित किए जाने के लिए राज्य में 115 बालिका प्राथमिक विद्यालयों को बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय स्तर तक एवं 400 बालिका माध्यमिक विद्यालयों को बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर तक एवं 480 बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों को सीधे ही बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर तक क्रमोन्नत किया गया है। बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए बालिकाओं के लिए विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएँ संचालित की जा रही है। राज्य में अब बालिकाएँ भी शिक्षा के क्षेत्र में पीछे नहीं है। यह एक सुखद अनुभूति है।

शिविरा-8. राजस्थान में खेलकूद के विकास को लेकर क्या प्रयास किए जा रहे हैं ?

अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय– राजस्थान में स्कूल शिक्षा अन्तर्गत स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा पर हमारा विशेष जोर है। राज्य में पहली बार कक्षा 11 व 12 में स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा को ऐच्छिक विषय के रूप में सत्र 2022-23 से 249 विद्यालयों में संचालित किया जा रहा है। शारीरिक शिक्षकों की भर्ती हमारी प्राथमिकता है, इसके लिए माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा शारीरिक शिक्षकों के 5,846 नवीन पद स्वीकृत किए गए हैं, जिन पर भर्ती प्रक्रियाधीन है।

खेल मैदानों के विकास के लिए 'मेजर ध्यानचन्द स्टेडियम' योजना प्रारम्भ की गई है, जिसके तहत खेल मैदानों का विकास किया जा रहा है। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेताओं को सीधे ही सरकारी सेवा में नियुक्तियाँ प्रदान की जा रही है।

शिविरा-9. वर्ष 2020-21 की PGI ग्रेड में राजस्थान

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

के तीन जिले राष्ट्रीय स्तर पर उत्कर्ष श्रेणी में एवं 24 जिले अति उत्तम श्रेणी में रहे है, इस बारे में आपका क्या कहना है ?

अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय, स्कूल शिक्षा– राज्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे सतत प्रयासों का ही प्रतिफल है कि राजस्थान सत्र 2019–20 के ऐसेसमेन्ट के आधार पर राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट स्थान बना पाया। सत्र 2017–18 की राष्ट्रीय रैंकिंग में राजस्थान दूसरे पायदान पर था। हमारी चिन्ता थी कि हम इस स्थिति से नीचे नहीं रहे लेकिन हमारी टीम ने कठिन परिश्रम किया और अपनी स्थिति को मेन्टेन ही नहीं रखा बल्कि और अधिक अंकों के साथ उत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया।

राष्ट्रीय स्तर पर केवल राजस्थान के ही तीन जिले सीकर, झुंझुनूं एवं जयपुर उत्कर्ष श्रेणी में रहे एवं 24 जिले अति उत्तम श्रेणी में रहे। साथ ही इंसपायर अवार्ड में राजस्थान लगातार तीसरे वर्ष प्रथम स्थान पर रहा है। ये उपलब्धि सभी राजस्थान वासियों के लिए गर्व का विषय है।

शिविरा-10. विद्यालयों में इन्फ्रास्ट्रक्चर सुधार के लिए क्या प्रयास किए जा रहे हैं?

अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय, स्कूल शिक्षा– राजस्थान का विस्तार एवं भौगोलिक परिस्थितियाँ अत्यंत चुनौतिपूर्ण है और विद्यालय दूरस्थ गाँवों और ढाणियों में स्थित है। विद्यालयों में भौतिक संसाधन उपलब्ध करवाने के लिए सत्र 2019–20 में 2468.76 करोड़ रुपये के 7199 विभिन्न प्रकार के निर्माण कार्य स्वीकृत किए गए हैं। निर्माण कार्यों में मुख्यत: विद्यालय सुदृढ़ीकरण कार्य, नवक्रमोन्नत विद्यालयों में सुदृढ़ीकरण कार्य, मॉडल स्कूलों में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं का निर्माण, मॉडल स्कूलों में बालिका छात्रावास का निर्माण, नवीन केजीबीवी निर्माण एवं विद्यालय भवनों में वृहद् मरम्मत के कार्य शामिल है।

ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से सीएसआर के तहत कई विद्यालयों को विभिन्न संस्थाओं के द्वारा गोद लेकर आवश्यकतानुसार विद्यालय भवन/ कक्षा-कक्षों का निर्माण करवाया जा रहा है। विगत तीन वर्षों में भामाशाहों द्वारा विभिन्न कार्यों के लिए 300 करोड़ से अधिक की राशि राजकीय विद्यालयों को दान की गई है।

शिविरा -11. राजस्थान में सरकार द्वारा खोले गए महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) के प्रति समुदाय का बहुत अधिक रूझान देखने को मिल रहा है, पहली बार इन स्कूलों में प्रवेश के लिए विद्यार्थी प्रतीक्षा सूचियों में हैं, इस योजना के भविष्य को आप किस प्रकार देखते हैं?

अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय, स्कूल शिक्षा– देश के सबसे बड़े राज्य राजस्थान में शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन अभी भी और अधिक प्रयास किए जाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। वर्तमान समय वैश्वीकरण का है। शिक्षा में सतत् विकास के वैश्विक लक्ष्यों के साथ संरेखण (Alignment with Global Sustainable Development Goals) करने के लिए वैश्विक शिक्षा के विकास एजेंडा की दिशा में सतत् प्रयास करने की महती आवश्यकता है। जिसके लिए अंग्रेजी का ज्ञान होना आवश्यक है जिससे राज्य के विद्यार्थी वैश्विक समुदाय के साथ संरेखण कर अपना भविष्य तलाश सके। राजस्थान हिंदी भाषी प्रदेश होने से प्राय: देखा जा रहा है कि राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत अधिकतर विद्यार्थी अंग्रेजी में अपेक्षाकृत उपलब्धि प्राप्त करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। ऐसी स्थिति में राजकीय विद्यालयों में अंग्रेजी माध्यम का वातावरण उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से सत्र 2019–20 में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150 वीं जयंती के अवसर पर ''महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)'' कक्षा एक से बारहवीं तक दिनांक 14.06.2019 को स्थापित करने का निर्णय किया ताकि राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी भी वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सके। इन विद्यालयों को जिलों एवं ब्लॉक के साथ-साथ गाँवों एवं कस्बों में उत्कृष्टता के केन्द्र (Centre of Excellence) के रूप में विकसित किया जाएगा। इस योजना को धारणीय एवं प्रभावी बनाने हेतु आगामी पाँच वर्षों के लिए एक दृष्टि पत्र (Vision-2028) तैयार किया गया है। दृष्टिपत्र 'विजन-2028' के आधार पर चरणबद्ध एवं समयबद्ध निर्दिष्ट कार्य करवाए जा रहे हैं। राजस्थान की यह योजना आने वाले समय में एक मील का पत्थर साबित होगी

- वर्तमान में कुल महात्मा गाँधी एवं अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की संख्या - 1701
- अब तक 1032 महात्मा गाँधी विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं का संचालन प्रारंभ किया गया है।
- निर्धारित योग्यताधारी राजकीय विद्यालयों में पूर्व से कार्यरत संस्थाप्रधान एवं शैक्षिक स्टाफ के साथ गैर-शैक्षणिक तथा मंत्रालयिक कार्मिकों को साक्षात्कार के माध्यम से चयनोपरांत पदस्थापन किया जा रहा है।
- अंग्रेजी माध्यम के 10,000 शिक्षकों की संविदा भर्ती की जा रही है।
- महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय/ राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय योजना के प्रबोधन, अनुवर्तन, प्रभावी क्रियान्वयन एवं धारणीय बनाने हेतु समर्पित प्रकोष्ठ का गठन किया जा गया है।

विशेषाधिकारी-शिक्षा
शासन सचिवालय, जयपुर
मो: 9414180951

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

परीक्षा पर चर्चा : माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

❒ डॉ. संगीता पुरोहित

परीक्षा...परीक्षा...परीक्षा कैसी आई! मेरी पुस्तक मेरी कॉपी मेरा पेन कहाँ है भाई! परीक्षा कैसी आई....

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने तालकटोरा मैदान दिल्ली में 'परीक्षा पर चर्चा' कार्यक्रम के जरिए छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों से संवाद किया। इस प्रोग्राम में कला उत्सव प्रतियोगिता के लगभग 80 विनर्स और देश भर के 102 छात्र और शिक्षक शामिल हुए। इस साल परीक्षा पर चर्चा 2023 के लिए लगभग 38.8 लाख छात्रों ने रजिस्ट्रेशन कराया है, जो पिछले साल पंजीकृत छात्रों की संख्या (15.73 लाख) से दोगुना है।

सदैव स्वयं को प्रफुल्लचित्त रखने वाले अलमस्त बच्चों को भी परीक्षा के समय ऐसे गीतों को गुनगुनाते देखा जा सकता है। 27 जनवरी 2023 को प्रतिवर्ष की भाँति माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के विद्यार्थियों के साथ परीक्षा जैसे जनआंदोलन को जन उत्सव बनाने के तरीकों पर चर्चा की। इस कार्यक्रम में भारत के समस्त राज्यों सहित केन्द्र शासित प्रदेशों के विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों ने भाग लिया। माननीय धर्मेन्द्र गौरव शिक्षामंत्री भारत सरकार ने कहा कि परीक्षा समाज में एक चुनौती के रूप में व्याप्त हो चुकी है। इस चुनौती का सामना करने हेतु भारत के विद्यार्थियों के साथ युगद्रष्टा माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी मार्गदर्शक एवं अभिभावक के साथ-साथ शिक्षक के रूप में भी इन परीक्षार्थियों के साथ कदम से कदम मिलाते हुए खड़े है। माननीय ने परीक्षा पर चर्चा करने हेतु स्वयं को विद्यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षक बनाते हुए 'एग्जाम वॉरियर' पुस्तक लिखी है जो भारत की तेरह भाषाओं में आज हमारे सामने है। श्री धर्मेन्द्र गौरव शिक्षामंत्री के कथनानुसार माननीय प्रधानमंत्री की चिन्ता 21वीं सदी की समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में है। माननीय की आकांक्षा है कि भारत के विद्यार्थी वैश्विक संकटों यथा पर्यावरण, वैश्विक आर्थिक एवं तकनीकी संकटों का समाधान करें।

माननीय ने परीक्षा पर चर्चा शुरू करने से पूर्व वातावरण को अत्यन्त सहज, स्नेहिल, आत्मीय बनाते हुए कहा कि परीक्षा पर चर्चा मेरी भी परीक्षा है। देश के कोटि-कोटि विद्यार्थी मेरी भी परीक्षा ले रहे है। माननीय का कथन था कि

यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि बच्चे मुझसे सवाल करते हैं, अपनी पीड़ा मुझसे साझा करते है। उससे मैं यह जानने का प्रयास करता हूँ कि देश का युवा मन क्या सोचता है? किन परिस्थितियों से गुजरता है? युवाओं की अपने देश से क्या अपेक्षा है? उनके संकल्प क्या है? विद्यार्थियों के प्रश्न मूल्यों और व्यवस्था को समझने में मेरे लिए खजाने के रूप में आप सभी द्वारा सामने आते है।

दुनिया को बदलने की तमन्ना हो गई तो दुनिया को नहीं खुद को बदलना सीखें.....माननीय की अनुमति से आर्शीवाद लेकर विद्यार्थियों ने प्रश्न पूछने आरम्भ किए।

विद्यार्थी-1 मेरे परिवार में सब अच्छे नम्बर से पास हुए है मुझे भी अच्छे नम्बर लाने है इसलिए मैं तनाव में चली गई हूँ, कृपया मार्गदर्शन करें?

माननीय प्रधानमंत्री महोदय- माननीय ने पूर्ण धैर्य के साथ छात्रा को समझाते हुए कहा कि परिवार की अपेक्षाएँ होना स्वाभाविक है। यदि परिवार सोशल स्टेटस के दबाव में चिन्ता करता है तो गलत है। प्रधानमंत्री महोदय ने क्रिकेट का उदाहरण देते हुए कहा कि जब खिलाड़ी खेलता है तो पूरा स्टेडियम उससे चौका/छक्का लगाने की मांग करता है किन्तु वह बॉलर की बॉल पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित करते हुए खेलता है। इसी प्रकार आप भी स्वयं को समस्त दबावों से मुक्त करते हुए अपनी क्षमता के अनुसार कार्य करेंगे तो अपनी समस्या आराम से सुलझा लेंगे।

विद्यार्थी-2(1) परीक्षा के दौरान मैं पढ़ाई कहाँ से शुरू करूं? (2) मैं इस बात को लेकर चिन्तित रहती हूँ कि मुझे बहुत काम करना है तो मैं कुछ भी नहीं कर पाती, कृपया समय के विभाजन पर मार्गदर्शन करें?

माननीय प्रधानमंत्री महोदय- माननीय ने समय प्रबंधन पर उदाहरण देते हुए कहा कि समय प्रबंधन की कला हमें माँ से सीखनी चाहिए। माँ बिना किसी तनाव के परिवार के प्रत्येक सदस्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। कार्य करने से संतोष मिलता है, वहीं कार्य न करने पर अथवा कार्य के अव्यवस्थितिकरण से थकान होती है। माननीय ने कहा कि एक सप्ताह कागज पेन लेकर नोट करें कि आप अपना समय किन कार्यो पर लगाते है। बुद्धिमान व्यक्ति जिस प्रकार उलझे हुए मांझे को चतुराई से खोल लेता है हमें भी अपनी समस्या का समाधान चतुराई से करना है।

विद्यार्थी-3 कृपया मार्गदर्शन करें कि परीक्षा में अनुचित साधनों के उपयोग से कैसे बचा जाए?

माननीय प्रधानमंत्री महोदय- माननीय के कथनानुसार यह मूल्यों का बदलाव समाज के लिए बहुत घातक है। आज के प्रतिर्स्पधात्मक युग में नकल करने वाले विद्यार्थी एक दो परीक्षा तो उत्तीर्ण कर सकते हैं पर जीवन में कड़ी मेहनत करने वाले विद्यार्थियों से कभी आगे नहीं निकल पाएँगे। आपकी मेहनत आपके भीतर की ताकत है यह ताकत आपको बहुत आगे लेकर जाएगी। इसलिए कभी गलत रास्ते मत पड़ना। हमें जिन्दगी जीनी है शॉर्टकट नहीं अपनाने।

विद्यार्थी-4 हार्डवर्क और स्मार्टवर्क में से कौनसा जरूरी है?

माननीय प्रधानमंत्री महोदय- माननीय ने सभी विद्यार्थियों को प्यासे कौए की कहानी के उदाहरण से समझाया कि जीवन में हार्डवर्क कब स्मार्टवर्क बन जाता है और

Rajshri Education Department

स्मार्टवर्क कब हार्डवर्क का पूरक बन जाता है पता ही नहीं चलता। प्रधानमंत्री ने जीप मैकेनिक का उदाहरण देते हुए बताया कि जिस जीप को दो घंटे तक धक्के लगाकर भी स्टार्ट नहीं कर पाये उसे मैकेनिक ने दो मिनट में सही कर दिया तो लम्बे अनुभव के साथ किया गया हार्डवर्क भी स्मार्टवर्क बन जाता है।

विद्यार्थी–5 मैं एक एवरेज छात्रा हूँ परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन कैसे करूँ ?माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने छात्रा को बधाई देते हुए कहा कि आप सहित आपके अभिभावक भी बधाई के पात्र है कि वे इस तथ्य को स्वीकार कर पाए कि आप एवरेज छात्रा है। अपनी क्षमता को स्वीकार करना अपनी सामर्थ्य को जानना ईश्वरीय शक्ति तुल्य उपलब्धि है। माननीय ने कहा कि प्रत्येक माता पिता को अपने बच्चे को मूल्यांकन करना सीखाना चाहिए। संसार में अधिकांश लोग सामान्य होते है। सामान्य व्यक्ति ही असामान्य कार्य करते है। भारत का उदाहरण देते हुए बताया कि आज की वैश्विक आर्थिक चर्चा में एवरेज समझा जाने वाला भारत चमक रहा है। इस दबाव में ना रहे कि हम एवरेज हैं भीतर कुछ न कुछ अभूतपूर्व हैं। उसे पहचानना है, खाद पानी देना है आप आगे निकल जाएंगे।

विद्यार्थी–6 (1)मैं स्वयं को आप जैसे प्रतिष्ठित स्थान पर देखने की कल्पना करती हूँ। इतनी बड़ी जनसंख्या वाले भारत में नकारात्मक राय रखने वाले लोग भी अधिक है ये लोग आप की भावना को कैसे प्रभावित करते हैं। (2) विपक्ष के प्रत्येक आरोप को आप टॉनिक के रूप में कैसे लेते हैं। कृपया अनुभव बताएं।

माननीय प्रधानमंत्री महोदय– माननीय ने सहज मुस्कान के साथ कहा यह प्रश्न तो आउट ऑफ सिलेबस है। पर जहाँ तक मेरी बात है मैं सिद्धान्तत: मानता हूँ कि समृद्ध लोकतन्त्र के लिए आलोचना शुद्धि यज्ञ है किन्तु आरोप हमारा लक्ष्य भ्रमित करने के लिए होते हैं। अत: जिस प्रकार कम्पनी अपने उत्पाद में कमी निकालने वाले को ईनाम देती है उसी प्रकार आलोचना करने वालो को महत्त्व देवें किन्तु आरोप लगाने वाले पर समय बर्बाद नहीं करें। घर में माता–पिता को चाहिए कि बच्चे की सम्पूर्ण दिनचर्या पर ध्यान केन्द्रित करते हुए एकान्त में आलोचना करें टोका–टिप्पणी नहीं करें। यदि हम निश्चित मकसद के लिए काम करते हैं तो आरोपों की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

विद्यार्थी–7 (1) जैसे–जैसे टेक्नोलॉजी बढ़ती जा रही है हमारा फोकस सोशल मीडिया पर बढ़ता जा रहा है। आपके समय में इतना संघर्ष नहीं था। हम पढ़ाई पर फोकस कैसे करें ? (2) परीक्षा में पढ़ाई करते समय व्यवधान कैसे दूर करें ?

माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने चिन्ता जताते हुए कहा कि यह भारत के लिए बहुत चिन्ता की बात है कि आज का युवा अपने कीमती समय के छ: घण्टे का उपयोग स्क्रीन पर कर रहा है। इस समय का उपयोग वह किसी क्रिएटिविटी में लगा सकता है। गैजेट आपके सहयोग के लिए है। परमात्मा ने आपको असीम शक्तिशाली बनाया है। पूर्व की पीढ़ी पहाड़े आसानी से बोलती थी जिस पर विदेशी आश्चर्य करते थे, धीरे–धीरे हमारी ये क्षमताएँ समाप्त हो रही हैं। आपको गैजेट की फास्टिंग करने की आदत डालते हुए स्वयं को उसकी गुलामी से मुक्त करना होगा तभी आप आनन्ददायी जीवन जी सकेंगे।

विद्यार्थी–8 तनाव परीक्षा के परिणामों को किस प्रकार प्रभावित करता है व उससे कैसे मुक्ति पाई जा सकती है ?

माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने बताया कि बच्चा परीक्षा देकर घर पर पर्चा खराब होने पर डांट–डपट से बचने के लिए झूठ बोलकर घरवालों की अपेक्षाएं बढ़ा देता है। परिवार के लोग झूठ को सच मान लेते हैं। अत: सच बोलकर हम ईमानदारी से परिस्थितियों का मुकाबला करें। कॉम्पिटिशन की भावना से बाहर आते हुए यह सोचे कि जीवन की गाड़ी किसी एक स्टेशन के छूटने से रूकती नहीं है आगे कुछ और बेहतर होगा। परीक्षा एण्ड ऑफ लाईफ नहीं है। यह सोचते हुए तनाव से मुक्ति लें।

विद्यार्थी–9 हमें अधिक भाषाएं सीखने के लिए क्या करना चाहिए ?

माननीय प्रधानमंत्री महोदय– भारत विविधताओं से भरा देश है। सैंकड़ो भाषाएँ हजारों बोलियाँ हमारी सम्पदा है। हम अपनी भाषा के साथ–साथ किसी पड़ोसी राज्य की भाषा सीखते हैं तो उसकी हजारों वर्ष पुरानी परम्पराओं से परिचित होते है। हमारे लिए यह गर्व का विषय है कि संसार की सबसे पुरातन भाषा तमिल हमारे देश में है। जब हम दो हजार वर्ष पुराने स्मारक पर गर्व कर सकते हैं तो बहुभाषी देश की यह समृद्धि तो हमें और अधिक गर्वित करेगी। अत: बालपन से ही अन्य भाषा सीखाने का अभिभावक प्रयास करें बच्चों की सीखने की क्षमता बहुत अच्छी होती है। माननीय ने इस संबंध में एक आठ साल की बालिका का उदाहरण भी दिया।

अध्यापिका–10 कक्षा के वातावरण को अनुशासनपूर्ण रोचक एवं जीवन मूल्यों से सम्पृक्त कैसे बनाया जा सकता है ?

माननीय प्रधानमंत्री महोदय– अध्यापक को चाहिए कि विद्यार्थी की जिज्ञासा को बनाए रखें। अनावश्यक रौब जमाने के स्थान पर मित्रवत व्यवहार करते हुए छात्रों से जुड़े, खुद में खोए ना रहे। छात्र अपने अध्यापक की बात को बहुत महत्त्वपूर्ण समझता है। अनुशासन कक्षा के सभी स्तर के छात्रों को साथ लेकर चलने से बनेगा न कि डराने से।

अध्यापिका–11 समाज में विद्यार्थी कैसे व्यवहार करें ?

माननीय प्रधानमंत्री महोदय– माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि बच्चे को समाज के व्यापक दायरे में जाने दें। सम्भव हो तो बच्चे को परीक्षा के पश्चात अकेले बाहर जाकर समाज के प्रत्येक वर्ग से जुड़ने दे। जिस प्रकार पतंगों को यूनिफॉर्म नहीं पहनाई जा सकती उसी प्रकार विद्यार्थी को आवरण से मुक्त पारिवारीक लोगों से घुलने मिलने दें। बच्चे में ईश्वर की अमानत के परिवर्द्धन का भाव होना चाहिए। ये बच्चे समाज की ताकत बनकर उभरेंगे।

अस्तु प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की परीक्षा पर चर्चा ने करोड़ों बच्चों की बैचेनी, घबराहट हार मानने की प्रवृति को उत्साह उमंग व ललक में बदल दिया। समस्त विद्यार्थी, अभिभावक, शिक्षक परीक्षा के बढ़ते बोझ को जीवन का सहज हिस्सा मानने में सफल होंगें और सभी मिलकर ऐसे वातावरण के निर्माण का प्रयास करेंगे कि बालक के लिए जानना सीखना सब आसान हो जाए व खुला आसमान बालक के पंखों को परवाद देवें।

सहायक निदेशक
शिविरा अनुभाग
राजस्थान बीकानेर
मो. 9950956577

Rajasthan Education Department

जयंती विशेष

युग सेतु दयानंद सरस्वती

❒ कमल कुमार जाँगिड़

भारतवर्ष की यह पुण्यधरा 'रत्नगर्भा' के नाम से समस्त लोक में जानी जाती है। वस्तुतः अनेक दिव्य और असाधारण मनुज-रत्नों ने इस धरा के गर्भ से अवतरित होकर निज को धन्य तथा माँ भारतेश्वरी को पवित्र किया है। युग-युगांतर से इस भारतमही को अपनी कर्मस्थली बनाकर अनेक ईश्वरीय अवतारों, लोकदेवताओं संतों, ऋषि-ऋषिकाओं आदि नर-रत्नों और बहुगुणी मनीषियों ने संकटापन्न और पथभ्रान्त सी जान पड़ने वाली मानवता को सन्मार्ग का दिग्दर्शन करवाया है। ये सभी मानवता के पथ-प्रदर्शक ही सिद्ध नहीं हुए बल्कि महान सत्य शोधक के रूप में लब्धप्रतिष्ठ हुए।

माँ भारती की महान संतानों की इसी गौरवपूर्ण और तेजोमयी प्रकाश शृंखला के एक दैदीप्यमान नक्षत्र थे महान ऋषि 'महर्षि दयानंद सरस्वती, जिन्होंने न केवल मानवता को आध्यात्म का पावन पाठ पढ़ाकर सत्य का प्रकाश दिखलाया बल्कि आर्य समाज के रूप में एक नवीन दिशा भी प्रदान की।

12 फरवरी 1824 के मंगल दिवस वर्तमान गुजरात प्रांत के मौरवी जिला स्थित टंकारा नामक ग्राम में पिता अम्बाशंकर एवं माता यशोदा देवी के घर में एक महान योगी का बालरूप में अवतरण हुआ। यद्यपि अंबाशंकर उन दिनों एक बड़े जमींदार थे जो तहसीलदार ही के समान कर संग्रहण का कार्य किया करते थे परन्तु वे भगवान शंकर के परम भक्त भी थे। अतः मूलशंकर नाम वाले इस बालक का लालन-पालन एक धार्मिक वातावरण में हुआ। चूंकि पिता एक सम्मानित पद पर आसीन थे इसीलिए बालक मूलशंकर ने अपना बाल्यकाल समृद्धि की गोद में बिताया। ब्राह्मण और धार्मिक पारिवारिक पृष्ठभूमि होने के कारण बालक मूलशंकर को संस्कृत शिक्षा और शिव महापुराण की कथाएँ विरासत में मिली। एक बार महाशिवरात्रि उत्सव के दौरान शिव मंदिर में शिवलिंग पर चढ़कर एक मूषक को उन्होंने प्रसादादि सामग्री का भक्षण करते हुए देखा।

इस घटना का इनके किशोर मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और वे मूर्तिपूजा तथा अन्य धार्मिक आडम्बरों से घृणा करने लगे। वस्तुतः यह घटना उनके जीवन की निर्णायक और परिवर्तक घटना थी जिससे एक साधारण मानव की महामानव बन जाने की महागाथा का सूत्रपात हुआ। समय अपनी तीव्र गति से अग्रसर हो रहा था। अब मूलशंकर का मन सांसारिकता से उकताने लगा था या यूँ कहें कि वे अब अपने साधना मार्ग पर अपना प्रथम कदम बढ़ा चुके थे। परिवारजन उन्हें परिणय सूत्र में बाँधना चाहते थे परन्तु उन्हें यह बात ज्ञात हुई तो एक रात वे बिना किसी को कुछ बताए घर से प्रस्थान कर गए। उनके पिता ने उनकी खोज में कई आदमी दौड़ाए परन्तु सब व्यर्थ ही रहा।

अब तक मूलशंकर ने स्वयं को 'दयानंद' के रूप में स्थापित कर लिया था परन्तु सत्यान्वेषण एवं तत्वज्ञान की तलाश अभी भी शेष थी। इस हेतु वे कई ख्यातनाम संन्यासियों जैसे चैतन्य मठ के ब्रह्मानंद स्वामी, शिवानंद गिरी, पूर्णचंद्र स्वामी, स्वामी योगानन्द आदि से मिले परन्तु सद्गुरु की खोज अभी शेष थी। सदगुरु की यही खोज उन्हें मथुरा ले आई और इन्हें दर्शन हुए सद्गुरु स्वामी विरजानंद के।

स्वामी विरजानंद प्रज्ञाचक्षु, वेदों के मर्मज्ञ एवं व्याकरण के पूर्ण पंडित थे। दयानंद ने गुरु ही के सामीप्य में उनकी मनसा, वाचा, कर्मणा सेवा की। वेदों का ज्ञान प्राप्त किया। स्वामी विरजानंद ने शिक्षा समाप्ति के पश्चात दयानंद से गुरु दक्षिणा में मानवता का कल्याण और वैदिक धर्म का पुनरुत्थान मांगा। गुरु को प्रणाम कर दयानंद वैदिक एवं राष्ट्र धर्म के साथ-साथ मानव धर्म के पुनरुत्थान के लिए प्रस्थान कर गए।

गुरुगृह से लौटने के बाद स्वामी दयानंद ने अपने विवेकपूर्ण तर्कों और पाखंड खंडनी वाणी द्वारा समाज में व्याप्त पाखण्डों, धार्मिक आडम्बरों, अंधविश्वासों, रुढ़ि-रीतियों पर तीव्र कुलिशाघात किया। उन्होंने सभी मत-मतान्तरों का खण्डन कर केवल वेदों की भित्ति पर आधारित प्राचीन आर्य धर्म का ही प्रतिपादन किया और देश के अधिकांश भागों में भ्रमण कर धर्म, समाज और मानवता के तथाकथित ठेकेदारों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। उन्होंने जिन दो प्रथाओं पर सर्वाधिक कुठाराघात किया, वे थी मूर्तिपूजा और बहुदेवोपासना। स्वामी दयानंद ने जातिवाद, ऊँच-नीच, बाल विवाह आदि कुप्रथाओं की जड़े भी उखाड़ी। उन्होंने स्त्री शिक्षा, महिला पुनरुत्थान, विधवा विवाह आदि विचारों का समर्थन कर महिला सशक्तीकरण में महती भूमिका निर्वहन की। शुद्धिकरण द्वारा कई सनातनी धर्मावलम्बियों को पुनः दीक्षित भी करवाया। एक धर्म और समाज सुधारक होने के साथ-साथ स्वामी जी एक कुशल कलमकार भी थे। उन्होंने देश की जनवाणी हिंदी में अपने विशिष्ट दृष्टिकोण से वेदों का भाष्य लिखने का बीड़ा भी उठाया। परन्तु दुर्दैव से केवल यजुर्वेद संहिता और ऋग्वेद संहिता के आरंभिक कुछ मंडलों और अंशों का ही भाष्य वे लिख पाए।

स्वामी जी ने वेदांग प्रकाश, संस्कार विधि, पंचमहायज्ञ विधि आदि सरीखी अनेक पुस्तकें लिखी परन्तु उनकी कालजयी और मानवता को सत्य का प्रकाश दिखाने वाली कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' अन्यतम है। इसके प्रथम दस अध्यायों में भगवत्स्वरूप माता-पिता और संतान के कर्त्तव्य, शिक्षा, आश्रम व्यवस्था, धर्म और राजधर्म, वेद और ईश्वर, सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय, मोक्षबंधन, आचार-अनाचार आदि का सांगोपांग वर्णन है। अंतिम चार अध्यायों में विभिन्न मत-मतांतरों की एक खण्डनात्मक आलोचना है। यह सम्पूर्ण ग्रंथ स्वामीजी ही के मतानुसार 'आर्यभाषा' हिंदी में लिखा गया है।

धर्म और संस्कृति का पुनरुद्धार करने के प्रयोजन से स्वामी जी ने 1875 ई. में मुम्बई में एक नए समाज 'आर्य समाज' की स्थापना की। शीघ्र ही यह समाज संपूर्ण देश में प्रसिद्धि प्राप्त करता हुआ फैल गया। इस समाज के अनुयायियों को दस नियमों का पालन करना

Rajasthan Education Department

अनिवार्य था जिनमें सत्य, ईश्वर, वेद पठन, सांसारिक उपकार, प्रेम व धर्म व न्याय आदि से संबंधित आचरण पर बल दिया गया। आर्य समाज ने धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और शिक्षा सुधार संबंधी अनेक कार्य किए।

आर्य समाज को प्रायः सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त हुई और विशेष रूप से इसने हिन्दी भाषी क्षेत्रों में जनांदोलन का स्वरूप धारण कर लिया। आर्य समाज के संपर्क में आने से लोगों के मन में न केवल सत्य का ही प्रकाश प्रस्फुटित हुआ बल्कि उनमें राष्ट्रीय चेतना का भी संचार हुआ।

राष्ट्र जब अपनी परतंत्रता की शृंखला को तोड़ने के लिए 1857 ई. में संघर्षरत था। उसी समय स्वामीजी भी अपने राष्ट्र जागरण के कार्य में निरत थे। उन्होंने विदेशी शासन को राष्ट्र के लिए एक दुखदायी अभिशाप बताते हुए युवा वर्ग को राष्ट्र सेवा के लिए उठ खड़े होने का आह्वान किया तथा अपनी ओजस्वी वाणी से युक्त राष्ट्रीय विचारों से राष्ट्रीय एकता की भावना का भी संचार किया।

धार्मिक और सामाजिक सुधारक के रूप में ख्याति प्राप्त महामनीषी स्वामी दयानंद का राजपूताना प्रांत से भी गहरा और आत्मीय संबंध रहा। स्वामी जी सन् 1865 में सर्वप्रथम राजस्थान की करौली रियासत में राजकीय अतिथि के रूप में पधारे। स्वामी जी का पुनरागमन सन 1881 ई. में राजस्थान की धरा पर हुआ। महाराणा सज्जनसिंह के अनुरोध पर स्वामी जी उदयपुर आए एवं 1883 ई. में परोपकारिणी सभा की स्थापना की। इसके अतिरिक्त राजस्थान के जिस क्षेत्र पर स्वामीजी का व्यापक प्रभाव पड़ा वह क्षेत्र था तत्कालीन केन्द्र शासित प्रदेश अजमेर। राजस्थान में स्वामी जी की अंतिम यात्रा जोधपुर की रही। तत्कालीन जोधपुर नरेश महाराजा जसवंतसिंह 'नन्ही बाई' नामक एक गणिका के प्रेमवश होकर अपने कर्त्तव्यपथ से उदासीन होकर अपना राजधर्म विस्मृत कर बैठे थे। तब स्वामीजी ने भरे दरबार में महाराज को गणिका गमन के दोष बतलाए। राजधर्म को स्मृत करवाने वाले उपदेश दिए। इन सदुपदेशों के प्रभावस्वरूप महाराज गणिका से विमुख हो गए। गणिका 'नन्ही बाई' ने राज रसोइये जगन्नाथ के साथ मिलकर एक कुचक्र रचा। स्वामीजी को भोजन में विष देने का षडयंत्र किया गया। इस विष का प्रभाव स्वामीजी के स्वास्थ्य पर धीरे-धीरे हुआ। बहुत चिकित्सकीय उपचार करवाए जाने पर स्वामीजी को नहीं बचाया जा सका। अंततः वही हुआ जो अदृश्य ने अपने गर्भ में छिपा रखा था। काल के क्रूर हाथों ने 1883 ई. में अजमेर प्रवास के दौरान इस धर्मवीर और कर्मवीर महामनीषी को कभी समाप्त न होने वाली यात्रा पर भेज दिया।

निश्चित ही आधुनिक युग में जातीय उद्धार के लिए जीवन उत्सर्ग कर देने का सबसे उज्ज्वल पाठ यदि हमें किसी ने पढ़ाया है तो इस वीतराग संन्यासी, आर्यसमाज के संस्थापक, महान राष्ट्रधर्मी कवि दयानंद ने। स्वामीजी प्राचीन और अर्वाचीन के बीच हमारे युग सेतु के एक महत्त्वपूर्ण आधार स्तंभ थे। उन्होंने फिर से हमें वैदिक कर्मयोग का पाठ पढ़ाकर सदियों के भूले हुए अपने प्राचीन धर्म मार्ग पर लाने का सबसे सबल प्रयास किया। हे महामानव! आपको इस कृतज्ञ राष्ट्र का भावपूर्ण व विनम्र नमन!

शिक्षक
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय महरों की ढाणी,
कुचामन सिटी, नागौर (राज.)
मो: 9928278014

देखीया, परखीया और सीखीया को साकार कर रहे मास्टर मदन

❒ ओमप्रकाश सुथार

आदर्श अध्यापक वही होता है जो स्वयं एक विद्यार्थी की तरह निरंतर नया सीखते रहने की जिज्ञासा को अपने भीतर हमेशा जिंदा रखता है। इसके लिए अध्यापक अपनी रचनात्मकता और सृजनात्मकता से अपने आस-पास का वातावरण ऐसा बनाए रखता है जिसमें विद्यार्थियों के लिए देखीया, परखीया और सीखीया के अर्थात देखकर और परखकर सीखने के अवसर निरंतर बने रहते हैं। बच्चे वह नहीं सीख पाते जो हम मात्र कहते हैं जबकि बच्चे उसे देखकर जल्दी सीख जाते हैं जो हम करते हैं।

कहते हैं कि सौ शब्द वह शिक्षा नहीं दे सकता जो एक चित्र सीखा देता है। मास्टर मदन विद्यालय में अपने अध्यापन कार्य के मध्य जब भी कुछ खाली समय मिलता है अथवा अध्यापान के बाद भी अपना अतिरिक्त समय देते हुए विद्यालय परिसर की दीवारों पर अपनी विशिष्ट चित्रकारी से आदर्श व्यक्तित्वों की कीर्तियों से सीख लेने एवं पर्यावरण संवर्द्धन के प्रति जागरूक रहने का संदेश देने वाले आकर्षक और बोलते चित्रों को उकेरते हुए बच्चों के लिए देखिया, परखिया और सीखिया का शैक्षिक वातावरण उपलब्ध करा रहे हैं। इस प्रकार की चित्रों के साथ बच्चों की सहभागिता उनमें व्यावहारिक शिक्षण और मौलिक चिंतन के द्वार खोलती हैं। अध्यापन के साथ-साथ अपने अंदर के चित्रकार को बाहर निकालते हुए वे बच्चों के लिए अध्ययन के साथ-साथ उनके सृजनात्मक और रचनात्मक विकास का मंत्र तैयार कर रहे हैं - बहुमुखी प्रतिभा के धनी मास्टर मदन। आप वर्तमान में स्थानीय राजकीय उ.मा. विद्यालय पंवारसर कुआ में कार्यरत हैं।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी मास्टर मदन अध्यापन के साथ-साथ अपनी चित्रकारी और शारीरिक योग दीक्षा से बच्चों में क्यों से क्यों नहीं की सोच विकसित करने का वातावरण दे रहे हैं।

कहते हैं कि कल्पनाएँ हमारी प्रतिभा और रचनात्मकता को निरंतर निखारती रहती हैं। हम जैसी कल्पना करते है वैसे ही बनते जाते हैं। आज विद्यालयी परिसर में बच्चे जिस वातावरण को देखेंगे उसी के बारे में कल्पना करेंगे और वैसे ही बनने की कोशिश भी करेंगे। इसलिए मास्टर मदन द्वारा विद्यालय परिसर को जिन महान विभूतियों और प्रेरणादायी व्यक्तित्वों के चित्रों से सजाया जा रहा है उसका बच्चों की कल्पना एवं विचार शक्ति पर सीधे तौर पर प्रभाव पड़ रहा है। बच्चे इन महान व्यक्तित्वों के बारे में चर्चा करने लगे हैं, उनके बारे में पढ़ने की चेष्ठा रखते हैं और तो और राष्ट्रीय विकास की मुख्यधारा में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के बारे में सोचने लगे हैं।

मास्टर मदन की चित्रकारी से एक ओर विद्यार्थियों को सीखने का व्यावहारिक मंच तो मिल ही रहा है दूसरी ओर विद्यालय परिसर का कोना-कोना भी अब बच्चों को शिक्षित कर रहा है।

निदेशक, जन शिक्षण संस्थान बीकानेर
मो: 9660286578

Rajasthan Education Department

भारत कोकिला सरोजिनी नायडू

❒ देवेन्द्रराज सुथार

स्वतंत्रता सेनानी, कवयित्री, देश की पहली महिला राज्यपाल, केसर-ए-हिंद श्रीमती सरोजिनी नायडू उन महिलाओं में से एक हैं जिन्होंने भारत को स्वतंत्र कराने के लिए कड़ा संघर्ष किया। उन्होंने 1925 में हुए कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन की अध्यक्षता कर राष्ट्रीय स्तर की कुछ महिला नेताओं में भी अपना नाम शामिल करवाया। उन्होंने ही कांग्रेस के बाद के अधिवेशन में पहली बार राष्ट्रगान का सस्वर गायन किया। उनकी सुरीली आवाज के कारण उन्हें राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा 'भारत कोकिला' की उपाधि मिली।

उनका जन्म 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद के वैज्ञानिक और शिक्षाविद पिता अघोरनाथ चट्टोपाध्याय और बंगाली कवयित्री माँ वरदा सुंदरी के घर हुआ था। वह अपने आठ भाई-बहनों में सबसे बड़ी थी। उनके एक भाई वीरेंद्रनाथ क्रांतिकारी थे और एक भाई हरिद्रनाथ कवि, कथाकार और कलाकार थे। एक मेधावी छात्रा होने के साथ-साथ वह उर्दू, तेलुगू, अंग्रेजी, बंगाली और फारसी भाषाओं में भी पारंगत थी। उन्हें कविता लिखने का कौशल विरासत में मिला था। उन्होंने बचपन में ही कविताएँ लिखना शुरू कर दिया था। 12 साल की उम्र में उन्होंने 12वीं की परीक्षा अच्छे अंकों के साथ पास की और 1300 छंदों की एक लंबी कविता 'लेडी ऑफ द लेक' और केवल 13 साल की उम्र में लगभग 2000 पंक्तियों का एक विस्तृत नाटक लिखकर अंग्रेजी भाषा पर अपनी महारत साबित की। उनके वैज्ञानिक पिता चाहते थे कि वह गणितज्ञ या वैज्ञानिक बनें, लेकिन उनकी रुचि कविता में थी।

हैदराबाद के निजाम उनकी कविता से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने उन्हें विदेश में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति दी। 1895 में 16 साल की उम्र में वह लंदन के किंग्स कॉलेज और बाद में ग्रिटन कॉलेज कैम्ब्रिज में पढ़ने के लिए गई। वहाँ उनकी मुलाकात उस दौर के प्रख्यात कवि आर्थर साइमन और एडमंड गॉस से हुई। एडमंड गॉस ने नायडू को भारत के पहाड़ों, नदियों, मंदिरों और सामाजिक परिवेश को अपनी कविता में शामिल करने के लिए प्रेरित किया। नायडू ने 19 साल की उम्र में डॉ. एम. गोविंदराजुलू से शादी की और लगभग बीस वर्षों तक कविताएँ और लेखन कार्य करती रही और इस दौरान उनके तीन काव्य संग्रह प्रकाशित हुए। उनके काव्य संग्रह 'बर्ड ऑफ टाइम' और 'ब्रोकन विंग' ने उन्हें एक प्रसिद्ध कवयित्री बना दिया। उनका पहला कविता संग्रह 'द गोल्डन थ्रेडहोल्ड' 1905 में प्रकाशित हुआ, जो बहुत लोकप्रिय रहा।

1902 के लगभग सरोजिनी नायडू स्वतंत्रता सेनानी गोपाल कृष्ण गोखले के संपर्क में आई। उस समय चारों ओर देश में स्वदेशी आंदोलन ने जोर पकड़ लिया था। सरोजिनी नायडू ने भी मातृभूमि की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। फिर जगह-जगह जाकर वह देशभक्ति के गीत गाती और जनता में जागृति लाती। कांग्रेस में शामिल होकर उन्होंने पूरे देश का भ्रमण किया। वे जहाँ जाती वहीं देश की आजादी के लिए भाषण देती। उनके भाषणों में राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। जब मुंबई और कानपुर में कांग्रेस का पहला अधिवेशन हुआ तो सरोजिनी नायडू ने मंच पर जोरदार भाषण दिया। देश की आजादी के लिए जनता को खुली चुनौती दी- "मित्रों, मैं आप लोगों से कहना चाहती हूँ कि देश पर जब भी संकट आएगा भारत की नारियाँ पीछे नहीं रहेगी। राष्ट्रीय ध्वज को सदैव ऊँचा ही रखेंगी। देश की आजादी के लिए सदैव तैयार रहेगी। स्वतंत्रता की लड़ाई में कायरता और निराशा सबसे बड़ा पाप है। यदि आप देश की आजादी का सच्चा सपना मन में बसाए हुए हैं तो साथियों आगे बढ़िए और विजय प्राप्त करिए।"

सरोजिनी नायडू ने देश की राजनीति में आने से पहले गाँधीजी के साथ दक्षिण अफ्रीका में काम किया था। गाँधीजी वहाँ की जातीय सरकार के खिलाफ लड़ रहे थे और सरोजिनी नायडू ने एक स्वयंसेवक के रूप में उनका समर्थन किया। इसी तरह सरोजिनी नायडू 1930 के प्रसिद्ध नमक सत्याग्रह में गाँधीजी के साथ रहने वाली स्वयंसेवकों में से एक थी। बहुत कम लोग जानते हैं कि वह गाँधीजी से पहली बार भारत में नहीं बल्कि ब्रिटेन में मिली थी। ये 1914 की बात है। गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह के चलते प्रसिद्ध हो चुके थे। उस समय सरोजिनी नायडू इंग्लैंड में थी। जब उन्होंने सुना कि गाँधीजी भी इंग्लैंड में हैं तो वह उनसे मिलने गई। गाँधीजी को देखकर चौंकी लेकिन प्रभावित भी हुई, उन्होंने देखा कि गाँधीजी जमीन पर कंबल बिछाकर बैठे हुए हैं और उनके सामने टमाटर और मूंगफली का भोजन परोसा हुआ है।

सरोजिनी नायडू ने गाँधी की प्रशंसा सुनी थी, लेकिन उन्हें कभी नहीं देखा था। जैसा कि वे खुद वर्णन करती हैं, 'कम कपड़ों में गंजे सिर और अजीब हुलिए वाला व्यक्ति और वो भी जमीन पर बैठकर भोजन कर रहा है।' गाँधीजी अपने पत्रों में नायडू को कभी-कभी डियर बुलबुल, डियर मीराबाई तो कभी मजाक में अम्माजान और मदर भी लिखते थे। सरोजिनी भी मजाक के इसी अंदाज में उन्हें कभी जुलाहा, लिटिल मैन तो कभी मिकी माउस संबोधित करती थी। जब महात्मा गाँधी देश में भड़की हिंसा को शांत करने की कोशिश कर रहे थे, उस वक्त सरोजिनी नायडू ने उन्हें शांति का दूत बताया और हिंसा रोकने की अपील की। महिला मुक्ति की समर्थक सरोजिनी नायडू का मानना था कि भारतीय नारी कभी भी कृपा की पात्र नहीं थी, वह हमेशा समानता की हकदार रही है। इन्हीं विचारों के साथ उन्होंने महिलाओं में आत्मविश्वास जगाने का काम किया।

जब दूसरे विश्व युद्ध के समय फिरंगी सरकार ने भारत को युद्ध में शामिल होने के लिए विवश किया तो उसके विरोध में कांग्रेस की प्रांतीय सरकारों ने त्यागपत्र दे दिए। फिर से समझौते के लिए कुछ प्रयास किए गए, जिसमें अंग्रेज सरकार के भारत के राज्य मंत्री सर स्टैफर्ड क्रिप्स का प्रयास बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा। क्रिप्स मिशन असफल रहा। अब कांग्रेस के पास जन आंदोलन शुरू करने का ही एक रास्ता रह गया था। 8 अगस्त 1942 को कांग्रेस के मुंबई में हुए अधिवेशन में गाँधी जी ने ब्रिटिश शासकों को भारत छोड़कर चले जाने को आखिरी बार कहा और साथ ही देश की जनता को 'करो या मरो' का आदेश दिया। भारत छोड़ो आंदोलन की यह युद्ध-पुकार थी और भारत के स्वाधीनता संग्राम का वह आखिरी पड़ाव था। 8 अगस्त की मध्यरात्रि में गाँधीजी और कांग्रेस कार्यकारी समिति के सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया। गाँधीजी को उनके निजी मंत्री महादेव देसाई और सरोजिनी नायडू के साथ पुणे के आगा खां महल

Rajasthan Education Department

में रखा गया। वहीं कुछ समय बाद कस्तूरबा को भी लाया गया। उन कष्टप्रद दिनों में जब गाँधीजी का मन उदास हुआ करता था तब अपने खराब स्वास्थ्य के बावजूद सरोजिनी नायडू अपने विनोद और हंसी से उनका मन बहलाने की कोशिश करती। आगा खां महल में पहले महादेव देसाई फिर कस्तूरबा की मृत्यु के बाद सरोजिनी नायडू चट्टान की भांति अविचल गाँधीजी के साथ रही। जब गाँधीजी ने आमरण अनशन शुरू किया और जब वह जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहे थे तब सरोजिनी नायडू ने ही बड़ी ममता के साथ उनकी सेवा की।

स्वाधीनता की प्राप्ति के बाद कुछ नेताओं को सरकारी तंत्र और प्रशासन में नौकरी दे दी गई थी। उनमें सरोजिनी नायडू भी एक थी। उन्हें उत्तर प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त कर दिया गया। वह विस्तार और जनसंख्या की दृष्टि से देश का सबसे बड़ा प्रांत था। उस पद को स्वीकार करते हुए उन्होंने कहा, 'मैं अपने को कैद कर दिए गए जंगल के पक्षी की तरह अनुभव कर रही हूँ।' लेकिन वह प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु की इच्छा को टाल न सकी जिनके प्रति उनके मन में गहन प्रेम व स्नेह था। इसलिए वह लखनऊ में जाकर बस गई और वहाँ सौजन्य और गौरवपूर्ण व्यवहार के द्वारा अपने राजनीतिक कर्त्तव्यों को निभाया। 30 जनवरी 1948 को गाँधीजी की हत्या के बाद देश भर में उदासी छा गई। शोकातुर प्रधानमंत्री ने गाँधी जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि, 'हमारे बीच से एक रोशनी बुझ गई है।' सरोजिनी नायडू ने कहा, 'यही उनके लिए एक महान् मृत्यु थी.... व्यक्तिगत दुःख मनाने का समय अब बीत चुका है। अब समय आ गया है कि हमें सीना तान के यह कहना है : महात्मा गाँधी का विरोध करने वालों की चुनौती हम स्वीकार करेंगे।'

मृत्यु एक शाश्वत सत्य है और इसे भला कौन रोक पाया है। स्वयं सरोजिनी नायडू ने अपनी एक कविता में मृत्यु को कुछ देर के लिए ठहर जाने को कहा था, 'मेरे जीवन की क्षुधा, नहीं मिटेगी जब तक मत आना हे मृत्यु, कभी तुम मुझ तक।' काश! ऐसा हो पाता। इस महान देशभक्त को देश ने बहुत सम्मान दिया। 2 मार्च 1949 को राज्यपाल के पद पर रहते हुए उनका निधन हो गया। 13 फरवरी 1964 को भारत सरकार ने उनकी जयंती के अवसर पर उनके सम्मान में 15 नए पैसे का डाक टिकट भी चलाया। सरोजिनी नायडू को विशेषतः भारत कोकिला, राष्ट्रीय नेता और नारी मुक्ति आंदोलन की समर्थक के रूप में सदैव याद किया जाता रहेगा।

स्वतंत्र लेखक व शिक्षक
गाँधी चौक, आतमणावास, बागरा, जालोर
(राज.)-343025
मो: 8107177196

राजकीय विद्यालयों को ब्रेल साहित्य भेंट

❐ शिवशंकर चौधरी

04 जनवरी को हर साल विश्व ब्रेल दिवस मनाया जाता है। दुनिया भर में दृष्टिबाधितों केलिए यह दिन बहुत खास है, क्योंकि इन दिन इस लिपि के जनक महान व्यक्तित्व के धनी श्री लुईस ब्रेल का जन्मदिन आता है। ब्रेल लिपि एक ऐसी स्पर्शीय भाषा है जिसका उपयोग दृष्टिबाधित लिखने, पढ़ने के लिए करते हैं। जो जन्मजात या अन्य किसी कारणवश अपनी आँखों की दृष्टि क्षमता खो देते हैं उनके लिए समाज एवं वातावरण में अन्य लोगों के बराबर खड़े होने, उन्हें पढ़ाई से वंचित ना होना पड़े और वह अपने शारीरिक क्षति के बावजूद अपने आप में आत्मविश्वास जागृत कर आत्म निर्भर बन सकें इसके लिए ब्रेल लिपि का आविष्कार करके लुईस ब्रेल दुनियाभर के दृष्टिबाधितों के मसीहा बन गए।

इसी दिवस को अविस्मरणीय बनाने के लिए दृष्टिबाधित बालक-बालिकाओं के मसीहा लुईस ब्रेल की 214वीं जयन्ती के उपलक्ष में मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी समग्र शिक्षा बीकानेर में कार्यरत अमित साध संदर्भ व्यक्ति (विशेष शिक्षक) द्वारा राजकीय नेत्रहीन विद्यालय बीकानेर को सौ से ज्यादा ब्रेल लिपि आधारित साहित्य पुस्तकें भेंट की गई। यह पुस्तकें अमेरिका के विसकॉन्सिन स्थित मिलवौकी पब्लिक स्कूल के शिक्षक जूली हॉपमेन एवं नैंसी केराल स्टरलिंग द्वारा अमित साध के प्रोत्साहन पर लगभग दो लाख रुपये से अधिक राशि की पुस्तकें विशेष रूप से दृष्टिबाधित बालक-बालिकाओं हेतु पुस्तकालय के लिए भेजी गई। यह पुस्तकें विभिन्न तरह के ज्ञानवर्धक कहानियाँ एवं अन्य साहित्यिक क्षेत्र से हैं इससे दृष्टिबाधित विद्यार्थी भी अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति से रूबरू होंगे। श्री गजानन्द सेवग ने बताया कि इस तरह के प्रोत्साहन दृष्टिबाधित बालक-बालिकाओं में आत्मविश्वास पैदा करते हैं, श्री शिव शंकर चौधरी कार्यक्रम अधिकारी ने बताया कि अमित साध इससे पूर्व भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दृष्टिबाधित बालक-बालिकाओं के लिए निरंतर कार्य करते रहते हैं जैसे इंगलैंड में यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लंदन द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में प्रस्तुति, जर्मनी स्थित जर्मन पब्लिकेशन स्प्रींगर में दृष्टिबाधित के क्षेत्र में आलेख, अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में प्रस्तुति, जर्मनी स्थित जर्मन पब्लिकेशन स्प्रींगर में दृष्टिबाधित के क्षेत्र में आलेख, अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस एडवांस इन इंर्फोमेंशन कम्यूनिकेशन टेक्नॉलोजी एंड कम्प्यूटिंग में पत्र वाचन, एडिनबर्ग विश्वविद्यालय स्कॉटलैंड में प्रोफेसर जॉन रेवेन्सक्रॉफ्ट द्वारा संपादित द रूटलेज एंड बुक फॉर विजुअल इंपेयरमेंट में सहयोग आदि कार्य कर चुके हैं। एपीसी कृष्ण मोहन शर्मा ने लुईस ब्रेल के जीवन पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम अधिकारी
समसा कार्यालय, बीकानेर
मो: 9414425861

Rajasthan Education Department

रपट

जम्बूरी

18वीं राष्ट्रीय जम्बूरी

❒ राजेन्द्र कुमार शर्मा

सम्पूर्ण समाज के लिए पूर्ण समर्पण के साथ समर्पित उम्रदराज संगठन का नाम है 'स्काउट गाइड'। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता की कहावत को ध्यान में रखते हुए 'स्काउट गाइड' में जम्बूरी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है जिसका अर्थ 'आपस में मिलजुल कर चर्चा करना और सीखना है। यह संगठन धैर्यपूर्वक अपनी विरासत के रूप में प्राप्त सभ्यता, समाज और संस्कृति से जोड़ने का मंच है। भारत में स्काउट गाइड के इतिहास में प्रथम जम्बूरी का आयोजन नई दिल्ली में किया गया। दूसरी जम्बूरी की मेजबानी राजस्थान के जयपुर जिले ने 26 दिसम्बर 1956 से 1 जनवरी 1957 तक की। इस जम्बूरी में 10300 (8300+2000) स्काउट गाइड ने भाग लिया।

67 वर्ष के लम्बे अंतराल के पश्चात 18वीं राष्ट्रीय स्काउट गाइड जम्बूरी की मेजबानी का अवसर एक बार पुनः राजस्थान को मिला। जिसकी भव्य तैयारी 220 हैक्टेयर क्षेत्र में 3500 टैंट लगाकर 37000 युवाओं की भागीदारी के माध्यम से निम्बली ब्राह्मणान रोहट जिला पाली में की गयी। 18वीं राष्ट्रीय जम्बूरी की थीम रखी गई 'शांति के साथ प्रगति'। जम्बूरी का उद्घाटन 4 जनवरी बुधवार को महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने स्काउट गाइड के ध्वजारोहण के साथ किया। समारोह में राज्यपाल कलराज मिश्र एवं मुख्यमंत्री अशोक गहलोत उपस्थित रहे।

राष्ट्रपति महोदया ने बैंडवादन के मध्य जम्बूरी परेड का अवलोकन किया। स्काउट गाइड के विभिन्न दलों ने मार्च पास्ट में भाग लिया तथा जम्बूरी गीत गाया। गीत संगीत और सामूहिक नृत्य के रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ-साथ आसमान भारतीय वायुसेना के विमानों से आच्छादित हो गया। इस अवसर पर विमानों द्वारा 'सूर्य किरण' कार्यक्रम में 22 मिनट तक आकाश में हैरत अंगेज कलाबाजियों का प्रदर्शन किया गया।

राष्ट्रपति महोदया ने भारत सहित विभिन्न देशों से आए 37 हजार से अधिक स्काउट एवं गाइड का स्वागत करते हुए कहा कि युवाओं के इस सम्मेलन में नायाब जोश एवं ऊर्जा का समागम है। उन्होंने कहा कि स्काउट तन-मन से इंसानियत एवं समाज सेवा का काम करते हैं। यह गर्व की बात है कि पूरे देश में सबसे अधिक संख्या में स्काउट साहस एवं वीरता के प्रतीक राजस्थान की भूमि से है।

राष्ट्रपति ने कहा कि भारत स्काउट्स एवं गाइड्स संगठन द्वारा लगभग 115 वर्षों से युवाओं को प्रशिक्षित करने का कार्य किया जा रहा है। आजादी से पहले भी महात्मा गाँधी सहित अन्य कई लोग इस संगठन के प्रशंसक रहे। उन्होंने कहा कि देश का सबसे बड़ा यह संगठन में 63 लाख से अधिक स्काउट एवं गाइड हैं, यह संख्या और अधिक बढ़ाई जा सकती है। कठिन अनुशासन एवं आत्म समर्पण के साथ समाज की सेवा करने के लिए संगठन बधाई का पात्र है।

राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु ने कहा कि स्काउट एवं गाइड अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं बल्कि समाज के हित के लिए कार्य करते हैं। नस्लवाद के विरुद्ध आंदोलन करने वाले मार्टिन लूथर किंग जूनियर, तकनीक में क्रांति लाने वाले बिल गेट्स सहित पूरे विश्व भर में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, उन्होंने अपने जीवन में स्काउट के रूप में भी कार्य किया है। उन्होंने कहा कि यह संगठन सार्वभौमिक मूल्यों तथा लोकाचार की भावना को युवाओं में परिपक्व करता है, जो उनकी जीवनपर्यन्त सहायता करती हैं।

राष्ट्रपति ने कहा कि कोविड-19 महामारी के दौरान भारत स्काउट्स एण्ड गाइड्स ने समाज की सेवा करने में अनुकरणीय साहस का परिचय दिया है। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों के तत्काल सुधारात्मक उपाय करने होंगे। अक्षय ऊर्जा को अपनाकर, कार्बन फुटप्रिंट को कम करके और सतत प्रयासों से स्काउट और गाइड अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

भारत स्काउट्स एण्ड गाइड्स के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल कुमार जैन, शिक्षामंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, कृषि मंत्री श्री लालचंद कटारिया, शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती जाहिदा खान, राजस्थान पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र राठौड़, मुख्य राष्ट्रीय आयुक्त श्री के.के. खण्डेलवाल सहित राष्ट्रीय व राज्य संगठन के पदाधिकारी सहित 37 हजार से अधिक स्काउट व गाइड उपस्थित रहे।

उदघाटन कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने जम्बूरी स्मारिका, विशेष आवरण तथा जम्बूरी पत्रिका का भी विमोचन किया। 18वीं जम्बूरी में 52 स्काउट प्रदेशों की संस्कृति, 27 भाषाएँ, 110 खान-पान, 80 पहनावे और विभिन्न संस्कृतियों का मिश्रण देखने को मिला। विदेशी लोगों की सहभागिता में मालदीप 106, मलेशिया से 10, घाना से 114, सऊदी अरब से 14, नेपाल से 40, बांग्लादेश से 69, श्रीलंका से 48 एवं केन्या आदि देशों से लगभग 400 स्काउट गाइड भी यहाँ पहुँचे। शाम को 'राजस्थान नाइट' के दौरान नृत्यांगना गुलाबो सपेरा ने कालबेलिया नृत्य की प्रस्तुति दी।

दूसरा दिवस 5 जनवरी 'एडवेंचर डे' – दूसरा दिवस 5 जनवरी 'एडवेंचर डे' के नाम रहा। सुबह ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम की शुरूआत हुई। स्काउट गाइड को स्काउट संस्थापक ब्रेंडन पॉवेल की ओर से प्रतिपादित 6 तरह के व्यायाम कराए गए। इस दिन बैंड वादन प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। जिसमें 25 से अधिक बैंड दलों के स्काउट व गाइड ने भाग लिया। प्रथम बैंड प्रदर्शन उत्तर पश्चिमी रेलवे द्वारा किया गया। प्रतियोगिता के दौरान बैंड दल ने जनरल सेल्यूट, स्लो मार्चिंग, राष्ट्रगान धुन, देशभक्ति की धुन को बड़े ही सुर और ताल में प्रस्तुत किया। स्काउट के अधिकारियों ने अलग-अलग कैम्पों में पहुँचकर निरीक्षण किया। देशभर से आए छात्र-छात्राओं ने अपनी ऊर्जा और साहस से सभी को आश्चर्यचकित किया। विभिन्न दलों के रूप में स्काउट गाइड ने रिवर रॉफ्टिंग और दीवार पर सीधी चढ़ाई जैसे कारनामे दिखाए। कई छात्र-छात्राओं ने व्यक्तिगत स्पर्धा में भी साहसिक गतिविधियों में भी हिस्सा लिया।

'नाइट हाइक' गतिविधियों का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत स्काउट गाइड के विभिन्न दल गठित कर उन्हें आसपास के गाँवों में भेजा जाता है। जिससे वे ग्रामीण परिवेश से रूबरू होते हैं साथ ही आमजन में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता आदि के प्रति जागरूकता का संदेश देते हैं। विभिन्न स्काउट टीमों के बीच में बच्चों के द्वारा अपने घर को किस प्रकार सजाया जाता है। इसका प्रदर्शन किया गया।

Rajasthan Education Department

शाम को सांस्कृतिक संध्या के दौरान राजस्थान नाइट में स्काउट गाइड ने प्रदेश के अलग-अलग क्षेत्रों में प्रचलित लोक नृत्यों की प्रस्तुति दी। राजस्थान के प्रसिद्ध लोक कलाकारों ने भी अपनी प्रस्तुति दी। साथ ही गुजरात नाइट सांस्कृतिक संध्या का आयोजन भी किया गया।

तीसरे दिवस 6 जनवरी– शुक्रवार को 500 संभागी शहर भ्रमण के लिए अपनी परंपरागत वेशभूषा पहनकर जब पाली की सड़कों पर गए तो ऐसा लगा जैसे संपूर्ण भारतवर्ष यहीं पर उमड़ पड़ा है। तीसरे दिवस का मुख्य आकर्षण सैन्य कैम्प रहा जहाँ लड़ाकू टैंक की खूबियाँ बताकर देश की ताकत का प्रदर्शन किया। सेना के जवानों ने साहसिक करतब दिखाए। पैराग्लाइडिंग और हथियारों का प्रशिक्षण दिया। सेना की तरफ से 'अपनी सेना को जानो' प्रदर्शनी लगाई गई। जिसमें एआरओ, स्मॉल आर्म इक्विपमेंट, एल 70 जेडीयू एंटी एयरक्राफ्ट सिस्टम, स्ट्रेला 10 एम, एचएमवी, 1300 एमएम, सोल्टम 15.5 एमएम, सीएमटी, एएटी, बीएमपी सेकंड केज टी 90 टैंक और आर्मी टैंट का प्रदर्शन किया। स्काउट ने इन विभिन्न सैन्य साजो सामान का बारीकी से अवलोकन किया और सेना के अधिकारियों ने इन उपकरणों की मारक क्षमता के बारे में जानकारी प्रदान की। बीकानेर से आए स्काउट गाइड ने 2 दिन में एक बड़ा गेट तैयार किया जिसका नाम 'राजस्थान गेट' रखा गया।

7 जनवरी चौथे दिवस 'कला संस्कृति दिवस'– इस दिन व्यायाम का प्रदर्शन किया गया। जिसमें स्काउट व गाइड ने चुस्ती-फुर्ती का प्रदर्शन किया। इस दिन कला व संस्कृति का अनूठा संगम था। विभिन्न देशों की झांकियों का प्रदर्शन किया गया। 38 प्रदेशों की लगभग 350 से अधिक झाँकियां सजाई गई। झाँकी प्रदर्शन से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो कि राजपथ पर दिखने वाला नजारा आँखों के सामने जीवंत हो उठा हो। बैंड बाजे और लोक वाद्यों की धुनों के साथ जैसे-जैसे एक-एक प्रान्त की झाँकी मंच के सामने से गुजरी तो लोगों ने करतल ध्वनि से हौंसला अफजाई की। इन झांकियों में स्काउट व गाइडों ने अपने-अपने राज्य के गौरवशाली इतिहास, संस्कृति, लोक नृत्य तथा विरासतों का अद्भुत समन्वय किया। प्रत्येक दल ने अपने राज्य के गौरवशाली इतिहास, संस्कृति एवं पर्यावरणीय विरासतों का प्रदर्शन किया। राजस्थान के अलग-अलग जिलों से पहुँचे स्काउट दलों ने राजस्थानी थीम पर सजी विभिन्न प्रकार की झांकियों का प्रदर्शन किया। जिनमें कोटा का विश्व प्रसिद्ध दशहरा मेला, रणथम्भौर टाइगर प्रोजेक्ट, केला देवी मेला करौली, डिग्गी कल्याण मंदिर टोंक, जयपुर की तीज सवारी, वीर तेजा जी की झांकी, बाबा रामदेव की झाँकी आदि सम्मिलित थे। अन्य राज्यों की झाँकियों में झारखंड का आदिवासी नृत्य, बिहार की छठ पूजन, उड़ीसा, नागालैंड, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर की झाँकियां आकर्षण का केन्द्र रही। फूड प्लाजा के अंतर्गत लगाई गई प्रदर्शनी में देश के कोने-कोने से प्रचलित व्यंजनों की महक जम्बूरी स्थल पर फैल गई।

8 जनवरी रविवार पाँचवा दिवस 'स्टेट डे'– पाँचवे दिवस 'स्टेट डे' के रूप में रखा गया। इस दिन की थीम थी स्टेट डे राजस्थान डे, दिल्ली डे, कर्नाटक डे, महाराष्ट्र डे, उत्तर प्रदेश डे, मध्य प्रदेश डे, बिहार डे सहित अन्य राज्यों का दिन मनाया गया। इस दिन स्काउट व गाइड ने अपने-अपने राज्यों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। जम्बूरी स्थल पर राजस्थान सरकार के विगत 4 वर्षों के दौरान विभिन्न विभागों की विकास कार्यों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। जिनका विजिटर्स एवं जम्बूरी के प्रतिभागियों ने अवलोकन किया।

शाम को सांस्कृतिक संध्या के दौरान स्काउट व गाइउ द्वारा अपनी-अपनी लोक संस्कृति से जुड़े हुए लोक नृत्यों की प्रस्तुति दी गई। जिससे ऐसा लग रहा था कि मानो संपूर्ण भारत देश की संस्कृति यहाँ पर उमड़ पड़ी है जो यह प्रदर्शित करती है कि हम सब एक हैं अर्थात विविधता में एकता की झलक प्रदर्शित हो रही थी। राजस्थान, झारखंड, बिहार, उड़ीसा, नागालैंड, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर के स्काउट गाइड द्वारा दी गई सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ आकर्षण का केन्द्र रही इन सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने प्रदेश के गौरवशाली इतिहास, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन किया।

9 जनवरी छठवें दिवस– इस दिन फैशन शो का आयोजन किया गया। 18वीं राष्ट्रीय जम्बूरी का प्रदेश के शिक्षा मंत्री माननीय डॉ. बी.डी. कल्ला, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री टीकाराम जूली, भारत स्काउट गाइड अध्यक्ष अनिल कुमार जैन तथा नेशनल कमिश्नर के.के. खण्डेलवाल मुख्य अतिथि रहे। अंतिम दिन भारत के विभिन्न राज्यों और सार्क देशों से आए दलों ने परेड और बैंड वादन का प्रदर्शन किया। अतिथियों ने परेड की सलामी ली। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री माननीय बी.डी. कल्ला ने कहा कि 'स्काउट गाइड परोपकार का पर्याय है। जम्बूरी में सीखी अनुशासन और स्वालंबन की बातों को जीवन में आत्मसात करते हुए परोपकार के आदर्श स्थापित करें।' राजस्थान दिवस के दौरान राजस्थानी वेशभूषा में घुंघरूओं की झंकार लिए सुरीले राजस्थानी गीतों पर अनूठी लोक संस्कृति की परंपरा जीवंत हो उठी। लोक कलाकार पदम श्री अनवर खान में जब 'राम सा पीर और धरती धोरा री' राजस्थानी गीत गाया तो लोग थिरकने को मजबूर हो गए जब हजारों लोगों से भरे हुए स्टेडियम में 'सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा' देशभक्ति गीत एक साथ गाया गया तो लोग देश प्रेम की भावना से अभिभूत हो उठे। समापन समारोह के दौरान जैसे ही राजस्थान स्काउट गाइड का दल मंच के सामने पहुँचा तो दर्शकों ने तालियाँ बजाकर 'जय जय राजस्थान' के उद्घोष के साथ दल का उत्साहवर्धन किया। समापन समारोह के बाद जम्बूरी स्थल पर स्काउट गाइड की ओर से जम्बूरी के ध्वज को सलामी दी गई और उसके बाद विधिवत तरीके से जम्बूरी ध्वज को नीचे उतार कर समेट कर रखा गया।

10 जनवरी सातवां और अंतिम दिवस– मंगलवार अंतिम दिन पुरस्कार वितरण हुआ जिसमें राजस्थान का वर्चस्व रहा। राजस्थान ने 3 अवॉर्ड प्राप्त किए। सर्वश्रेष्ठ स्काउट के लिए नेशनल कमिश्नर शील्ड फॉर स्काउटिंग और सर्वश्रेष्ठ गाइड के लिए नेशनल कमिश्नर शील्ड फॉर गाइड दोनों ही पुरस्कार राजस्थान को प्राप्त हुए। राजस्थान में बड़ा दिल दिखाते हुए अपने जीते हुए दो अवॉर्ड अतिथि सम्मान का परिचय देते हुए उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड को दे दिए। आयोजन में स्टेट चीफ कमिश्नर निरंजन आर्य ने जम्बूरी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। पुरस्कार वितरण के बाद मुख्य ध्वज को सलामी देकर उतारा गया। 'सर्व धर्म प्रार्थना' के साथ देश विदेश से आए हुए स्काउट गाइड ने जम्बूरी में सीखे सेवा और समर्पण के उच्च आदर्शों को आत्मसात करने के संदेश तथा एक-दूसरे से संपर्क में रहते हुए राजस्थान जम्बूरी की स्मृतियों को अपनी स्मृति में जीवंत रखने के संकल्प के साथ 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना को लेकर विदा हुए। 18वीं राष्ट्रीय जम्बूरी को राजस्थान वासियों ने यादगार बना दिया जो अरसे तक लोगों की यादों में रहेगी।

सयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा
पाली मण्डल, पाली (राज.)

Rajshri Education Department

विज्ञान दिवस

❒ अनामिका चौधरी

चन्द्रशेखर वेंकटरमन 1930 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित भारत के ही नहीं बल्कि एशिया के पहले वैज्ञानिक थे जिनका जन्म 7 नवम्बर 1888 को दक्षिण भारत के त्रिचनापल्ली में हुआ था। उनके पिता का नाम चंद्रशेखर अय्यर एवं माता का नाम पार्वती था। शिक्षा ग्रहण के उपरांत कोलकाता विश्वविद्यालय में भौतिकी के प्रोफेसर बनने की चाह में कोलकाता में उच्च राजकीय उपमहालेख अधिकारी के पद को छोड़कर आधी तनख्वाह पर इसलिए कार्य किया कि विज्ञान में अत्यंत रुचि थी। 28 फरवरी 1928 में कोलकाता में रमन इफेक्ट के रूप में एक उत्कृष्ट वैज्ञानिक खोज की थी।

राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा 1986 में भारत सरकार को 28 फरवरी को विज्ञान दिवस के रूप में नामित करने के लिए कहा। इसके बाद भारत सरकार ने 1987 में इस दिवस को विज्ञान दिवस के रूप में स्वीकार किया और पहली बार राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी 1987 को मनाया गया। सी.वी. रमन को 1954 में भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया। 1921 में पहली बार एक अध्ययन यात्रा पर उन्हें विदेश जाने का अवसर मिला, पानी के जहाज से यात्रा करते समय सागर के नीले-नीले जल ने उनका ध्यान आकर्षित किया। लॉर्ड रैलै ने इसकी व्याख्या वायु कणों से प्रकाश विकीर्णन के आधार पर की थी। किंतु सागर जल का नीला रंग, उन्होंने आकाश का जल में प्रतिबिंब मान लिया था।

रमन को यह व्याख्या स्वीकार्य नहीं थी वापसी यात्रा के समय नलकुंडा नामक जलयान पर यात्रा के दौरान ग्लेशियर जल से प्रकीर्णन के कुछ प्रयोग स्पेक्ट्रोमापी द्वारा किए। स्पेक्ट्रोमापी अभिकल्पित कर केवल लग्न, परिश्रम और एक निष्ठ अनुसंधान के बल पर उन्होंने महत्त्वपूर्ण खोज की। 7 वर्ष के अथक परिश्रम और सैकड़ों द्रवों एवं ठोसों से प्रकाश प्रकीर्णन का अध्ययन करने के बाद आखिर 28 फरवरी 1928 को उन्होंने रमन प्रभाव की घोषणा की।

उन्होंने बताया कि जब प्रकाश की एक तरंग एक द्रव्य से निकलती है तो इस प्रकार तरंग का कुछ भाग ऐसी दिशा में प्रकीर्णन हो जाता है जो कि आने वाली प्रकाश तरंग की दिशा से भिन्न है। समुद्र का जल और आसमान का नीला रंग भी इसी वजह से होता है। फोटोन की ऊर्जा या प्रकाश की प्रकृति में होने वाले अतिसूक्ष्म परिवर्तनों के माध्यम से आंतरिक अणु संरचना का पता लगाया जा सकता है। जब कोई एकवर्णी पदार्थ द्रवों और ठोसों से होकर गुजरता है तो उसमें आपतित प्रकाश के साथ अत्यल्प तीव्रता का कुछ अन्य वर्णों का प्रकाश भी देखने में मिलता है, यही है रमन प्रभाव।

बच्चों में बढ़े विज्ञान में रुचि- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र नरेंद्र मोदी ने भी कहा- इन दिनों हमारे देश के बच्चों में युवाओं में साइंस और टेक्नोलॉजी के प्रति रुचि लगातार बढ़ रही है। अंतरिक्ष में रिकॉर्ड सेटेलाइट का प्रक्षेपण, नए नए रिकॉर्ड, नए नए मिशन हर भारतीय को गर्व से भर देते हैं। बच्चों एवं युवाओं के उत्साह को बढ़ाने एवं उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ाने के लिए श्रीहरिकोटा से हुए रॉकेट लॉन्चिंग को 10000 लोगों ने विजिटर गैलरी में बैठकर देखा।

आपको ध्यान होगा इसरो ने युविका प्रोग्राम शुरू किया जो युवाओं को विज्ञान से जोड़ेगा। युविका 2019 युवा विज्ञानी कार्यक्रम स्कूली विद्यार्थियों के लिए लाँच किया गया है। इस वर्ष 2022-23 का राज्य स्तरीय विज्ञान मेला दो वर्ष बाद ऑफलाइन मोड में दिनांक 22 नवंबर 2022 से 25 नवंबर 2022 तक देशनोक बीकानेर में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। कोविड-19 की विपरीत परिस्थितियों के बावजूद आरएससीईआरटी उदयपुर, एनसीईआरटी नई दिल्ली एवं राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में 2020-21 और 2021-22 में भी वर्चुअल रूप से राज्य स्तरीय विज्ञान मेले का आयोजन क्रमशः जयपुर एवं पाली में किया गया था। इस वर्ष 2022-23 के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि संभागीय आयुक्त श्रीमान नीरज के. पवन ने भी विज्ञान के प्रति प्रेरणादायी उद्बोधन देकर विज्ञान विषय के प्रति रुचि रखने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया। वही कार्यक्रम के समापन सत्र में माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बीडी कल्ला ने कहा कि विज्ञान ने दुनिया को ग्लोबल विलेज बना दिया है। विज्ञान का उपयोग विकास में करने का आह्वान किया। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस प्रत्येक वर्ष किसी विशेष थीम पर आयोजित किया जाता है, जैसे वर्ष 2016 में मेक इन इंडिया साइंस एंड टेक्नोलॉजी ड्राइवन इनोवेशन, 2017 में साइंस एंड टेक्नोलॉजी फॉर द स्पेशली एबल्ड पर्सन, 2018 में साइंस एंड टेक्नोलॉजी फॉर ए सस्टेनेबल फ्यूचर व वर्ष 2020 में साइंस फॉर द पीपल एंड द पीपल फॉर साइंस और साथियों 2021 में विज्ञान दिवस की थीम है। फ्यूचर ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी, इन्फॉर्मेशन इंपैक्ट ऑन एजुकेशन स्किल एंड वर्क यानी विज्ञान तकनीकी और प्रौद्योगिकी का शिक्षा पर प्रभाव कौशल और कार्य, 2022 में थीम सतत भविष्य के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी में एकीकृत दृष्टिकोण, 2023 में थीम सतत विकास के लिए बुनियादी विज्ञान संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ हैं।

हमारे विद्यालयों में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस को मनाने का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को विज्ञान के प्रति आकर्षित करना विज्ञान के क्षेत्र में नए प्रयोगों के लिए प्रेरित करना विज्ञान एवं तकनीकी उपलब्धियों के बारे में जागरूक करना तथा विज्ञान में रुचि पैदा करना। इसके अलावा दैनिक जीवन में वैज्ञानिक अनुप्रयोग के महत्त्व के संदेशों को लोगों के बीच फैलाना, मानव कल्याण के लिए विज्ञान के क्षेत्र की सभी गतिविधियों, प्रयासों और उपलब्धियों को प्रदर्शित करना तथा विज्ञान के विकास के लिए इन मुद्दों पर चर्चा करके नई प्रौद्योगिकी को लागू करना। इसके साथ ही समाज में फैले अंधविश्वास और चमत्कारों के बारे में भी विद्यार्थियों को जागरूक किया जा सकता है। विज्ञान एवं तकनीकी को प्रेषित करने के साथ ही देश के नागरिकों को इस क्षेत्र में मौका देकर नई ऊँचाइयों को हासिल करना इस के आयोजन का

Rajshri Education Department

मुख्य उद्देश्य है।

साथियों यदि हम 28 फरवरी के दिवस को यादगार उत्साहवर्धक व विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक बनाना चाहते हैं तो हमें विद्यालयों में विज्ञान दिवस की पूर्व तैयारी करनी होगी। आपको अपना अतिरिक्त समय भी देना होगा, क्योंकि आप को यह तय करना है कि आप उस दिन या उससे 1 दिन पूर्व क्या कार्यक्रम कर सकते हैं। कितना समय किस प्रतियोगिता में दे सकते हैं, कितने विद्यार्थियों की सहभागिता हो सकती है, किन व्यक्तियों को उस दिन बुलाना है। प्रतियोगिताओं का परिणाम कब देना है, पुरस्कार की क्या व्यवस्था करवा सकते हैं, पुरस्कार के लिए भामाशाह को बुलवाकर विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को दिखाकर विद्यार्थियों को उत्साहित किया जा सकता है।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के दिन हम इनमें से कुछ कार्यक्रम करवा सकते हैं जैसे–

1. विज्ञान मॉडल चार्ट प्रदर्शनी– हम विद्यार्थियों को पहले से ही कुछ विषय देकर चार्ट मॉडल बनाने के लिए कह सकते हैं और उस दिन एक समय विशेष पर हम उनकी प्रदर्शनी लगा सकते हैं। इसके विषय ऊर्जा, पर्यावरण प्रदूषण, स्वच्छता, स्वास्थ्य आदि हो सकते हैं।

2. क्विज प्रतियोगिता– आप कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों की आप कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों के लिए क्विज प्रतियोगिता रख सकते हैं। यह क्विज दो चरणों में कराई जाती है। इसमें पहले एक लिखित परीक्षा का आयोजन करना होगा। जिसमें बहु चयनात्मक प्रकार के लगभग 30 प्रश्न दिए जा सकते हैं जो कि कक्षा 6 से 8 के विभिन्न विषयों मुख्यतः विज्ञान, गणित व सामान्य ज्ञान पर आधारित हो सकते हैं।

इस लिखित परीक्षा के मूल्यांकन के आधार पर आप 8 या 12 विद्यार्थियों का चयन कर सकते हैं। इन 8 या 12 विद्यार्थियों को 4–4 के समूह में बांटा जाता है। इसकी मेरिट इस प्रकार बनाई जाती है कि एक ग्रुप में लिखित परीक्षा की मेरिट में रहे क्रमांक 1, 6, 7, 12 दूसरे समूह में 2, 5, 8, 11 व तीसरे समूह में 3, 4, 9, 10 ।

अब द्वितीय चरण में इन 12 विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति होगी। इसमें आप अपने साथियों का सहयोग ले जैसे आपको टाइम कीपर नियुक्त करना होगा। बोर्ड पर स्कोरर की भूमिका के लिए किसी वरिष्ठ विद्यार्थी की सहायता ले सकते हैं।

द्वितीय चरण में आप तीन राउंड करवा सकते हैं। पहला राउंड जिसे दीर्घ चक्र कहते हैं। इसमें प्रत्येक विद्यार्थी से विभिन्न विषयों जैसे गणित, विज्ञान, स्वास्थ्य, चिकित्सा, कृषि, अंतरिक्ष आदि पर कुल 4 प्रश्न पूछे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 20 सेकंड में देने के लिए कहें तथा सही उत्तर देने पर उन्हें 10 अंक व गलत देने पर जीरो अंक दिए जाए। इस प्रकार 4 प्रश्नों को पूछने के बाद उनका योग किया जावे।

दूसरा राउंड– दृश्य श्रव्य चक्र उभयनिष्ठ होता है। इस में पूछे जाने वाले विभिन्न प्रश्न किसी एक विद्यार्थी के लिए नहीं होते बल्कि सभी के लिए होते हैं। इसमें आप एक निर्णायक नियुक्त कर दें। जब आप कोई प्रश्न पूछे तो सबसे पहले जो विद्यार्थी हाथ खड़ा करें उसे उत्तर देने के लिए कहे। यदि वह सही उत्तर देता है तो उसे 10 अंक दिए जाएँ और गलत उत्तर देने पर ऋणात्मक पांच अंक दिए जाए। इस प्रकार कुल 4 प्रश्न पूछ कर उनके योग से विद्यार्थी का योग प्राप्त किया जाए।

तीसरा और अंतिम राउंड त्वरित चक्र होता है। जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी से 1 मिनट में 10 प्रश्न पूछे जाएँ। प्रश्न छोटे स्पष्ट व इस प्रकार के हों, जिनका सटीक व एक ही उत्तर हो। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का यानि कुल योग 60 अंक का हो सही उत्तर देने पर 5 अंक तथा गलत देने पर 0 अंक दिया जाए:

इस प्रकार तीनों और राउंडों के योग करके प्रत्येक समूह में प्रथम विद्यार्थी का चयन फाइनल राउंड के लिए किया जाए। कुल मिलाकर यदि आपने 12 विद्यार्थी चयन किए थे तो फाइनल राउंड के लिए 3 विद्यार्थी अब आपके सामने ही रह जाएँगे। इन तीनों विद्यार्थियों का पुनः उपर्युक्त विधि से फाइनल राउंड किया जाए और उनके प्राप्त अंकों के आधार पर प्रथम, द्वितीय व तृतीय की घोषणा की जाए।

3. भाषण प्रतियोगिता– विज्ञान एवं तकनीकी के प्रति जागरूकता के लिए विद्यार्थी अपना प्रस्तुतीकरण मंच पर कर सके इसके लिए भाषण प्रतियोगिता किसी विषय विशेष पर करवा सकते हैं। इसके लिए 5 मिनट का समय उपयुक्त रहता है।

4. वाद विवाद– इसमें विद्यार्थी अपना तर्क पक्ष व विपक्ष में रख सकते हैं। विद्यार्थियों की टीम बनाकर पक्ष व विपक्ष में पाँच 5 मिनट में अपना प्रस्तुतीकरण किया जा सकता है

5. निबंध प्रतियोगिता कुछ विद्यार्थी मंच पर बोल नहीं पाते अपना प्रस्तुतीकरण देने में संकोच करते हैं ऐसे विद्यार्थियों के लिए निबंध प्रतियोगिता रखी जा सकती है, जिसमें लिखने में कौशल प्राप्त विद्यार्थी अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकते है।

6. पोस्टर– इसमें रचनात्मकता के आधार पर विद्यार्थियों से किसी नवीन विषय पर एक निश्चित समय जैसे 2 घंटे का समय देकर पोस्टर निर्माण करवाया जा सकता है।

7. चमत्कारों की वैज्ञानिक व्याख्या– समाज में फैले अंधविश्वास और कुरीतियों को दूर करने के उद्देश्य से विद्यार्थियों को कुछ ऐसे प्रयोग बताए जा सकते हैं, जिन्हें वह चमत्कार समझते हैं। इन चमत्कारों की वैज्ञानिक व्याख्या की जा सकती है। जैसे नारियल में भूत हल्दी को सिंदूर में बदलना, गजब का रुमाल, खोलते तेल में हाथ देना आदि।

8. वैज्ञानिक मूवी या डॉक्यूमेंट्री– रोचकता उत्पन्न करने की दृष्टि से दृश्य रूप से आकर्षक मूवी या डॉक्यूमेंट्री वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने का सशक्त साधन है। जैसे तारामंडल कैंसर, वार अर्गेस्ट कोविड– 19, ग्लोबल वार्मिंग या अन्य बीमारियों से संबंधित डॉक्यूमेंट्री दिखाई जा सकती है। विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए कुछ विषय निम्न हो सकते हैं। विज्ञान की उपयोगिता, विज्ञान वरदान या अभिशाप सर सी वी रमन, एपीजे अब्दुल कलाम, भारतीय वैज्ञानिक, पर्यावरण प्रदूषण, जल संरक्षण, कोविड– 19, भारतीय अंतरिक्ष यात्री, भारत में अंतरिक्ष की उपलब्धियां जल संरक्षण, रोगों से सुरक्षा, ग्लोबल वार्मिंग, समाज में फैले अंधविश्वास है। यदि आप अपने दिल में यह ठान लेंगे कि हमें राष्ट्रीय विज्ञान दिवस को उत्कृष्ट बनाना है तो साथियों आज से ही इस पर विचार शुरू कर दें तो निश्चित रूप से आप अपने मकसद में सफल होंगे।

असिस्टेंट प्रोफेसर
आरएससीईआरटी उदयपुर

आदेश-परिपत्र : फरवरी, 2023

1. **विभाग में कार्यरत पैराटीचर्स एवं ग्राम पंचायत सहायक को Rajasthan Contractual Hiring to Civil Posts Rules, 2022 के अन्तर्गत लाए जाने हेतु कार्मिक (क-2) विभाग द्वारा जारी अधिसूचना दिनांक : 11.01.2022 से जारी नियमों के अन्तर्गत कार्यवाही के संबंध में।**
2. **राज-काज पोर्टल पर सभी विभागों में ई-फाइल मॉड्यूल लागू कर राजकार्य में पारदर्शिता, जवाबदेही एवं त्वरित कार्य निस्तारण सुनिश्चित करने के संबंध में।**
3. **नवीन निर्धारित 'स्टार रैंकिंग तथा जिला, ब्लॉक एवं विद्यालय स्तर की समग्र शैक्षिक रैंकिंग के अनुसार कार्यवाही करने बाबत।**

1. विभाग में कार्यरत पैराटीचर्स एवं ग्राम पंचायत सहायक को Rajasthan Contractual Hiring to Civil Posts Rules, 2022 के अन्तर्गत लाए जाने हेतु कार्मिक (क-2) विभाग द्वारा जारी अधिसूचना दिनांक : 11.01.2022 से जारी नियमों के अन्तर्गत कार्यवाही के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/प्रा/शि-संस्था/एफ-6/संविदा एडाप्ट/2022 दिनांकः 06.01.2023 ● जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) प्रारम्भिक शिक्षा विभाग समस्त ● विषयः विभाग में कार्यरत पैराटीचर्स एवं ग्राम पंचायत सहायक को Rajasthan Contractual Hiring to Civil Posts Rules, 2022 के अन्तर्गत लाए जाने हेतु कार्मिक (क-2) विभाग द्वारा जारी अधिसूचना दिनांक : 11.01.2022 से जारी नियमों के अन्तर्गत कार्यवाही के संबंध में। ●प्रसंग : कार्यालय अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्कूल शिक्षा, भाषा एवं पुस्तकालय विभाग, पंचायती राज (प्राशि) विभाग के पत्र दिनांक 21.10.2022 एवं इस कार्यालय का समसंख्यक पत्र दिनांक 16.11.2022 एवं दिनांक 05.12.2022 ।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रसंगान्तर्गत पत्रों के द्वारा विभाग के नियंत्रणाधीन पैराटीचर्स एवं ग्राम पंचायत सहायकों को Rajasthan Contractual Hiring to Civil Post Rules, 2022 नियमों के अन्तर्गत एडॉप्ट करने के संबंध में निर्देश जारी कर दिनांक 08.12.2022 तक नियुक्ति आदेश जारी करने एवं विभिन्न कारणों से अपात्र रहे संविदा कार्मिकों के शिथिलन के प्रस्ताव भिजवाने हेतु निर्देशित किया गया था।

कतिपय जिला शिक्षा अधिकारियों द्वारा नियुक्ति आदेश जारी करने की तिथि (08.12.2022) के पश्चात संबंधित पैराटीचर/ग्राम पंचायत सहायक के द्वारा आयु सीमा में शिथिलन हेतु जाति प्रमाण पत्र/ई.डब्ल्यू.एस. प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर उनको Rajasthan Contractual Hiring to Civil Posts Rules, 2022 के अन्तर्गत लाए जाने के संबंध में मार्गदर्शन चाहा जा रहा है।

अतः इस संबंध में कार्मिक (क-2) विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर के परिपत्र दिनांक 17.10.2022 में प्रदत्त निर्देशानुसार ''यदि किन्हीं कारणों से अभ्यर्थी द्वारा आवेदन की अंतिम तिथि तक जारी प्रमाण-पत्र प्रस्तुत नहीं किया जाता है तथा अंतिम तिथि के पश्चात जारी किया हुआ प्रमाण पत्र प्रस्तुत किया जाता है तो ऐसे अभ्यर्थी से इस आशय का एक शपथ-पत्र लिया जावे कि वह आवेदन की अंतिम तिथि को संबंधित वर्ग की पात्रता रखता था तथा यह सूचना गलत पाए जाने पर उसकी नियुक्ति निरस्त की जा सकेगी।'' उक्त के संबंध में निर्देशित किया जाता है कि आपके जिले के ऐसे पैराटीचर/ग्राम पंचायत सहायक जिनको आप द्वारा जाति प्रमाण पत्र/ई.डब्ल्यू.एस. प्रमाण पत्र नियुक्ति दिनांक 08.12.2022 तक प्रस्तुत नहीं करने के आधार पर पात्र नहीं मानते हुए शिथिलन की श्रेणी में रखा गया था, ऐसे समस्त पैराटीचर/ग्राम पंचायत सहायक जिनके जाति प्रमाण पत्र/ई.डब्ल्यू.एस. प्रमाण पत्र आदिनांक तक आपके कार्यालय को प्राप्त हुए हैं एवं इस आधार पर वे आयु संबंधी अर्हताएँ पूर्ण करते है। ऐसे अभ्यर्थियों द्वारा प्रस्तुत प्रमाण पत्र का पूर्ण परीक्षण कर एवं कार्मिक (क-2) विभाग के परिपत्र दिनांक 17.10.2022 में वर्णित शपथ पत्र लेकर अन्यथा पात्र होने की स्थिति में Rajasthan Contractual Hiring to Civil Post Rules, 2022 नियमों के अन्तर्गत एडॉप्ट करने की कार्यवाही नियमानुसार तत्काल संपादित कर संख्यात्म सूचना मय सूची इस कार्यालय को भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।

● संलग्न : उपर्युक्तानुसार

● **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.,** प्रारंभिक शिक्षा पं. राज (प्रा.शि.) विभाग राजस्थान, बीकानेर

2. राज-काज पोर्टल पर सभी विभागों में ई-फाइल मॉड्यूल लागू कर राजकार्य में पारदर्शिता, जवाबदेही एवं त्वरित कार्य निस्तारण सुनिश्चित करने के संबंध में।

● प्रशासनिक सुधार एवं समन्वय विभाग, राजस्थान सरकार ● क्रमांक : प. 25(9)प्रसु/सम/अनु-1/2019 जयपुर दिनांक 27.12.2022 ● विषयः राज-काज पोर्टल पर सभी विभागों में ई-फाइल मॉड्यूल लागू कर राजकार्य में पारदर्शिता, जवाबदेही एवं त्वरित कार्य निस्तारण सुनिश्चित करने के संबंध में।

राज्य में सुशासन की स्थापना हेतु राज-काज पोर्टल पर सभी विभागों में ई-फाइल मॉड्यूल लागू कर राजकार्य में पारदर्शिता, जवाबदेही एवं त्वरित कार्य निस्तारण सुनिश्चित करने का निर्णय लिया गया है। ई-फाइल मॉड्यूल के उपयोग से न केवल पत्रावलियों की Real Time Tracking की जा सकेगी, साथ ही अधिकारी/कार्मिक के राजकीय यात्रा पर होने पर भी राजकार्य का समयबद्ध संपादन सुनिश्चित/संभव हो सकेगा।

ई-फाइल मॉड्यूल लागू करने हेतु कार्मिक विभाग द्वारा समस्त विभागों के अधिकारियों/कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

राज्य में ई-फाइल सिस्टम सभी विभागों एवं आयुक्तालयों/

निदेशालयों में मिशन मोड पर लागू किया जाना है। अतः सभी विभागों में ई-फाइल मॉड्यूल लागू करने करने हेतु निम्नलिखित दिशा-निर्देशों की पालना सुनिश्चित की जाए।

1. शासन सचिवालय के सभी विभागों में 1 जनवरी 2023 से अनिवार्य रूप से पत्रावली प्रक्रिया इलेक्ट्रॉनिक मोड में (e-File in Raj-Kaj) संपन्न की जाएगी।
2. जाँच संबंधी मामलों की पत्रावलियों, न्यायालय/वादकरण संबंधी पत्रावलियों एवं अति-गोपनीय/गोपनीय पत्रावलियों/प्रकरणों को ई-फाइल सिस्टम से अलग रखा जा सकेगा।
3. सभी नवीन पत्रावलियाँ इलेक्ट्रॉनिक मोड में खोली जाएगी। यदि भौतिक पत्रावली खोली जानी आवश्यक हो तो अति. मुख्य सचिव/प्रमुख शासन सचिव/शासन सचिव की पूर्व सहमति के बिना नहीं खोली जाएगी।
4. पुरानी पत्रावलियाँ ई-फाइल (Raj-Kaj Application) पर प्राथमिकता से लायी जाएगी।
5. सभी विभाग अपने अधीनस्थ आयुक्तालयों/निदेशालयों/विभागाध्यक्षों एवं उनके अधीनस्थ कार्यालयों में ई-फाइल सिस्टम दिनांक 30 जनवरी 2023 तक लागू किया जाना सुनिश्चित करेंगे।
6. इस संबंध में उपयोगकर्ता हेतु प्रशिक्षण सामग्री राजकाज पोर्टल पर उपलब्ध है।

समस्त शासन सचिव/प्रमुख शासन सचिव/अतिरिक्त मुख्य सचिव को निर्देशित किया जाता है कि अपने विभागों में ई-फाइल मॉड्यूल को लागू किया जाना सुनिश्चित करें।

● **(उषा शर्मा)** मुख्य सचिव

3. नवीन निर्धारित 'स्टार रैकिंग तथा जिला, ब्लॉक एवं विद्यालय स्तर की समग्र शैक्षिक रैकिंग के अनुसार कार्यवाही करने बाबत।

●कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/म.गां.अनु./जिला रैकिंग/61079/2022-23/121 दिनांक 18.10.2022 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा। ● विषयः नवीन निर्धारित 'स्टार रैकिंग तथा जिला, ब्लॉक एवं विद्यालय स्तर की समग्र शैक्षिक रैकिंग के अनुसार कार्यवाही करने बाबत। ● प्रसंग : शासन के परिपत्र क्रमांक-प.4 (16) शिक्षा-1/2014 पार्ट-।। जयपुर, दिनांक 14.10.2022 के क्रम में।

उपर्युक्त विषय एवं प्रसंगान्तर्गत लेख है कि राज्य के राजकीय विद्यालयों के परीक्षा परिणाम के आधार पर कक्षावार एवं समेकित विद्यालय 'स्टार रैकिंग' तथा 'जिला ब्लॉक एवं विद्यालय स्तर की समग्र शैक्षिक रैकिंग' के पैरामीटर्स के लिए समय-समय पर दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। पूर्व में जारी किए गए परिपत्रों/दिशा-निर्देशों के अतिक्रमण में प्रासंगिक परिपत्र द्वारा विद्यालयों के परीक्षा परिणाम के आधार पर कक्षावार एवं समेकित 'स्टार रैकिंग' तथा जिला ब्लॉक एवं विद्यालय स्तर की समग्र शैक्षिक रैकिंग' पैरामीटर्स निर्धारित किए गए है। अतः नवीन निर्धारित पैरामीटर्स के अनुसार आवश्यक कार्यवाही संपादित करना सुनिश्चित करें। इसे सर्वोच्च प्राथमिक प्रदान करें।

● संलग्न : उपर्युक्तानुसार

● **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.,** निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

● परिपत्र ● स्कूल शिक्षा, भाषा, पुस्तकालय एवं पंचायती राज (प्रारम्भिक शिक्षा) एवं संस्कृत शिक्षा विभाग ● क्रमांक : प. 4(16) शिक्षा-1/2014 पार्ट-।। जयपुर दिनांक : 14.10.2022 ●परिपत्र।

राज्य के राजकीय विद्यालयों के परीक्षा परिणाम के आधार पर कक्षावार एवं समेकित विद्यालय 'स्टार रैकिंग' तथा 'जिला, ब्लॉक एवं विद्यालय स्तर की समग्र शैक्षिक रैकिंग' के पैरामीटर्स के लिए समय-समय पर दिशा-निर्देश जारी किए गए है। पूर्व में जारी किए गए परिपत्रों/दिशा-निर्देशों के अतिक्रमण में विद्यालयों के परीक्षा परिणाम के आधार पर कक्षावार एवं समेकित विद्यालय 'स्टार रैकिंग' तथा 'जिला, ब्लॉक एवं विद्यालय स्तर की समग्र शैक्षिक रैकिंग' पैरामीटर्स निम्नानुसार निर्धारित किए जाते है-

1. **'स्टार रैकिंग (1 to 5 Star):-**

i. विद्यालय की स्टार रैकिंग (कक्षावार रैकिंग):-

A. कक्षा 5 के लिए :-

Star rating	Academic Achievement (In Grade)	विशेष विवरण
5 Star School	$A^+ > 30\%$ $A > 40\%$	कक्षा 5 वीं के परीक्षा परिणाम में A^+ एवं A Grade प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 30% एवं 40% से अधिक हो।
4 Star School	$A^+ > 20\%$ $A > 30\%$	कक्षा 5 वीं के परीक्षा परिणाम में A^+ एवं A Grade प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 20% एवं 30% से अधिक हो।
3 Star School	$(A^+ + A) \geq 50\%$	कक्षा 5 वीं के परीक्षा परिणाम में A^+ एवं A Grade प्राप्त करने वाले कुल विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 50% या 50% से अधिक हो।
2 Star School	$(A^+ + A) > 30\%$ $<50\%$	कक्षा 5 वीं के परीक्षा परिणाम में A^+ एवं A Grade प्राप्त करने वाले कुल विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 30% से अधिक एवं 50% से कम हो।
1 Star School	$(A^+ + A + B) > 50\%$	कक्षा 5 वीं के परीक्षा परिणाम में A^+A एवं B Grade प्राप्त करने वाले कुल विद्यार्थियों की संख्या 50% से अधिक हो।

नोटः- A^+ Grade (91%-100%), A Grade (76%-90%), B Grade (61%-75%)

B. कक्षा 8 के लिए

Star rating	Pass Percentage	Academic Achievement (In Grade)	विशेष विवरण
5 Star School	> 90%	$A^+ > 30\%$ $A > 40\%$	कक्षा 8 वीं के परीक्षा परिणाम में A^+ एवं A Grade प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या क्रमश :

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

			30% एवं 40% से अधिक हो।
4 Star School	> 90%	A^+>20% A > 30%	कक्षा 8 वीं के परीक्षा परिणाम में A^+ एवं A Grade प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या क्रमश : 20% एवं 30% से अधिक हो।
3 Star School	60% to 90%	(A^+ +A) ≥ 50%	कक्षा 8 वीं के परीक्षा परिणाम में A^+ एवं A Grade प्राप्त करने वाले कुल विद्यार्थियों की संख्या 50% या 50% से अधिक हो।
2 Star School	60% to 90%	(A^+ +A) > 30% <50%	कक्षा 8 वीं के परीक्षा परिणाम में A^+ एवं A Grade प्राप्त करने वाले कुल विद्यार्थियों की संख्या 30% से अधिक एवं 50% से कम हो।
1 Star School	<60%	(A^++A+B) > 50%	कक्षा 8 वीं के परीक्षा परिणाम में A^+ A एवं B Grade प्राप्त करने वाले कुल विद्यार्थियों की संख्या 50% से अधिक हो।

नोटः- A^+ Grade (91%-100%), A Grade (76%-90%), B Grade (61%-75%)

C. कक्षा 10 एवं 12 के लिए

Star rating	Pass Percentage (No change)	First Division (Updated)	विशेष विवरण
5 Star School	> 90%	>40%	कक्षा के परीक्षा परिणाम 90% से अधिक तथा प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या 40% से अधिक हो।
4 Star School	> 90%	=<40% = > 30%	कक्षा के बोर्ड परीक्षा का परिणाम 90% से अधिक तथा प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या 40% से कम लेकिन 30% से अधिक हो।
3 Star School	60% to 90%	>30%	कक्षा के बोर्ड परीक्षा का परिणाम 60% से 90% तक तथा प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या 30% से अधिक हो।
2 Star School	60% to 90%	=<30% =>20%	कक्षा के बोर्ड परीक्षा का परिणाम 60% से 90% तक तथा प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या 30% से कम लेकिन 20% से अधिक हो।
1 Star School	>50%	>20%	कक्षा के बोर्ड परीक्षा का परिणाम 50% से अधिक हो एवं प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या 20% से अधिक हो।

ii. समेकित विद्यालयवार स्टार रैंकिंगः-

A. प्राथमिक विद्यालय के लिएः-

स्टार रैंकिंग = (कक्षा 5 वीं स्टार रैंकिंग)×1

B. उच्च प्राथमिक विद्यालय के लिए :-

स्टार रैंकिंग = {(कक्षा 5 वीं की स्टार रैंकिंग)×0.4+ (कक्षा 8वीं की स्टार रैंकिंग)×0.6}

C. उच्च माध्यमिक विद्यालय के लिए :-

(i) कक्षा 1 से 12 तक संचालित विद्यालय के लिए :-

स्टार रैंकिंग ={ (कक्षा 5वीं की स्टार रैंकिंग) X 0.1 + (कक्षा 8वीं की स्टार रैंकिंग) X 0.2 + (कक्षा 10 वीं की स्टार रैंकिंग) X 0.4+ (कक्षा 12वीं की स्टार रैंकिंग) X 0.3}

(ii) कक्षा 6 से 12 तक संचालित विद्यालय के लिए :-

स्टार रैंकिंग ={ (कक्षा 8वीं की स्टार रैंकिंग) X 0.2 + (कक्षा 10वीं की स्टार रैंकिंग) X 0.4 + (कक्षा 12वीं की स्टार रैंकिंग) X 0.4 }

(iii) कक्षा 9 से 12 तक संचालित विद्यालय के लिए :-

स्टार रैंकिंग ={ (कक्षा 10वीं की स्टार रैंकिंग) X 0.6 + (कक्षा 12वीं की स्टार रैंकिंग) X 0.4 }

नोट :- स्टार रैंकिंग गुणांक का मान दशमलव में होने पर, दशमलव मान 0.5 से कम रहने पर निम्नतम रैंकिंग एवं 0.5 या 0.5 से अधिक होने पर उच्चतम रैंकिंग रखा जावें।

2. **''जिला, ब्लॉक एवं विद्यालय स्तर की समग्र शैक्षिक रैंकिंग''**

पैरामीटर्स :-

क्र.सं.	श्रेणी	पैरामीटर्स	स्तर	अंक भार
1.	शैक्षणिक	प्रतिमाह शिक्षकों द्वारा 'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम (RKSMBK)' एप पर सिक्के के अर्जित करने के आधार पर विद्यालय की संख्या (>=90% विद्यालय जहाँ सभी शिक्षकों ने 400* से अधिक सिक्के अर्जित किए है =15 अंक तथा >=80% विद्यालय जहाँ सभी शिक्षकों ने 400* अधिक सिक्के अर्जित किए है = 10 अंक) नोट :-* 400 एक प्रॉक्सी नम्बर है, वास्तविक नम्बर डेवलपमेन्ट के समय साझा किया जाएगा।	जिला/ ब्लॉक	15
		प्रतिमाह 'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम (RKSMBK) एप पर सिक्के अर्जित करने वाले शिक्षकों, की संख्या (>=90% शिक्षकों द्वारा 400* से अधिक सिक्के अर्जित करने पर=15 अंक तथा >=80% शिक्षकों द्वारा 400* से अधिक सिक्के अर्जित करने पर =10 अंक)	विद्यालय	

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

		नोट :-* 400 एक प्रॉक्सी नम्बर है, वास्तविक नम्बर डेवलपमेन्ट के समय साझा किया जाएगा।		
2.		Number of student selected in Inspired Award /STSE/NTSE/ Indira priyadarshani/Gargi/Science exhibition/Cultural & Art Festival/ NMMS in the last Session (>=50% of total schools 10 marks. >=60% of total schools 15 marks)	जिला/ ब्लॉक	15
	Number of students selected in Inspired Award/STSE/NTSE/Indira Priyadarshani/ Gargi/Science exhibition/Cultural & Art Festival/NMMS in the last Session (>=10 of total students 10 marks, >=15 of total students 15 marks)		विद्यालय	
3.	% of Students login on Rajiv Gandhi career guidance portal For class 9 to 12 (>=60% of total students 05 marks, >=75% of total students 10 marks)		जिला/ ब्लॉक	10
	% of students login on Rajiv Gandhi career guidance portal For class 9 to 12 (>=60% of total students 05 marks, >75% of total students 10 marks)		विद्यालय	
4.	वर्तमान माह में कुल नामांकन के संदर्भ में विद्यार्थियों की औसत उपस्थिति का प्रतिशत (>=85% of total students 03 marks, >95% of total students 05 marks)		जिला/ ब्लॉक	05
	वर्तमान माह में कुल नामांकन के संदर्भ में विद्यार्थियों की औसत उपस्थिति का प्रतिशत (>=85% of total students 03 marks, >95% of total students 05 marks)		विद्यालय	
5.	वर्तमान माह में विद्यार्थियों को पुस्तकालय की पुस्तकों का वितरण करने वाले विद्यालयों का प्रतिशत (>=10% of total enrolled students)		जिला/ ब्लॉक	05
	क्या विद्यालय के द्वारा विद्यार्थियों को पुस्तकालय की पुस्तकों का वितरण किया गया है? (>=10% of total enrolled students)		विद्यालय	
6.	बोर्ड परीक्षाओं में 4 या 5 स्टार रैंटिंग प्राप्त करने वाले विद्यालयों का प्रतिशत (>=50% of total schools 20 marks, >=60% of total schools 30 marks)		जिला/ ब्लॉक	30
	क्या विद्यालय के द्वारा बोर्ड परीक्षा में 4 या 5 स्टार रैंटिंग प्राप्त की गई है? (Yes=30 & No = 0)		विद्यालय	
7.	विद्यालयों का प्रतिशत जिनके विद्यार्थियों का राष्ट्रीय/राज्य स्तर की किसी भी प्रकार की खेल गतिविधियों में चयन हुआ हैं। (>=20% of total schools 15 marks, >=30% of total schools 20 marks)		जिला/ ब्लॉक	20
	क्या विद्यालय के किसी विद्यार्थी का राष्ट्रीय/राज्य स्तर की किसी भी खेल गतिविधि में चयन हुआ है? (>=3 of total students 15 marks, >=5 of total students 20 marks)		विद्यालय	
	कुल अंकभार (क्र.सं. 01 से 07 तक)			**100**
8.	कुल नामांकन में प्रतिशत वृद्धि (प्रति प्रतिशत वृद्धि पर 1 अंक देय होगा, 2 प्रतिशत वृद्धि पर 2 अंक तथा इसी प्रकार 10 प्रतिशत या इससे अधिक प्रतिशत वृद्धि पर 10 अंक देय होंगे)		जिला/ ब्लॉक/ विद्यालय	10
9.	नामांकन			
	जिले में उजियारी पंचायतों का प्रतिशत		जिला/ ब्लॉक	05
	क्या विद्यालय उजियारी ग्राम पंचायत के अन्तर्गत आता है? (हाँ/नहीं)		विद्यालय	
10.	विद्यार्थियों का प्रतिशत जिनका जनाधार प्रमाणीकरण हो गया हैं। (>=85% of total students 03 marks, >=95% of total students 05 marks)		जिला/ ब्लॉक विद्यालय	05
	कुल अंकभार (क्र. सं. 08 से 10 तक)			20
	सामुदायिक सहभागिता			
11.	ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से प्राप्त राशि पर आधारित अंक = Alloted Marks x $\frac{\log(\text{Value of Dist./Block/School}) - \log(\text{Minimum Value})}{\log(\text{Maximum Value}) - \log(\text{Minimum Value})}$		जिला/ ब्लॉक / विद्यालय	10
12.	पी.टी.एम. में अभिभावकों की उपस्थिति (>=50% of total member 03 marks, >=60% of total members 05 marks)		जिला/ ब्लॉक	05
	पी.टी.एम. में अभिभावकों की उपस्थिति (>=50% of total member 03 marks, >=60% of total members 05 marks)		विद्यालय	
13	सामुदायिक सहभागिता विभागीय नियमानुसार एसएमसी/ एसडीएमसी बैठक आयोजित करने वाले विद्यालयों का प्रतिशत (प्रति विद्यालय आयोजित बैठक की औसत संख्या= वर्तमान सत्र में एसएमसी/एसडीएमसी की आयोजित बैठक की कुल संख्या÷ विद्यालयों की कुल संख्या)		जिला/ ब्लॉक	05
	क्या विभागीय नियमानुसार विद्यालय के द्वारा एसएमसी/एसडीएमसी बैठक का आयोजन किया गया? (if Yes>=50% of total members 03 marks. >=60% of total member 05 members 05 marks If No = 0 Marks)		विद्यालय	
	कुल अंकभार (क्र.सं. 11 से 13 तक)			**20**
14.	आधारभूत सुविधाएँ			
	आई.सी.टी. लैब/स्मार्ट कक्षा-कक्ष युक्त विद्यालयों का प्रतिशत (>=60% of total schools 03 marks. >=75% of total school 05 Marks)		जिला/ ब्लॉक	05

Rajasthan Education Portal
सत्यमेव जयते

	क्या विद्यालय में आई.सी.टी. लैब/स्मार्ट कक्षा -कक्ष उपलब्ध है एवं उपयोग किया जाता है? (if Yes 05 marks, If No 0 marks)	विद्यालय	05
15.	क्या विद्यालय में खेल मैदान विकसित है तथा उपयोग में लिया जा रहा है? (>60% of total school 03 marks (>=75% of total schools 05 marks.	जिला/ ब्लॉक	05
	क्या विद्यालय में खेल मैदान विकसित है तथा उपयोग में लिया जा रहा है? (if Yes 05 marks, If No 0 marks)	विद्यालय	

	कुल अंकभार (क्र.सं. 14 से 15 तक)		**10**
	अंक भार का महायोग (क्र.सं. 01 से 15 तक)		**150**

आगामी माह से उक्त पैरामीटर्स के अनुसार ही सभी स्तरों की रैंकिंग का निर्धारण किया जावें। परीक्षा परिणाम के आधार पर विद्यालय की कक्षावार एवं संमेकित विद्यालय 'स्टार रैंकिंग' को शाला दर्पण पोर्टल पर तथा विद्यालय में भी प्रमुख दृश्य स्थान पर प्रदर्शित किया जाएगा।

• **(पवन कुमार गोयल)** अतिरिक्त मुख्य सचिव

माह : फरवरी, 2023

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 12.35 से 12.55 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री
01.02.23	बुधवार	कोटा(जयपुर)	7	सामाजिक विज्ञान	3	दिल्ली के सुल्तान	नवीन गहलोत
02.02.23	गुरुवार	उदयपुर	11	इतिहास	5	यायावर साम्राज्य	अकील अली बोहरा
03.02.23	शुक्रवार	बीकानेर	5	पर्यावरण अध्ययन	23	हमारी विरासत	नवनीत कुमार गुलाटी
04.02.23	शनिवार	जयपुर No Bag Day	गैर पाठ्यक्रम				
06.02.23	सोमवार	जयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	5	न्यायपालिका	सीमा अरोड़ा
07.02.23	मंगलवार	जयपुर	10	विज्ञान	परीक्षामाला		सुरभि जैन
08.02.23	बुधवार	कोटा(जयपुर)	7	अंग्रेजी	3	Gopal and the hilsa fish	पंकज सेन
09.02.23	गुरुवार	उदयपुर	5	हिन्दी	परीक्षामाला		डॉ. नीना यादव
10.02.23	शुक्रवार	बीकानेर	11	भूगोल	4	महासागरों और महाद्वीपों का वितरण	संतोष कुमार अटवाल
11.02.23	शनिवार	जयपुर No Bag Day	गैर पाठ्यक्रम				
13.02.23	सोमवार	जयपुर	11	राजनीति विज्ञान	8	धर्म निरपेक्षता	जंसी मीणा
14.02.23	मंगलवार	जोधपुर	12	अर्थशास्त्र	परीक्षामाला		मंजू वर्मा
15.02.23	बुधवार	कोटा(जयपुर)	10	अंग्रेजी	परीक्षामाला		दीपक वर्मा
16.02.23	गुरुवार	उदयपुर	12	रसायन विज्ञान	परीक्षामाला		गीता सिंह
17.02.23	शुक्रवार	बीकानेर	5	गणित	परीक्षामाला		राजीव गौतम
23.02.23	गुरुवार	जयपुर	10	गणित	परीक्षामाला		सोहन लाल गुप्ता
24.02.23	शुक्रवार	बीकानेर	12	भूगोल	परीक्षामाला		श्रवण लाल विश्नोई
25.02.23	शनिवार	जयपुर No Bag Day		गैर पाठ्यक्रम			
27.02.23	सोमवार	कोटा(जयपुर)	12	हिन्दी अनिवार्य	परीक्षामाला		प्रिती त्रिवेदी
28.02.23	मंगलवार	जोधपुर	8	हिन्दी	परीक्षामाला		अलका शर्मा

● कार्यदिवस-23 ● कुल प्रसारण दिवस-20 ● अवकाश-05● पाठ्यक्रम आधारित-07 ● परीक्षामाला-10 ● गैर पाठ्यक्रम आधारित-03

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उदयपुर

प्रभाग–4, शैक्षणिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान, अजमेर

February-2023

Monthly telecast schedules for 12 TV channels (One Class, One Platform) of PM eVidya

S.No.	Class	Link for Monthly schedule	QR Code	S.No.	Class	Link for Monthly schedule	QR Code
1.	Class I	https://bit.ly/3R9UiL8		7	Class VII	https://bit.ly/409M0XA	
2	Class II	https://bit.ly/3kO03SI		8	Class VIII	https://bit.ly/3HCAvB5	
3	Class III	https://bit.ly/3RaNNHT		9	Class IX	https://bit.ly/3HAPSts	
4	Class IV	https://bit.ly/3j39MUR		10	Class X	https://bit.ly/3Y4ksBa	
5	Class V	https://bit.ly/3RiBBVO		11	Class XI	https://bit.ly/4092teY	
6	Class VI	https://bit.ly/3HbDbE3		12	Class XII	https://bit.ly/3HKWea5	

Rajasthan Education Department

शिविरा पञ्चाङ्ग

फरवरी-2023

रवि		5	12	19	26
सोम		6	13	20	27
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	
गुरु	2	9	16	23	
शुक्र	3	10	17	24	
शनि	4	11	18	25	

फरवरी 2023 ● कार्य दिवस–23, रविवार–04, अवकाश–01, उत्सव–03 ● 07 फरवरी : सेफर इन्टरनेट डे (Safer Internet Day) का आयोजन (RSERT)। **10 फरवरी** : कृमि मुक्ति दिवस–समस्त विद्यार्थियों को डिवर्मिंग दवा (एल्बेंडाजॉल) खिलाएं। **11 फरवरी** : सामुदायिक बाल सभा आयोजन (विद्यालय परिसर में)। **14 फरवरी** : मॉप अप दिवस–राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस (10 फरवरी–2023) को वंचित रहे विद्यार्थियों को डिवर्मिंग दवा (एल्बेंडाजॉल) खिलाएं। **15 फरवरी** : स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती (उत्सव)। **फरवरी के द्वितीय सप्ताह में** : सत्रान्त की संस्थाप्रधान वाक्पीठ (प्रावि/उप्रावि/मावि/उमावि) का आयोजन (13 से 17 फरवरी की अवधि में) (दो दिवस)। **18 फरवरी** : महा शिवरात्रि (अवकाश–उत्सव)। **20 से 22 फरवरी** : तृतीय परख का आयोजन। **25 फरवरी** : सामुदायिक वृहद बाल सभा का आयोजन–सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर, तृतीय परख की प्रगति से अवगत करवाया जाना। **28 फरवरी** : राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (उत्सव)। **फरवरी–2023** : मा.शि.बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य कक्षा 10 से 12 की परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों हेतु 14 दिवस का परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश रहेगा। ● प्रत्येक मंगलवार–IFA नीली गोली (कक्षा 6–12), IFA गुलाबी गोली (कक्षा 1–5) (समग्र शिक्षा) ● प्रत्येक शनिवार–विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन–अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी। सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAY यानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें।

शिक्षक की कलम से....

सफलता की कहानी : शिक्षक की जुबानी

❐ सुनीता

कर्त्तव्यों का बोध कराती, अधिकारों का ज्ञान, शिक्षा से ही मिल सकता हैं, सर्वोपरि सम्मान

शिक्षक सोच बहुत ही उर्धगामी होती हैं, जो अत्तीत को प्रस्तुत करता हैं, वर्तमान को दर्शाता हैं और भविष्य बनाता हैं। ऐसे ही विश्वास के साथ मैंने 26 जुलाई 2005 को सामान्य अध्यापिका के रूप में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रिडमलसर, बीकानेर में कार्य ग्रहण किया। विज्ञान शिक्षिका होने के नाते सदैव यह प्रयास किया कि विद्यार्थी प्रत्येक बात, प्रत्येक घटना में सम्बंधित वैज्ञानिक नवाचारों से परिचित हो सके। हर बात, हर कथन को रटने की बजाय उसको समझ सके। प्रतिदिन काम आने वाले छोटे-छोटे उपकरणों से छोटे-छोटे प्रयोग करके अपनी जिज्ञासाओं को शांत कर सके।

एक शिक्षक की अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम साधन होता हैं उसकी वाणी। अपनी हर बात को वह बोलकर, गतिविधियों द्वारा, प्रयोगों द्वारा वह अपने शिक्षार्थी तक पहुँचाता हैं। 2005 से 2017 तक अपने शिक्षण के दौरान यही कार्य मैंने किया।

मेरे जीवन का अविस्मणीय पल था 3 नवम्बर 2017 जब मुझे राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बधिर बीकानेर में वरिष्ठ अध्यापिका विज्ञान के रूप में पदोन्नति मिली।

मुझे लगा कि मैं एक नई दुनिया में आ गयी हूँ, ऐसी दुनिया जहाँ निगाहे बोलती हैं, मुस्कुराहटें दिलों को छू जाती हैं, जिनकी शांत दुनिया ने मेरे मन मस्तिष्क में एक तूफान ला दिया। लगा जैसे ज़िन्दगी का यह पल यही रुक जाए, निःशब्द थी मैं। मुझे मूक बधिर बच्चों के साथ विज्ञान शिक्षण करना था।

ऐसी दुनिया जहाँ न मैं उनकी बात समझ सकूं, न उनको अपनी बात समझा सकूं। क्या करूं कैसे करूं कुछ समझ नहीं आ रहा था, विज्ञान जैसा रोचक विषय मुझे उनको पढ़ाना था जिनको मैं अपनी सामान्य वार्तालाप को भी नहीं समझा पा रही थी। लगभग दो दिन प्रतिदिन कक्षा-कक्ष में जाती बच्चो के बीच बैठती तो आँखों से आँसू निकल पड़ते, समझ ही नहीं आ रहा था कि कहाँ से शुरआत करूँ?

तीसरे दिन विद्यालय समय से पूर्व पहुँची तो देखा बच्चे मैदान में क्रिकेट खेल रहे थे। मुझे मौका मिल गया उनसे जुड़ने का मैं उनके बीच गयी और क्रिकेट का बैट उनसे लिया बच्चे हँसने लगे। उन्ही में से एक बच्चा आगे आया और मुझे कुछ इशारों में समझाने की कोशिश की मुझे समझ नहीं आया। फिर उस बच्चे ने सभी बच्चों को इशारों से कुछ समझाया सभी क्रिकेट के मैदान पर अपनी अपनी स्थिति में खड़े हो गए वो पल मेरे लिए बहुत अलग था क्योंकि आज मैं उनके साथ खेल रही थी जिनको समझना भी मेरे लिए संभव नहीं हो पा रहा था। लगातार 15 मिनट तक मैं उनके साथ खेली मेरे और बच्चों दोनों के चेहरे पर अलग ही ख़ुशी थी वे आज मेरे चारो और एक गोल घेरे में थे उनमें से एक बच्चे के हाथ में एक रफ कॉपी थी उसने उस पर लिख कर दिया आपका नाम। मुझे मेरे सवालों का जवाब मिल गया था यदि में लिख कर अपनी बात उन बच्चो तक पहुँचाना चाहूँ तो यह संभव हो सकता था।

तीसरे दिन से सच कहूँ तो मेरा शिक्षण शुरू हुआ जिसमें मैं शिक्षक भी थी और शिक्षार्थी भी। मुझे जो कहना होता मैं लिख कर देती उनको जो कहना होता वो लिख कर देते। मुझे मेरे मोबाइल पर उन्होंने एक एप्प भी इनस्टॉल करवाया जिसमे साईन भाषा में किसी भी शब्द को कैसे अभिव्यक्त करते हैं वो चित्र थे। मुझे लगा जैसे मुझे उड़ने को पंख मिल गए। मैंने पूरी रात उस एप्प से कुछ सामान्य वार्तालाप सीखे।

अब मेरी परीक्षा थी कैसे मैं अपने आपको उनके सामने अभिव्यक्त कर पाती हूँ। प्रारंभ से ही अपने शिक्षण को रुचिकर बनाने के लिए मैंने गतिविधि करवाना, रोचक TLM बनाना, कंप्यूटर से पीपीटी द्वारा पढ़ाने का कार्य करती थी। मेरा वह शौक आज मेरा हथियार था मेरी इस जंग में जो मुझे इस प्यारी सी मूक बधिर बच्चो की दुनिया में आने के लिए जीतनी थी। मैंने अपना पहला विज्ञान शिक्षण पीपीटी के माध्यम से किया। यह उन बच्चों के लिए भी नया और रोचक था उन्होंने भी पूरी तन्मयता से उसको देखा और मेरे प्रश्नों के लिखित उत्तर दिए। अब मेरा यह प्रतिदिन का कार्य हो गया रोचक पीपीटी बनाकर लाना और उससे उनको शिक्षण करवाना। चूँकि मैं पिछले 10 सालों से शिक्षण नवाचारों से जुड़ी थी, विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षणों में प्रशिक्षक के रूप में कार्य किया था तो ऐसे कैंपों के दौरान प्राय: विभिन्न शिक्षकों के नवाचारों से परिचय होता रहता था। विभागीय कार्यक्रमों में जुड़े रहने से मुझे समग्र शिक्षा द्वारा आसानी से विज्ञान किट मिल गयी। मैंने उस किट का प्रयोग करवाते हुए बच्चों से छोटे-छोटे प्रयोग करवाए।

रासायनिक अभिक्रिया हो या कोशिका की सरंचना, चाहे प्रकाश का अपवर्तन हो या वर्ण विक्षेपण सभी छोटे-छोटे प्रयोग मेरे बच्चों ने खुद करके देखे। इन बच्चों के साथ अब इतना जुड़ाव हो गया था कि कोई भी कार्यक्रम होता चाहे वो सांस्कृतिक हो या मतदाता रैली चाहे, चाहे evm मशीन का प्रशिक्षण हो सबमें मैं इन बच्चों के साथ जाती।

इसी बीच राज्य स्तरीय विज्ञान प्रतियोगिता की तिथियाँ घोषित हुई। मुझे अपने बच्चों की प्रतिभा को दुनिया के सामने लाने का मौका मिल गया। मैं उस दिन जब विज्ञान के कालांश में कक्षा कक्ष में गयी तो मेरी पीपीटी में बहुत सारे विज्ञान प्रोजेक्ट के चित्र थे। जैसे ही मेरे बच्चों ने उन चित्रों को देखा उनके हाव भाव ही अलग हो गए। हर बच्चा उत्साहित था प्रोजेक्ट बनाने को। मैंने अपने बच्चों को सामान लाकर दिया और सच कहूँ तो मात्र दो दिन में उन बच्चों ने यू-ट्यूब वीडियो और मेरे मार्गदर्शन में 25 प्रोजेक्ट बनाए। विद्यालयस्तरीय प्रतियोगिता के बाद जिला स्तरीय प्रतियोगिता में हमारे 5 प्रोजेक्ट चयनित हुए राज्य स्तर के लिए।

ऐसे लग रहा था मानो कोई स्वप्न देख रहे हो अब नयी चुनौती थी इन बच्चों को बीकानेर से बाहर ले जाना। प्रधानाचार्य महोदय ने कहा आप संभाल पाओगे? मेरा उत्तर था- माँ बन कर ले जा रही हूँ शिक्षिका बन कर नहीं। अभिभावकों से इजाजत ली और शुरू हुआ हमारा राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का सफर। वहाँ भी सभी का सहयोग मिला और जब मेरे बच्चों ने अपना प्रदर्शन किया तो सबका मन मोह लिया हम राज्य स्तर पर द्वितीय और तृतीय दो मॉडल विजेता थे। उसके बाद तो पलटकर देखा ही नहीं 2017 से आज तक जिला स्तर, राज्य स्तर पर

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

मेरे बच्चे विज्ञान मॉडल प्रतियोगिता में अपना परचम फहराते आए हैं। लगभग 45 जिला स्तरीय, 15 राज्य स्तरीय इनाम मेरे बच्चों ने जीते।

अब सफर राज्य से राष्ट्रीय स्तर का था। राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली इंस्पायर अवार्ड में भी पिछले 3 सालों से मेरे बच्चे जिला स्तरीय विजेता रहे हैं और उन्हें भारत सरकार द्वारा 10000 रुपये का प्रोत्साहन पुरस्कार भी मिला।

विज्ञान में इन बच्चों की रुचि को देखते हुए मैंने अपने विद्यालय के बरामदे में इन बच्चों से विज्ञान के भित्ति चित्र बनवाए वो चित्र इतने सुन्दर थे कि कोई देख कर कह ही नहीं सकता था कि ये किसी चित्रकार ने नहीं विद्यालय के बच्चों ने बनाए हैं।

इन चित्रों को देख कर मन में एक नया सपना जगा विज्ञान कक्ष का। विद्यालय के ही एक कक्ष जिसमें हम अपने विज्ञान के मॉडल रखते थे उसको अब साइंस लैब बनाना था। सोचा विज्ञान के चारों उप विषय रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान, प्राणी विज्ञान सभी को कमरे की एक एक दिवार पर स्थान दिया जाए। शुरू हुआ अब साइंस लैब का कार्य। बहुत ही सुन्दरता से कक्ष की चारों दीवारों को विज्ञान के चारो उपविषय के भित्ति चित्रों से सजाया गया। इतने सालों से बने सभी प्रोजेक्ट्स को करीने से कक्ष में रखा गया। अब वह था हमारे सपनों का विज्ञान कक्ष जो अब साकार रूप ले चुका था।

बच्चो में पढ़ने की आदत विकसित करने हेतु इस कक्ष में ओपन लाइब्रेरी के रूप में दीवारों पर रस्सियों पर विज्ञान और अन्य प्रेरक कहानियों की पुस्तकें भी रखी गयी।

बच्चे जब भी खाली कालांश होता अपने इस विज्ञान कक्ष में आते और पढ़ते। साथ ही साथ एक टेबल पर शतरंज भी रखी जिससे बच्चो में तार्किक चिंतन बढ़े।

जो सपना विज्ञान के नवाचारों से परिचय और बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण लाने का मैंने लिया था वह वह अब साकार हो रहा हैं। न सिर्फ विज्ञान अपितु मेरे बच्चों की कलात्मक और सर्जनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन देने के लिए मैंने दीपावली पर इन बच्चों से कलात्मक दीए बनवाए तो राखी पर सुन्दर राखियाँ। कभी पत्तो से कलात्मक चित्र बनवाए तो कभी व्यावसायिक शिक्षण में दरी बनाना और कुर्सियों की बेंत बुनाई करना।

अपने बच्चों में पर्यावरण के प्रति रुचि जाग्रत करने हेतु मैने 101 पौधे लगाए और उन पौधों की देखभाल का जिम्मा इन्हीं बच्चों को सौंपा। चूँकि यह एक आवासीय विद्यालय हैं तो इन बच्चों हेतु रजाई, गद्दे हेतु भामाशाओं से संपर्क किया और स्वयं भी इन कार्यों में सहयोग किया।

अपने विद्यालय में नामांकन बढ़ाने हेतु घर-घर जाकर संपर्क किया। जब मैंने इस विद्यालय में जॉइन किया था तो यहाँ एक भी बालिका नहीं थी। मैंने घर-घर जाकर इन बालिकाओं को विद्यालय से जोड़ने का प्रयास किया और उनके अभिभावकों को यह विश्वास दिलाया कि विद्यालय में एक माँ के रूप में इन बालिकाओं की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक सुरक्षा की मैं जिम्मेदारी लेती हूँ। मेरे प्रयासों से सबसे पहली बालिका वैदिका शर्मा ने एडमिशन लिया और आज मुझे फक्र है कि मेरी उस बच्ची ने ना सिर्फ शिक्षा अपितु शूटिंग खेल में डेफ ओलिंपियाड में रजत पदक जीतकर भारत का नाम विश्व में रोशन किया।

विभिन्न विभागीय कार्यों जैसे शिक्षक प्रशिक्षण, module लेखन, बच्चों की सर्जनात्मकता विकसित करने हेतु बनी वर्क बुक लेखन, ABL किट में कक्षा 1,2 की सामग्री निर्माण, SIQE सामग्री निर्माण, कॉमिक बुक निर्माण, ब्लाइंड बच्चों के लिए बनी ऑडियो बुक निर्माण में भी मैंने अपना योगदान दिया हैं।

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम में भी मैंने अपने विज्ञान विषय और अन्य ज्वलंत मुद्दों पर वार्ताएँ दी हैं। CCRT द्वारा कठपुतली निर्माण प्रशिक्षण में भी मैंने भाग लिया।

इस विद्यालय में आने के बाद मैने विशेष शिक्षा (H I) में बीएड किया और ऑनलाइन प्रोग्राम द्वारा साइन लैंग्वेज का प्रशिक्षण लिया। कोरोना काल में मैंने विद्यार्थियों के लिए शिक्षण सामग्री बनाई। मैंने सामान्य, मूक बधिर दोनों ही बच्चों के लिए vedio बनाए।

मेरी इस सफलता की यात्रा का पूरा श्रेय मैं अपने माता पिता के आशीर्वाद, अपने परिवार के सहयोग और सबसे ज्यादा अपने मूक बधिर बच्चो को देना चाहूँगी जिनके साथ और जिनके विश्वास से मैं यहाँ तक पहुँच पाई हूँ।

वरिष्ठ अध्यापिका (विज्ञान)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बधिर
बीकानेर (राज.)

कैसे करें जल परख, बचायें जल

❒ डॉ. पी.सी. जैन

आज यहाँ राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय सुंढ़रवास में वाटर हीरो डॉक्टर पी. सी. जैन ने छात्राओं को शुद्ध जल की परख कैसे करें यह 52 छात्राओं के घर से लाए जल का टीडीएस नापकर बताया।

एक छात्रा का जल का टीडीएस 978 मिलीग्राम प्रति लीटर आया जो सबसे अधिक था और वह किसी बोरवेल से लाया गया था। इसी तरह तीन छात्राओं का जल का टीडीएस 60 से 70 के बीच था जो उनके घरों के आरओ सिस्टम से लाया गया था। इस पर डॉक्टर जैन ने बताया कि सबसे उत्तम जल का टीडीएस 250 से 350 तक होना चाहिए। दैनिक जीवन में पानी की बचत और बर्बाढ़ी रोकने हेतु बर्तन साफ करने के लिए ऐसा साबुन प्रयोग में लेना चाहिए जिसमें नींबू और राख हो इस अवसर पर विद्यालय के सभी 25 स्टाफ को ऐसा साबुन वितरित किया गया ताकि वे पानी की बर्बाढ़ी रोक सके।

वेस्ट का बेस्ट उपयोग- पेड़-पौधों गमलों के चारों ओर नारियल के छिलके जो हम फेंक देते हैं उनको इनके चारों और बिछा देवें तो पानी उड़ेगा नहीं और कम पानी देना पड़ेगा जिससे नित्य जल की बचत होगी।

आकाश पानी रोकेंगे पाताल पानी बढ़ाएँगे- बहुत से नारे लगाते हुए एक मॉडल द्वारा वर्षा के जल को किस तरह भू जल स्रोत में डालने का सस्ता सरल तरीका समझाया ताकि वर्षा का जल व्यर्थ नालियों में ना बह जाए। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती किरण पोकरणा ने किया धन्यवाद प्रधानाध्यापिका श्रीमती रेनू शर्मा ने एवं उप प्रधानाध्यापिका रंजना शर्मा ने परिचय दिया। विद्यालय में रूफटॉप रेनवाटर सिस्टम जिससे भु जल स्रोत तुरंत रिचार्ज हो ऐसा लगवाने का भी निश्चय किया गया।

M.B.B.S.
3-अरविन्द नगर, सुंढ़रवास, उदयपुर
(राज.)-313001
मो: 9413062690

Rajasthan Education Department

MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL TOWN, DUNGARPUR, RAJASTHAN

CHALLENGES AND ACHIEVEMENTS

❒ Renuka Sharma

On the glorious occasion of Mahatma Gandhi's 150th birth Mahatma Gandhi's 150th birth golden Jubilee it was respected CM sir's enthusiastic project to open the government English medium schools and was implemented on 14th June 2019.Initiallythese schools were opened at all district headquarters of Rajasthan, and in this way this school was also opened named MGGS, Town, Dungarpur on particularly emphasizing on the same date. Earlier it was known as Government Girls' Senior Secondary School, Town and acquired is present name on the basis of the order of government पं. /04/15/en-1/2019/14-06- 19/विशेष शिविरा / माध्य. / मां.द/ म.गा./अंग्रेजी माध्यम /2019-20/14-06-19.

In accordance with the order from the directorate the first PRAVESHOTSAV program was held from 22nd June to 31st July 2019 and the school started to run from class 1st to 8th in English medium and class 9th to 12th were remained in Hindi medium and thus further more by promoting the senior most English medium class every following year it will be fully English medium school by the session 2023-24 with the faculties of both Science and Arts. The principal and the other staff were selected through the interview particularly on the basis of their efficiencies in fluent English communication. The number of students was decided as 30 in class 1st to 5th, 35 in class 6th to 8th and 60 in class 9th to 12th. The students got selected through lottery system. The enthusiasm and competition was seen during the selections of the students and their parents as the applications were received in a large number. The uniform of the students was same as the students of SVGMS according to the order of respected director sir. The furniture for class 1st to 5th was donated by the parents and the guardians of the students. The school principal made special efforts and with the help of Azim Premji Foundation ran spoken English classes for the staff to make them more efficient in English communication.

The prayer session was also started to converted in English, Particularly emphasizing on oral English speech during the session of 2020. The teaching continued in covid-19 also with the help video conferencing and zoom meetings. When the regular classes started after covid-19 teachings process came back to its conventional methods and other co-curricular activities like GK quiz is also being conducted every Saturday. According to the order of state government the pre-primary classes are also opened from the session 2021-22 resulted positive somehow, almost 140 applications were submitted against 25 seats for every pre-primary classes. After being an English medium school the number of students is increased an expected and the result has also been getting improved as well in 100% since last 3 years. Many girls of the school claimed Gargi and Scooty awards. During the session of 2021-22 Miss Hariti Joshi got nominated for Indira Priyadarshini Award by achieving 98.33% in class 10th CWSN category and moreover 6 students achieved more than 90% in class 10th: and 12th.

In 'co-curricular activities two students Akshita Sharma and Maully Bhatt have won gold medals in Karate and Yoga respectively at state level and 26 more students are selected at the same level in various sports activities. Ms. Ayushi Bhatt of class 10th get selected at National level in Pico satellite Drone Launch And Space Technology Workshop Event 2022, in this event she is going to participate in Chennai during February,2023. Shashwat Rawal of class 10th participated in Science Congress at state level competition. Ms. Priyanshi Kalal of class 10th get nominated for Inspire Award in session 21-22 and Ms. Hansini Raj Aajad was also, selected for inspired award in session 22- 23. The students of school performed well at the district level project called MISSION BULANDI also.

The principal Mrs. Renuka Sharma started many innovations like uniform for staff, digital teaching for English speech during the session of spoken English and many more. Principal also arranged, furniture for the pre-primary classes, wall paintings, ,RO water machine,tin shed for prayer assembly, CCTV cameras, cemented floor, Swings for primary classes Basketball court etc. the local MLA sanctioned 16 New Room from MLA fund. A beautiful statue of Mahatma Gandhi is is donated by Mr Hitesh Manshankar Sompura. After the formation of Mahatma Gandhi School, looking at the trend of students and parents, shortage of rooms is being felt in the school. For which the principal Smt. Renuka Sharma and staff are continuously trying to achieve through various means. Mahatma Gandhi Government School Town Dungarpur, since its inception, is on the path of progress in academic, co-scholastic and physical resources. Techers and the children are gradually able to speak English and enhancing their level.

Prnicipal
MGGS Town, Dungarpur, New Colony, Near Brahma, Kumari, Mandir, Dungarpur (Raj.)
Mob. 7023758793

Rajsthan Education Department

मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर!

राजकीय प्राथमिक विद्यालय केसर सिंह जी का गुड़ा

❒ हीर सिंह राजपूत

पृष्ठभूमि– विद्यालय उदयपुर जिले की अंतिम सीमा पर उदयपुर–रणकपुर रोड पर सायरा ब्लॉक के सिंघाडा ग्राम पंचायत में छोटा सा राजस्व ग्राम केसर सिह जी का गुड़ा में यह विद्यालय स्थित है। इस गाँव की आबादी 65 मकान के आस पास है। वर्तमान सत्र में विद्यालय का नामांकन 47 एवं आँगनबाड़ी का नामांकन 8 है, आँगनबाड़ी विद्यालय के साथ समन्वित है। विद्यालय में ज्यादातर आदिवासी परिवारों के बच्चे अध्ययनरत है। विद्यालय बालिका शिक्षा एवं दिव्यांग बच्चों के लिए हमेशा विशेष सुविधाएँ/ मदद/सहयोग करता रहा है। विद्यालय की स्थापना 1999 में हुई तब से 2020 तक भवन एवं चार दिवारी के अलावा कोई सुविधाएँ नही थी यहाँ तक की विद्युत कनेक्शन भी नहीं, पीने के पानी की भी नहीं जिससे बच्चे पीने के पानी के लिए परिसर से बाहर सार्वजनिक हेंडपम्प पर जाते थे।

संस्थाप्रधान की कलम से .....

विद्यालय में मेरी नियुक्ति मार्च 2015 में हुई एवं जून 2018 से प्रधानाध्यापक का चार्ज मिला तब से जून 2022 तक एकल शिक्षक के तौर पर सेवाएँ दे रहा हूँ। एकल शिक्षक होने पर भी विद्यालय के कार्य और गति में कमी नही होने दी हर काम समय पर पूरा एवं व्यवस्थित करने का प्रयास किया। कोरोना काल 2020 एवं 2021 में जब विद्यालय पूर्ण रूप से बंद था या संचालित नही थे तब मन में ख्याल आया कि विद्यालय बंद है तो क्यों न विद्यालय बदलाव एवं नवाचार के लिए कुछ प्रयास करे।

सर्वप्रथम विद्यालय में बदलाव और क्या जरूरी है उस पर SMC सदस्यों के साथ मिलकर मंथन शुरू किया.... तब माँ शारदे के मन्दिर की कमी, पीने के पानी की कमी, विद्युत कनेक्शन, बच्चों के लिए बेंच, रंग–रोगन, हरी–भरी स्कूल आदि मुख्य समस्या के बारे में विचार आया और इनको पूरा कैसे करें पर विचार करना शुरू किया एवं आर्थिक एव मानवीय सहयोग कैसे लिया जाए।

डॉ. पेंडसे मेडम का एक पुराना वाक्य याद आया .... जब आप निःस्वार्थ भाव एवं

सच्ची लग्न के साथ कोई काम करते हो तो ईश्वर आपके साथ हमेशा रहते हैं और कोई बड़ा काम करने की जगह छोटे–छोटे काम से शुरूआत करेंगे तो आप को अनुभव एवं सफलता जरूर मिलेगी।

तब से विद्यालय के छोटे–छोटे कार्य जो मैं कर सकूँ उनको करना शुरू किया। विद्यालय परिसर में अव्यवस्थित पड़े पत्थरों को एक जगह जमा करना एवं विद्यालय परिसर की साफ–सफाई का काम शुरू किया।

स्कूल के प्रति SMC का एवं अध्यापक का समर्पण एवं लगन को देखकर लोगों का मन बदलने लगा एवं धीरे–धीरे जनसहयोग की शुरूआत होने लगी और विद्यालय के बड़े विकास और बेसिक सुविधाओं से सम्बन्धित कार्य को शुरू करने का काम करने पर विचार किया, सर्वप्रथम विद्यालय विद्युत कनेक्शन एवं रंग रोगन के काम को पूरा करवाया, फिर मन्दिर निर्माण का, फिर पीने के पानी के लिए ट्यूबवेल, बिजली की मोटर, तार, पाइप पानी की टंकिया, नल फीटिंग एव सम्पूर्ण विद्यालय में बिजली फीटिंग, फेन का काम, छत रिपेरिंग, खेल मैदान समतलीकरण, विद्यालय नाम का मेन बोर्ड, फुटपाथ आदि कार्य धीरे–धीरे पूरे होते गए।

फिर अगला पड़ाव बच्चों से सम्बन्धित काम शुरू किया जिसमें बेंच, दरी पटिया, खेल सामग्री, पढ़ने–लिखने का सामान, स्मार्ट टीवी, डीजे माइक सेट आदि। अंत में विद्यालय ऑफिस एवं कुर्सियों टेबल का काम कम्प्यूटर, प्रिंटर आदि का कार्य पूर्ण हुआ। 'सामुदायिक, सहभागिता' की भावना एवं 'मेरा विद्यालय के प्रति कर्त्तव्य' की थीम एवं जन समूह का विद्यालय के प्रति जुड़ाव से हर काम पूरा होने लगा।

हमने भामाशाहों के सहयोग एवं घोषणा के अनुरूप निःस्वार्थ भाव एवं समर्पण की भावना से हर कार्य को पूरा किया जिससे विद्यालय आज निजी विद्यालय की तर्ज पर हर सुविधाओं से सुसज्जित करने का प्रयास किया जिसमें हमें सफलता भी मिली। विद्यालय के प्रति सहयोग के लिए हर भामाशाह का विद्यालय हमेशा आभारी रहेगा'।

सत्र 2021 में इस कार्य के एवं विद्यालय के प्रति समर्पण भाव एवं विकास के लिए 'जिला स्तरीय शिक्षक सम्मान 2021' से सम्मानित किया गया, ये सम्मान समस्त भामाशाहों एवं विद्यालय को समर्पित है, क्योंकि आपके सहयोग, प्रेरणा, आशीर्वाद से ही हर काम एवं विद्यालय विकास की यात्रा पूरी हुई। शिक्षक सम्मान से प्राप्त हुई राशि विद्यालय विकास हेतु समर्पित कर दी।

विद्यालय की इस विकास की यात्रा SMC सदस्यों, साथी/अधिकारी जगदीश चन्द्र जी पालीवाल, चन्द्र किशोर जी जुनवल, खीम सिह जी राणावत, चेतन जी देवासी एवं

Rajasthan Education Department

अनामिका जी का विद्यालय विकास में पूरा-पूरा सहयोग रहा। समय-समय पर विभागीय अधिकारियों का भी हमें सम्बल, मार्गदर्शन व निर्देशन प्राप्त होता रहा है, जिससे हमें हर काम में प्रेरणा एव ऊर्जा के साथ काम करने की शक्ति प्राप्त हुई है।

विद्यालय विकास एव नवाचार के कार्य:-

1. **विद्यालय भवन मरम्मत, रंग रोगन एव चित्रकारी-** विद्यालय भवन की छत एवं अन्य मरम्मत कार्य कर पूरे भवन को नए सिरे से प्लास्टिक पेंट से रंग रोगन करवाया गया। फिर उस पर नए सिरे से पेंटिंग का कार्य ABL कक्ष, पर्यावरण संरक्षण, बालिका शिक्षा, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, स्वच्छता एवं नाना प्रकार के कोटेशन दीवारों पर लिखवाना आदि कार्य पूर्ण।
2. **माँ शारदे का मन्दिर बनवाना एवं प्राण प्रतिष्ठा-** विद्यालय में माँ शारदे की तस्वीर कुर्सी पर रखकर प्रार्थना एवं अन्य कार्यक्रम विद्यालय में आयोजित किए जाते थे तब हर समय मन्दिर की कमी खलती थी. इस कमी को पूरा करने के लिए विद्यालय परिसर में जन सहयोग से नए माँ शारदे के मन्दिर को बनवाया एव विधि विधान से मूर्ति स्थापित करवाई!
3. **पीने के पानी की समस्या का समाधान-** बच्चों को पीने एवं पोषाहार के लिए पिछले कई वर्षो से पीने के साफ पानी की समस्या थी। जिसका स्थाई समाधान के लिए नई ट्यूबबेल खुदवाना एवं जनसहयोग से बिजली की मोटर डलवाकर पानी विद्यालय परिसर तक लाना फिर भामाशाहों के सहयोग से पानी की टंकिया नल फिटिंग (बाथरूम पीने के पानी के पॉइंट हाथ धोने के पॉइंट) आदि कार्य करवाना!
4. **विद्यालय विद्युतीकरण-** विद्यालय स्थापना से अब तक विद्युत कनेक्शन नही था। बिजली की मोटर के लिए बिजली की जरूरत थी इसके लिए सर्वप्रथम विद्युत कनेक्शन करवाया फिर बिजली फीटिंग का कार्य जन सहयोग से पूरा कर फेन लगवाने का काम एवं अन्य कार्य भी पूर्ण करवाया।
5. **खेल मैदान डवलपमेंट/समतलीकरण का कार्य करवाना-** विद्यालय के पास 4 बीघा जमीन उपलब्ध है उसमें से 80% जमीन पूर्ण रूप से पत्थरीली थी जिसको जनसहयोग/पंचायत के सहयोग से समतल करवाया फिर उस पर खेल मैदान जैसे वॉलीबाल, बैडमिंटन, खो-खो, कबड्डी, रेस आदि के मैदान डवलपमेंट का कार्य एवं भवन के सामने के पत्थर हटाकर समतल कर गार्डन के लिए जमीन को समतल करवाना।
6. **बगीचा एवं किचन गार्डन-** बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं समझ विकसित करने के लिए एक शानदार बगीचे का विकास कर नाना प्रकार के पेड़ लगवाए गए जिससे एमडीएम के ताजा सब्जी मिले इसके लिए किचन गार्डन का विकास किया गया।
7. **दरी पट्टी फर्नीचर-** जनसहयोग से बच्चों के लिए बैठने के लिए दरी पट्टी एवं पढ़ने के लिए बेंच एवं अन्य फर्नीचर से सम्बन्धित सामग्री उपलब्ध करवाना जनसहयोग से।
8. **इलेक्ट्रिक/ कम्प्यूटर सुविधाओं से सुसज्जित-** विद्यालय आधुनिक टेक्नोलॉजी से जोड़ने के लिए स्मार्ट टीवी प्रिंटर लेपटोप माइक सिस्टम पंखे एलईडी लाइट आदि अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया गया।
9. **खेल सामग्री-** विद्यालय में प्राथमिक विद्यालय से सम्बन्धित सभी प्रकार की खेल सामाग्री-लूडो, सांप सीढ़ी, चेस, रिंग, रस्सी कूद, क्रिकेट, बेडमिंटन, वॉलीबाल, झूले, रपस, पट्टी, चकरी विद्यालय आदि खेल से सम्बन्धित सामग्री विद्यालय को उपलब्ध करवाई।
10. **विद्यालय बोर्ड फुटपाथ एवं चबूतरा निर्माण-** विद्यालय भवन के अनुरूप विद्यालय मेन बोर्ड को नए सिरे से बनवाना/ सुधार करवाना, बच्चों के बैठने के लिए एवं गार्डन विकास के लिए फुट पाथ निर्माण एव पेड़ों की सुरक्षा के पेड़ों के चारों ओर चबूतरा निर्माण का कार्य पूर्ण करवाना।
11. **ज्ञान संकल्प पोर्टल पर डोनेशन करवाना -** विद्यालय के प्रति जागरूकता लाकर ज्ञान संकल्प पोर्टल पर लगभग 50000 से अधिक का डोनेशन करवाया।

शैक्षिक भ्रमण- विद्यालय में पिछले सत्रों में एकल अध्यापक होने पर भी बच्चों को आसपास के वातावरण से परिचय, प्रत्यक्ष अनुभव, पर्यटन आदि से बच्चो को जोड़ने के लिए शिक्षण के साथ आसपास के पर्यटन स्थानों- रणकपूर जरगाजी, कुम्भलगढ़ आदि स्थानों का भ्रमण करवाया गया।

शिक्षण व्यवस्था- विद्यालय में पिछले चार सत्रों से एकल शिक्षक होने पर भी विकास कार्यों के साथ शिक्षण व्यवस्था को बनाए रखा एवं विभाग की महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम स्माइल योजना, वर्कबुक, एबीएल. किट RKSMBK आदि कार्य को समय पर पूरा किया।

दिव्यांग बालक/बालिका एवं बालिका शिक्षा- विद्यालय दिव्यांग बालक/ बालिकाओं के लिए हमेशा समर्पित रहा है। इनके शिक्षण एवं सुविधाओं पर विशेष ध्यान देता रहा है।

बालिका शिक्षा पर विद्यालय का विशेष फॉक्स है जो बालिका विद्यालय किसी कारण वश नही जा सकती उनको विद्यालय से जोड़कर उनकी शिक्षा पर पिछले 6 साल से ध्यान दे रहा है एवं 5वीं उत्तीर्ण पिछले 3 सत्रों की बालिकाओं को आगे की शिक्षा के लिए कस्तूरबा गाँधी आवासीय-विद्यालय से जोड़ा गया।

शाला स्वच्छता- विद्यालय में साफ सफाई का विशेष प्रबन्धन है जिसमें हर कक्षा-कक्ष, कार्यालय, रसोई में डस्टबिन की व्यवस्था, शौचालय में नल फीटिंग पानी की व्यवस्था, हाथ धोने की पूर्ण व्यवस्था, पीने का साफ पानी-विद्यालय भवन पर रंग-रोगन हरी-भरी स्कूल साफ-सुथरा परिसर शिक्षण व्यवस्था हेतु अनुकूल वातावरण भवन पर अच्छी चित्रकारी।

समय-समय पर शाला स्वच्छता पर कार्यक्रम करवाया जाता है। अच्छी आदतों के लिए समय-समय पर प्रोत्साहन किया जाता है। हाथों की नियमित साफ-सफाई की आदत डालना, व्यक्तिगत साफ सफाई, पर्यावरण एवं आस-पास के वातावरण की सफाई हेतु प्रेरित किया जाता है। सधन्यवाद एवं आभार !

संस्थाप्रधान
राजकीय प्राथमिक विद्यालय केसर सिंह जी का गुड़ा,
ग्राप पं.-सिंघाड़ा पोस्ट-सिंघाड़ा, तह. गोगुन्दा,
उदयपुर (राज.)-313704
मो: 9001781813

Rajasthan Education Department

49वीं राज्य स्तरीय मंत्रालयिक खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता-22 सुसम्पन्न

रपट

❐ कमलेश सिंघल

चार दिवसीय 49वीं राज्य स्तरीय मंत्रालयिक खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता-2022 सुसम्पन्न (27 दिसम्बर से 30 दिसम्बर) सुव्यवस्थित, सफलतापूर्वक सम्पन्न। इस बार प्रतियोगिता को करवाने का सौभाग्य चूरू संभाग के चूरू जिले की सुजानगढ़ तहसील में स्थित श्री रघुनाथराय जाजोदिया रा.उ.मा.वि. सुजानगढ़ को मिला। जिसमें 9 संभाग व 1 निदेशालय की 10 टीमों के 2520 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसके सफल संचालन में अतिरिक्त संयुक्त निदेशक चूरू संभाग श्री महेन्द्र सिंह बडसरा का निर्देशन रहा। 10 टीमों के आवास की व्यवस्था का संचालन व्याख्याता श्री धर्मसिंह मीणा, श्री शिवभगवान रूहेला, श्री बसंत चौधरी व उनकी टीम ने किया। जिसमें सभी आवासों में गर्म कपड़े, स्नान के लिए गर्म पानी एवं सुबह के समय चाय की व्यवस्था की गई। इन व्यवस्थाओं में लगभग 48 कार्मिकों ने सहयोग प्रदान किया।

प्रतियोगिता का उद्घाटन 27 दिसम्बर 2022 को मुख्य अतिथि माननीय विधायक मनोज मेघवाल एवं अध्यक्ष संयुक्त निदेशक चूरू संभाग श्री पितराम सिंह ने किया। बतौर अतिथि सभापति निलोफर गौरी, सरपंच सविता राठी, पूर्व प्रधान पुसाराम गोदारा, अतिरिक्त संयुक्त निदेशक श्री महेन्द्र सिंह बडसरा, CBEO श्री कुलदीप व्यास, भामाशाह श्री पवन कुमार मौसुण, श्री पीयूष जाजोदिया उपस्थित रहें। दलों द्वारा मार्च पास्ट किया गया जिसमें अजमेर संभाग ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

दिनांक 27 व 28 को सायंकाल में रंगारंग सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें सुगम संगीत, एकाभिनय, एकल नृत्य, विचित्र वेशभूषा, हारमोनियम, तबला, ढोलक, झांझ वादन प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ ऐसा प्रतीत हो रहा था कि पूरा राजस्थान अपने क्षेत्र की विशेषता लिए एक मंच पर आ गया। विचित्र वेशभूषा में निदेशालय से श्री महेश आचार्य एवं उदयपुर से श्री महेश चन्द बारबर ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। निदेशालय से मदन मोहन मोदी ने हारमोनियम वादन से महफिल में समा बांध दिया।

दिनांक 28 व 29 शारीरिक शिक्षकों की परीक्षा की घड़ी थी कम समय में 18 बड़े एवं समस्त एथलेटिक्स खेलों का आयोजन करना

चुनौतिपूर्ण था लेकिन श्री कमल कुमार सैनी, श्री मदनलाल झूरिया, श्रीमती विजय लक्ष्मी, श्री भंवरलाल पांडर व श्री भागीरथ गोदारा की टीम ने समयबद्ध रूप से सभी खेलों का सफलतापूर्वक आयोजन करके प्रतियोगिता को पूर्णता प्रदान की। इस कार्य में 100 से अधिक शारीरिक शिक्षकों व अध्यापकों ने सहयोग प्रदान किया। प्रमाण पत्र लेखन का कार्य श्री पदमवीर महरिया के निर्देशन में श्री देवीसिंह, श्री हजारी सिंह, श्री योगेश टेलर, श्री अनिल धनकड़ ने कार्य संपादन किया।

खेल आयोजन, कार्यालय कार्य, भोजन, चाय-कॉफी व्यवस्था का संचालन प्रधानाचार्य श्री कमलेश सिंघल व उप प्राचार्य श्री रामावतार शर्मा एवं उनकी टीम ने किया। सर्दी के मौसम को देखते हुए 24 घण्टे गर्मागर्म चाय-कॉफी की व्यवस्था की गई। दोनों समय गर्म व अलग अलग मैन्यू के अनुसार भोजन व्यवस्था भामाशाहों के सहयोग से की गई। भोजन व्यवस्था में श्री चन्द्रभानु सोनी, श्री अब्दुल सत्तार, श्री धनराज सिंगोदिया ने सहयोग प्रदान किया।

प्रतियोगिता का समापन 30 दिसम्बर को समापन मैच टेनिस बॉल क्रिकेट पुरुष वर्ग फाइनल बीकानेर व जयपुर के मध्य खेला गया जिसमें बीकानेर विजेता रहा। अंपायरिंग श्री रंजन अत्रि व श्री ललित किशोर ने, स्कोरिंग व कोमेन्ट्री श्री रामेश्वरलाल खीचड़ ने की। समापन समारोह में मुख्य अतिथि अतिरिक्त संयुक्त निदेशक श्री महेन्द्र सिंह बडसरा व अध्यक्ष मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी श्री संतोष महर्षि, विशिष्ट अतिथि ADM श्री भागीरथ साख, SDM श्री मूलचन्द लूणिया, उपसभापति श्री अमित मारोठिया, श्री इदरिश गोरी, भामाशाह श्री महावीर राव, श्री रणजीत भींचर, श्री पवन कुमार मौसुण, CBEO श्री कुलदीप व्यास, प्राचार्य श्री धनाराम प्रजापत, श्रीमती सरोजवीर पूनिया आदि उपस्थित रहे। प्रतियोगिता प्रतिवेदन प्रधानाचार्य श्री कमलेश सिंघल ने प्रस्तुत किया एवं प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए आगन्तुकों, प्रतिनियुक्त शारीरिक शिक्षकों, अध्यापकों एवं अन्य कार्मिकों को धन्यवाद दिया एवं आगामी प्रतियोगिता के लिए राजस्थान का ध्वज निदेशालय की टीम को सौंपा।

प्रतियोगिता के सफल आयोजन में विद्यालय टीम श्री धर्मसिंह मीणा, श्री चन्द्रभानु सोनी, श्री शिवभगवान रूहेला, श्री गोविन्द सोनी, श्री राजुराम महिया, श्री वेदप्रकाश, श्री भागीरथ, श्री रामनिवास स्वामी, श्री महावीर प्रसाद स्वामी, श्री राजकुमार तंवर, श्री राजेन्द्र चौहान, श्रीमती बबिता, श्री बसंत चौधरी, श्रीमती विजय लक्ष्मी, श्री गजानन्द दाधीच, सुश्री शालिनी,श्री नवीन मांडिया, मो. इदरिश, श्रीमती शारदा हुड्डा, श्रीमती ललिता डारा, श्री रमेश सारण, श्री अजीत सिंह व उप प्राचार्य श्री रामावतार शर्मा 24 घण्टे मुस्तैद रही।

सं.नि. चूरू कार्यालय से श्री मुकेश कुमार शर्मा, जिशिअ कार्यालय से श्री प्रकाश शर्मा, श्री सुरेन्द्र गढ़वाल, श्री नोरंगलाल सैनी, CBEO बीदासर से श्री कमल कुमार रांकावत, CBEO सुजानगढ़ से श्री नरेन्द्र स्वामी, श्री बीरबल सिंह, श्री रामलाल गुलेरिया, जिशिअ सीकर से श्री आरीफ खान का सहयोग रहा।

प्रधानाचार्य
श्री रघुनाथराय जाजोदिया राउमावि. सुजानगढ़,
चूरू (राज.)
मो: 9079938180

Rajasthan Education Department

राज्यस्तरीय मैथ्स ओलंपियाड

स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल सूरतगढ़

❒ दलराज सिंह ढिल्लो

राजस्थान के शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े ब्लॉक में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और वर्तमान समय में अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा की बढ़ती माँग को ध्यान में रखते हुए नवोदय और केन्द्रीय विद्यालयों की तर्ज पर राजस्थान में 134 स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल की स्थापना की गई है। अंग्रेजी माध्यम की गुणवत्ता युक्त शिक्षा के साथ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए मॉडल विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएँ जैसे साइंस फेयर, इंग्लिश एक्सटेम्पोरी, पेटिंग, आर्ट एंड क्राट, सोशल साइंस फेयर प्रतियोगिता, मैथ्स ओलंपियाड, बैंड प्रतियोगिता, नेशनल रूरल आईटी क्विज आदि प्रतियोगिताओ का विद्यालय स्तर, कलस्टर स्तर, राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन किया जाता है। मॉडल स्कूल के 7 वर्षों के इतिहास में मॉडल स्कूल सूरतगढ़ ने लगभग सभी प्रतियोगिताओं में कलस्टर स्तर, राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर विजयी रहकर परचम फहराया है। बैंड प्रतियोगिता में दो बार राज्य स्तरीय विजेता रहते हुए गुजरात में जोनल स्तर पर भी चौथा स्थान प्राप्त किया है। आईटी क्विज में राष्ट्रीय स्तर पर दो बार विजेता बनकर दो बार एक-एक लाख रु. व इसी सत्र 2022-23 में 50 हजार रुपये के नकद इनाम के साथ राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया है।

इस वर्ष मॉडल स्कूल सूरतगढ़ को 7 वर्षों में पहली बार राज्य स्तरीय मैथ्स ओलंपियाड़ की मेजबानी का मौका मिला। यह मॉडल स्कूल सूरतगढ़ के लिए सौभाग्यशाली पल था कि इस राज्य स्तरीय मैथ्स ओलंपियाड़ का आयोजन National Mathematics Day 22 दिसम्बर को किया गया। इस प्रतियोगिता में मॉडल स्कूल के कुल 13 कलस्टर विजेता टीम में से 11 टीमों के सीनियर और जूनियर वर्ग के कुल 44 प्रतिभागियों ने सहभागिता की। इस प्रतियोगिता के लिए भामाशाह व विद्यार्थी गतिविधि मद से Math Lab को भव्य रूप प्रदान किया गया व उसका सौंदर्यीकरण किया गया। 22 दिसम्बर 2022 को प्रतियोगिता का शुभारम्भ मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी सूरतगढ़ श्री नरेश कुमार रिणवां के द्वारा किया गया। शुभारम्भ के बाद लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया। इसमें 11 टीमों में से टॉप रही 6-6 टीमों का सीनियर व जूनियर वर्ग के लिए राउंड 2 से 5 तक के लिए चयन किया गया। इसमें दूसरे राउंड में पज्जल (Puzzle) आधारित Activities करवाई गई। 3 और 4 राउंड जो कि रेपिड फायर राउंड और Audio-Visual आधारित था को PPT के माध्यम से Smart board व प्रोजेक्टर की सहायता से रोमांचक तरीके से संचालित करवाया गया। 5वें राउंड में Table आधारित Activity करवाई गई। इस प्रतियोगिता को सुचारू रूप से संचालन के लिए Junior Group की सभी राउंड की प्रतियोगिता को वरिष्ठ अध्यापक गणित श्री दलराज सिंह व श्रीमती सिमरपाल ओलख व Senior Group की सभी राउंड प्रतियोगिता को व्याख्याता गणित श्री शोकिन्द्र कुमार ने सम्पन्न करवाया। इसमें निर्णायक मंडल के रूप में राउमावि सूरतगढ़ के व्याख्याता गणित श्री संजय भादू व केन्द्रीय विद्यालय Air Force Suratgarh के TGT Math अध्यापक श्री अमृत गिरि ने अपनी महती भूमिका निभाई।

प्रतियोगिता के अंत में सांस्कृतिक कार्यक्रम व पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भरतनाट्यम व पंजाबी संस्कृति को प्रदर्शित करते हुए भंगड़ा सहित अनेक मनमोहक प्रस्तुतियों का प्रदर्शन किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह में विजेता व उपविजेता टीमों को अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट सूरतगढ़ श्री अरविन्द जाखड़ द्वारा ट्रॉफी एवं प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। संस्थाप्रधान श्री बजरंग लाल भादू ने सभी अतिथियों, स्टॉफ, प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया व प्रधानाचार्य ने विद्यालय की इन उपलब्धियों व गुणवत्ता युक्त शिक्षण का श्रेय यहाँ के निपुण स्टाफ को दिया।

मॉडल स्कूल सूरतगढ़ ने इस वर्ष भी कलस्टर स्तर और राज्य स्तर पर अनेक प्रतियोगिताओं में अपना परचम फहराया है। जिसमें कि सोशल साइंस फेयर में आरजू बिश्नोई ने कलस्टर स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए राज्य स्तर पर कलस्टर का नेतृत्व किया। काबिल-ए-गौर है कि कक्षा 8 के विद्यार्थी सोमेश ने एक डिवाइस युक्त चश्मे का निर्माण किया जिसकी खासियत है कि दो सैंकड तक आँख की पलक बंद रहने पर डिवाइस क्रियाशील होकर बीप की आवाज करेगी जिससे ड्राईवर सतर्क और सचेत हो जाएगा और संभावित दुर्घटना टल जायेगी। इस डिवाइस के निर्माण के लिए उसने कलस्टर स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए राज्य स्तरीय विज्ञान प्रर्दशनी के लिए चयन हुआ। इस डिवाइस के निर्माण में विज्ञान की वरिष्ठ अध्यापिका श्रीमती अपूर्वा चिरानियां ने मार्गदर्शन दिया। साथ ही इस डिवाइस के प्रदर्शन ने ही हिन्दुस्तान स्काउट एवं गाइड के राज्य स्तरीय कैंप उदयपुर में प्रथम स्थान दिलाया। हिन्दुस्तान स्काउट एवं गाइड के राज्य स्तरीय कैंप उदयपुर में कला उत्सव में विद्यालय ने प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए स्काउट प्रभारी श्री सतीश कुमार के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्तर पर बाबा हरिदास मंदिर झरोदाकला, नई दिल्ली में राजस्थान का नेतृत्व किया व समूह नृत्य में प्रथम स्थान प्राप्त किया। दो बार की राज्य स्तरीय बालिका बैंड विजेता टीम ने पीटीआई मोहन लाल चालिया व कमाण्डर महकदीप कौर के नेतृत्व में कलस्टर स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए महुआ, दौसा में आयोजित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया। साथ ही इस वर्ष विद्यालय के राज्य स्तर पर सात विद्यार्थियों का चयन शतरंज प्रतियोगिता में हुआ। विद्यालय के आईटी व्याख्याता श्री सुरेश पुरोहित के सान्निध्य में धोरों की धरती सूरतगढ़ से छात्र विवेक शर्मा ने नेशनल रूरल आईटी क्विज प्रतियोगिता बैंगलुरू में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते हुए सम्पूर्ण देश में द्वितीय स्थान प्राप्त कर साठ हजार की राशि जीतते हुए विद्यालय को गौरवान्वित किया। वहीं छात्र ब्रह्मप्रीत ने देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में आयोजित हुई टीसीएस इनक्विजिटिव प्रतियोगिता में राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया।

वरिष्ठ शिक्षक
स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल
ब्लॉक सूरतगढ़, श्री गंगानगर (राज.)
मो: 9828158744

Rajshri Education Department

रपट

वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह

❒ विकास चन्द्र 'भारु'

राज्य सरकार की महत्त्वाकांक्षी एवं नवाचार योजना– राजकीय विद्यालयों में वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजन के क्रम में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, निराधनूं में दिनांक 24 जनवरी 2023 को वार्षिकोत्सव, भामाशाह सम्मान, एलुमनाई मीट एवं पुरस्कार वितरण समारोह – 'सरगम–2023' श्री घासीराम पूनिया प्रधान पंचायत समिति अलसीसर के मुख्य आतिथ्य में धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य राजेन्द्र सिंह कपुरिया ने की। इस अवसर पर बतौर विशिष्ट अतिथि श्रीमती अनुसुइया मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, झुन्झुनू, श्री मनोज कुमार ढाका जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय (प्रारंभिक शिक्षा), श्री राजेन्द्र खीचड़ मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी अलसीसर, एडीईओ श्री उम्मेद महला, एसीबीईओ श्री नवीन गढवाल, पीओ श्री नवीन ढाका, श्री मनोज मूंड, प्रधानाचार्य श्रीमती अंजू कपूरिया, श्री राकेश झाझड़िया सरपंच प्रतिनिधि, ब्लॉक मेम्बर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के विशेष आकर्षण रहे स्काउट गैजेट के रूप में बांस के प्रयोग से बने गेट (अस्थाई चल–द्वार) का निर्माण विद्यालय स्काउटर विकास चन्द्र के नेतृत्व में विद्यालय के स्काउट्स ने विद्यालय प्रांगण में किया, जहाँ पर सभी आगन्तुक महानुभावों का विद्यालय छात्राओं द्वारा तिलकार्चन किया गया। तत्पश्चात् माँ सरस्वती की पूजा अर्चना कर कार्यक्रम की विधिवत शुरूआत की गई। परम्परानुसार प्रधानाचार्य एवं विद्यालय स्टाफ द्वारा अतिथियों का माल्यार्पण स्मृति चिह्न भेंट कर स्वागत–सत्कार किया गया।

कार्यक्रम में विद्यालय का निमंत्रण स्वीकार करते हुए सैंकड़ों की संख्या में भामाशाहों, अभिभावकों, पूर्व विद्यार्थियों तथा गाँव से महिलाएँ तथा पुरुषों ने पधार कर समारोह की शोभा बढ़ाई एवं विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाया। स्वागत सत्कार के पश्चात सर्वप्रथम प्रधानाचार्य महोदय ने अपने स्वागत उद्बोधन में समस्त पधारे हुए मेहमानों, भामाशाहों, अभिभावकों, पूर्व विद्यार्थियों तथा गाँव से आए महिला तथा पुरुषों का धन्यवाद ज्ञापित किया और विद्यालय का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। प्रधानाचार्य महोदय ने उपस्थितजनों के समक्ष विद्यालय की मूलभूत आवश्यकताओं को भी रखा एवं सामर्थ्य अनुसार सहयोग की अपील की।

स्वागतीय उद्बोधन उपरान्त राज्य सरकार की मंशानुसार विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति एवं रचनात्मक कौशल के विकास एवं नवाचार के क्रम में विद्यालय के छात्र–छात्राओं ने मनोरंजक, शिक्षाप्रद, देशभक्ति से परिपूर्ण गायन, नृत्य, अभिनय, मूकाभिनय एवं कविताओं की रंगारंग प्रस्तुतियाँ देकर उपस्थित अतिथियों, ग्रामवासियों एवं विद्यार्थियों का मन मोह लिया। विशेष रूप से मूकाभिनय, होली धमाल प्रस्तुति, पढ़ोगे–लिखोगे, रंगीलो राजस्थान, कांगसिया, चौमासो एवं टन–टन–टन घंटी बजी जैसी प्रस्तुतियों पर विद्यार्थियों ने खूब तालियाँ बटोरी। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विद्यार्थियों के ड्रेस कोड एवं भाव–भंगिमाओं की सभी अतिथियों ने सराहना की तथा विद्यालय की सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी टीम को शुभाशीष दिया।

समारोह में अतिथियों द्वारा विद्यालय में कैमरे लगवाने, विद्यालय को साउण्ड सिस्टम भेंट करने, प्राथमिक कक्षाओं को फर्नीचर भेंट करने, विद्यार्थियों को स्वेटर भेंट करने, विद्यालय में मिट्टी भराव करवाने, पोषाहार कक्ष के सुदृढ़ीकरण, विद्यालय में पेयजल हेतु कुएं का निर्माण जैसे विभिन्न कार्यों एवं नकद आर्थिक सहयोग करने हेतु लगभग 35 भामाशाहों, 25 पूर्व विद्यार्थियों एवं 70 छात्र–छात्राओं को विशिष्ट उपलब्धियों जैसे विज्ञान मेले में सहभागीता, गार्गी विजेता, स्कूटी योजना में चयनित, बोर्ड एवं स्थानीय परीक्षा में स्थान प्राप्त करने हेतु, खेल, अनुशासन, उपस्थिति एवं समग्र प्रदर्शन हेतु सम्मानित किया। उक्त के साथ ही विद्यालय से 18वीं राष्ट्रीय जम्बूरी, रोहट, पाली में सहभागिता करने वाले दल को भी प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि महोदय ने अपने उद्बोधन में राज्य सरकार की फ्लेगशीप योजनाओं एवं अभूतपूर्व कार्यों को संक्षेप में उपस्थितजनों के समक्ष रखा एवं विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे किस प्रकार शिक्षा के माध्यम से आने वाली चुनौतियों का मुकाबला कर पाएँगे। उन्होंने अपने कोटे से विद्यालय में 200000/– रुपयों से मरम्मत कार्य करवाने की भी घोषणा की साथ ही 200000/– रुपयो के कार्यों की घोषणा पीईईओ क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय, अगुणा मोहल्ला में करवाने की भी घोषणा की। साथ ही उन्होंने पंचायत की तरफ से भी विद्यालय में 200000/– रुपयों के मिट्टी भराव की भी घोषणा की।

कार्यक्रम में विद्यालय को भामाशाहों द्वारा निम्नानुसार आर्थिक सहयोग किया गया/करने की घोषणा की गई –

1. विद्यालय स्टाफ की तरफ से 51000/
2. श्री रूघाराम सिहाग द्वारा 21000/–
3. धर्मा होटल, निराधनूं संचालक श्री धर्मवीर चाहर द्वारा 21000/–
4. श्री बंशीधर धाबाई द्वारा 21000/–
5. श्री सुरेन्द्र ज्याणी, इण्डेन गैस एजेन्सी, बिसाऊ द्वारा 11000/
6. श्री धर्मदेव सिंह धाबाई द्वारा 11000/
7. श्री करणीराम जी रेप्सवाल द्वारा 11000/–

उक्त के अतिरिक्त भी विद्यालय को लगभग 20000/– रुपये का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में सभी अतिथियों ने विद्यालय में हो रहे नवाचारों की भूरी–भूरी प्रशंसा की। उन्होंने जीवन में शिक्षा के महत्त्व की ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करते हुए उन्हें अपने सर्वांगीण विकास हेतु नियमित मेहनत करने का आह्वान किया। अन्त में पुन: प्रधानाचार्य महोदय ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। सभी को जलपान एवं भामाशाह के सहयोग से मिठाई वितरण के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

प्राध्यापक (वाणिज्य)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, निराधनूं,
झुंझुनूं, (राज.)
मो: 8118840355

Rajasthan Education Department

बच्चों में सृजनशीलता का विकास

❐ रामजीलाल घोड़ेला

सृजनशीलता क्या है ?

सृजनशीलता के बारे में विभन्न विद्वानों के मत अलग अलग हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला एक मनोवैज्ञानिक यह समझता है कि केवल प्रयोगशालाओं में कार्य करने वाला ही सृजनशील व्यक्ति है, क्योंकि वही प्रकृति को नए दृष्टिकोण से समझकर उसकी मौलिक विवेचना करता है। एक इंजीनियर समझता है कि वही सृजनशील है क्योंकि प्रकृति के स्रोतों का वही मौलिक रूपों में उपयोग कर सकता है। एक डॉक्टर समझता है कि वही मौलिक है क्योंकि वह प्राकृतिक रोगों से छुटकारा दिलाता है। किसान सृजनशील है क्योंकि वह प्रकृति से उपज प्राप्त करने का मौलिक कार्य करता है। इसी प्रकार शिक्षक सृजनशील है जो प्रकृति प्रदत मूल प्रवृति, जन्म व्यवहारों को परिमार्जित कर उन्हें सामाजिक रूप प्रदान करता है। एक विद्यार्थी भी अपने को सृजनशील समझता है। इस प्रकार सृजनशीलता के बारे में अलग अलग लोगों के विभिन्न दृष्टिकोण है। इसके अतिरिक्त कुछ इसे कल्पना की दृष्टि से देखते हैं। कुछ चिंतन की दृष्टि से, कुछ उत्पादन की दृष्टि से, कुछ मौलिकता की दृष्टि से तथा कुछ कार्य की दृष्टि से सृजनशीलता की व्याख्या करते हैं।

स्टेगनर एवं कार्वोस्की ने सृजनात्मकता के बारे में कहा है कि ''किसी नई वस्तु का पूर्ण या आंशिक उत्पादन- सृजनात्मकता है।'' स्किनर ने कहा है कि ''सृजनात्मक चिंतन का अर्थ है कि व्यक्ति की भविष्यवाणियाँ या निष्कर्ष, नवीन मौलिक अन्वेष्णात्मक तथा असाधारण हो।'' सृजनात्मक चिंतक वह है जो नए क्षेत्र की खोज करता है। अत: हम यह कह सकते हैं कि सृजनात्मकता व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके द्वारा किसी नए विचार या नई वस्तु का निर्माण करता है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति की वह योग्यता भी सम्मिलित है जिसके द्वारा वह पूर्व प्राप्त ज्ञान का पुनर्गठन करता है।

सृजनशील बालक की पहचान की आवश्यकता–

सृजनशील बालक राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति होती है। अत: उसकी ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। ऐसे बालकों की ओर विशेष ध्यान देने के लिए यह आवश्यक है कि हम उनका सर्वप्रथम पता लगाए।

1. सृजनशील बालकों का पता लगाने से उनके व्यवहार, व्यक्तित्व तथा मानसिक योग्यताओं से सम्बन्धित हमारा ज्ञान व्यापक होगा।
2. सृजनशील बालकों का पता लगाने से ही उन्हें व्यक्तिगत शिक्षण प्रदान किया जा सकता है।
3. जब तक हम सृजनशील बालकों का पता नहीं लगाते, तब तक उन्हें समुचित मात्रा में शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन प्रदान नहीं कर सकते।
4. बालकों के सही मूल्यांकन के लिए सृजनशील बालकों का पता लगाना आवश्यक है।
5. कक्षा में अनेक दैनिक समस्याएँ इसलिए उत्पन्न होती है क्योंकि हम बालकों की शैक्षिक व मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते हैं। सृजनशील बालकों का पता लगाकर ही उनकी शैक्षिक व मानसिक पूर्ति की जा सकती है।
6. जब तक सृजनशील बालकों का पता नहीं लगा लिया जाता, तब तक उनकी सृजनात्मकता के विकास के लिए आवश्यक प्रयास भी नहीं किए जा सकते हैं।

सृजनशील बालकों की विशेषताएँ

1. सृजनशील बालकों में मौलिकता एवं नवीनता का अद्भुत गुण होता है।
2. सृजनशील बालकों में बुद्धिलब्धि उच्च होती है।
3. इनमें सन्देह की मात्रा अधिक होती है, जिसके कारण वे प्रत्येक बहुप्रचलित धारणा की भी नए सिरे से जाँच करना चाहते हैं।
4. उनके व्यक्तित्व में जटिलता की मात्रा अधिक होती है। अत: अध्यापक के लिए उस बालक को समझना कठिन हो जाता है।
5. सृजनशील बालक में जिज्ञासा की मात्रा अधिक होती है, जिसके कारण वे प्रत्येक प्रश्न, धारणा, कार्य का पूरा पूरा उत्तर चाहते हैं।
6. वे उन अस्पष्ट विचारों की ओर भी ध्यान देते हैं, जिन्हें सामान्य बालक लापरवाही के कारण छोड़ देते हैं। उनमें सामान्य बातों पर भी ध्यान केन्द्रित करने की शक्ति अधिक होती है।
7. इनमें साहस की मात्रा अधिक होती है। साहस के कारण वे ऐसे कार्यों को भी हाथ डाल लेते हैं, जिन्हें करने में सामान्य बालक डरते हैं।
8. इनमें संवेदनशीलता अधिक होती है, इसलिए वे प्रत्येक कार्य को गंभीरता से लेते हैं।
9. उनके विचारों में व्यावहारिकता, वास्तविकता अधिक होती है।
10. ये बालक काफी लगनशील तथा परिश्रमी होते हैं।

बच्चों में सृजनशीलता का विकास

सृजनात्मकता को पल्लवित एवं पोषित करने के लिए उचित वातावरण एवं देख-रेख की आवश्यकता होती है। यदि इसे उचित प्रशिक्षण, शिक्षा तथा अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर प्रदान न किए जाएँ तो वह व्यर्थ चली जाती है। इसके अतिरिक्त जैसा कि हमें ज्ञात है कि सृजनात्कमता सार्वभौमिक होती है। इस पर कुछ व्यक्तियों का एकाधिकार नहीं होता है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ मात्रा में सृजनात्मक योग्यताएँ रखता है।

अत: माता-पिता के लिए यह आवश्यक है कि वे बच्चों में सृजनात्मक योग्यता के विकास के लिए उचित वातावरण तथा स्थितियाँ पैदा करें। यह समस्या कठिन अवश्य है, परन्तु इसका समाधान भी है। उचित अभिप्रेरणा तथा परिस्थितियों द्वारा सृजनात्मक योग्यताओं का विकास किया जा सकता है। मौलिकता, लचीलापन, प्रवाहात्मक विचारधारा, विविध चिन्तन, आत्मविश्वास, सतत् परिश्रम, संवेदनशीलता, सम्बन्धों को देखने तथा बनाने की योग्यता आदि कुछ ऐसी योग्यताएँ हैं, जिनका विकास सृजनात्कमता के विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है। इन योग्यताओं का विकास करने के लिए निम्न सुझाव सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

1. प्राय: यह देखा जाता है कि अध्यापक और माता पिता अपने बच्चों से पुराने, पिटे - पिटाए उत्तर की आशा रखते हैं। इससे बच्चों में सृजनात्मकता विकसित नहीं होती। अत: हमें बच्चों को उत्तर देने के लिए पर्याप्त स्वतंत्रता प्रदान करनी चाहिए। उन्हें समस्या के समाधान के लिए अधिक से अधिक विचारों का चिन्तन करने के लिए उत्साहित करना चाहिए।

2. 'यह मेरी रचना है', 'मैंने इसे हल किया है'- यह भावना बच्चों में अत्यधिक सन्तुष्टि प्रदान करती है। वास्तव में वे तभी सृजनात्मक कार्यों में जुटते हैं, जब उनमें उनका अहं निहित हो।

Rajasthan Education Department

अर्थात जब वे अनुभव करें कि उन्हीं के प्रयासों से ही अमुक सृजनात्मक कार्य सम्पन्न हुआ है। अत: हमें बच्चों को ऐसे अवसर प्रदान करने चाहिए जिनसे 'उन्हें' अनुभव हो कि यह सृजन उनके द्वारा ही संपन्न हुआ है।

3. बच्चों में किसी भी रूप में विद्यमान मौलिकता को प्रोत्साहित करना चाहिए। तथ्यों का अंधाधुंध अनुसरण करना, जैसी को तैसी नकल कर देना, निष्क्रिय भाव से ज्ञान प्राप्त करना, रटना आदि सृजनात्मक अभिव्यक्ति में बाधक तत्व है। किसी समस्या का समाधान करते समय या किसी काम को सीखते समय यदि वे अपनी विधियों को परिवर्तित करना चाहते हैं तो उनको प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

4. कई बार डर या हीन भावना से मिश्रित झिझक सृजनात्मक अभिव्यक्ति में बाधा डालती है। कई बार हमने लोगों को यह कहते हुए सुना है, ''मैं जानता हूँ कि मेरा मतलब क्या है? लेकिन मैं दूसरों के सामने लिख या बोल नहीं सकता।'' इस प्रकार डर या झिझक के कारणों का यथा संभव पता लगाया जाना चाहिए तथा अध्यापकों एवं माता-पिताओं को चाहिए कि वे इस प्रकार के बच्चों को कुछ कहने या लिखने की प्रेरणा दें।

5. बच्चों में सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए स्वस्थ एवं उचित वातावरण की व्यवस्था करना अत्यंत आवश्यक है। सीखने और प्रयोग करने, ज्ञान की निष्क्रिय प्राप्ति से या निजी प्रयत्नों द्वारा प्राप्त करके निश्चित स्थिरता तथा जोखिम में पर्याप्त संतुलन स्थापित किया जाना चाहिए। सृजनशील अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करने के लिए हम पाठ्य सहगामी क्रियाओं, सामाजिक उत्सवों, धार्मिक मेलों, प्रदर्शनों आदि का प्रयोग कर सकते हैं। नियमित कक्षा कार्य को भी इस प्रकार व्यवस्थित किया जा सकता है, जिससे बच्चों में सृजनात्मक चिन्तन का विकास हो।

6. श्रमशीलता, आत्म निर्भरता, आत्म विश्वास आदि कुछ ऐसे गुण हैं जो सृजनात्मकता में सहायक होते हैं। बच्चों में इन गुणों का विकास करना चाहिए। इसके अतिरिक्त उन्हें अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति के विरुद्ध हो रही आलोचना के विरुद्ध खड़े रहने का भी प्रशिक्षण देना चाहिए। उन्हें यह बात अनुभव करनी चाहिए कि जो कुछ उन्होंने रचा है, वह अनुपम है।

7. बच्चों को सृजनात्मक कला केन्द्रों तथा वैज्ञानिक एवं औद्योगिक निर्माण केन्द्रों की यात्रा करानी चाहिए। इससे उन्हें सृजनात्मक कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। कभी कभी कलाकारों, वैज्ञानिकों तथा अन्य सृजनशील व्यक्तियों को भी स्कूलों में आमंत्रित करना चाहिए। इस प्रकार बच्चों के ज्ञान विस्तार में सहायता मिल सकती है। बच्चों में सृजनशीलता को बढ़ाया जा सकता है।

8. यह कथन सत्य है कि 'अपना उदाहरण सिद्धांतों से अच्छा होता है।' बच्चे हमेशा अनुकरण करते हैं। जो अध्यापक और माता-पिता पिटे पिटाए रास्ते पर चलते हैं, जीवन में खतरे मोल न लेकर मौलिकता नहीं दिखाते, कोई नया अनुभव नहीं करते या कोई नया काम नहीं करते, वे अपने बच्चों में सृजनात्मकता का विकास नहीं कर सकते। अत: उन्हें परिवर्तन, नवीनता या मौलिकता में विश्वास करना चाहिए। उनके शिक्षण तथा व्यवहार के सृजनप्रियता की झलक मिलनी चाहिए, तभी वे बच्चों में सृजनात्मकता का विकास कर सकते हैं।

अत: सृजनात्मकता के सम्बन्ध में हम कह सकते हैं कि यदि बालक में जिस भी प्रकार की रचनात्मक सृजनशीलता दिखाई दे, उसको प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे कि वह अपनी अनुपम प्रतिभा सृजनात्मक कार्यों में विकसित कर सकें।

प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
द्वारा राज क्लॉथ स्टोर, लूणकरणसर, बीकानेर
(राज.)-334603
मो: 6350087987

आदर्श विद्यार्थी के लक्षण

❐ हर्षित व्यास

एक आदर्श विद्यार्थी के लक्षण क्या है? विद्यार्थी जीवन, जीवन का सुनहरा काल है। कुछ सीखने, कुछ जानने, कुछ बनने का सतत सार्थक प्रयास इसी समय में होता है। एक विद्यार्थी के क्या लक्षण होते हैं, वह नीचे श्लोक में दिए हुए हैं।

काकचेष्टा वकोध्यानं श्वाननिद्रा तथैव च।
अल्पाहारी, गृहत्यागी विद्यार्थी पंचलक्षणम्।।

(1) काक (कौआ) चेष्टा (कौआ की तरह चेष्टा) :- कौआ दूर आसमान में स्वच्छंद उड़ान भरते हुए भी अपनी तीव्र दृष्टि द्वारा जमीन पर पड़े किसी खाद्य पदार्थ को देख चपलतापूर्वक वहाँ पहुँच जाता है तथा अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। उसी प्रकार विद्यार्थी भी ज्ञान की प्राप्ति हेतु तीव्र जिज्ञासा रखे तथा अपने लक्ष्य को प्राप्त करता चले।

(2) वकोध्यानम् (बगुले की तरह ध्यान):- बगुला तालाब या नदी के किनारे एक पैर पर खड़ा रहकर ध्यान मग्न रहता है। मछली आने पर तुरंत उन्हें अपना ग्रास बनाकर पुनः ध्यानस्थ हो जाता है। विद्यार्थी भी विद्या अध्ययन में लगा रहे तथा ज्ञान-विज्ञान की बातों को ग्रहण करते हुए निरंतर प्रगति पथ पर बढ़ता रहे।

(3) श्वान (कुत्ता) निद्रा- जैसे सोए हुए कुत्ते के पास से धीरे से गुजरने पर भी वह जग जाता है, उसी प्रकार विद्यार्थी भी अपने जीवन-लक्ष्य को प्राप्त करने में सदैव सावधान व जागरूक रहे। उसकी नींद सात्विक है।

(4) अल्पाहारी- विद्यार्थी जीवन साधना एवं तपस्या का जीवन है। एक अध्ययनशील विद्यार्थी सदा सादा-सात्विक तथा अल्प भोजन लेने वाला होता है। तामसिक, राजसिक तथा अधिक आहार वाले विद्यार्थी की जीवनी शक्ति का बड़ा भाग भोजन पचाने में, नींद, आलस्य तथा तन-मन की बीमारियों का सामना करने में खर्च हो जाता है। विद्यार्थी जीवन की सफलता के लिए स्वास्थ्य के प्राकृतिक नियमों का पालन अति आवश्यक है।

(5) गृहत्यागी- एक आदर्श विद्यार्थी विद्यार्जन हेतु गृह त्याग में संतोष करता है। विद्या प्राप्त करने तप करने जैसा है, न कि मौज मस्ती करना। सुखों का त्याग आवश्यक है।

एक लड़का सड़क के किनारे लैंप के सहारे पढ़ रहा था। एक परिचित ने कहा-''इतना कष्ट उठाने से तो नौकरी कर लो।'' विद्यार्थी बोला-''महोदय! आप नहीं जानते, यह मेरी साधना का, कसौटी का समय है। कठिनाई है तो क्या, बौद्धिक क्षमताएँ अब न बढ़ाई गई तो फिर ऐसा अवसर कब मिलेगा?'' इस तरह का उत्तर देने वाले महान शिक्षा शास्त्री ईश्वरचंद्र विद्यासागर थे।

प्रत्येक छात्र को यह अनुभव करना चाहिए कि वह एक ऐसी अवधि में होकर गुजर रहा है, जो उसके भाग्य और भविष्य निर्माण करने की निर्णायक भूमिका अदा करेगी। व्यक्ति की सारी गरिमा उसके गुण-कर्म-स्वभाव पर निर्भर है। क्या बाह्य क्या आंतरिक दोनों ही क्षेत्रों की प्रगति इस बात पर निर्भर है कि किसी का व्यक्तित्व किस स्तर का है। धन, विद्या, सम्मान, पद, स्वास्थ्य, मित्रता सिर्फ उन्हीं को मिलती है, जिन्होंने अपना व्यक्तित्व, गुण, कर्म, स्वभाव सही ढंग से ढाला और विनिर्मित किया है।

व्याख्याता (भूगोल)
सुखदेव भाई राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गोदातिया,
ब्लॉक दोवड़ा, डूँगरपुर (राज.)-314028
मो: 9829753158

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

पुस्तक समीक्षा

हेली रा हेला

कवि : राजेन्द्र जोशी; **प्रकाशक** : कलासन प्रकाशन, बीकानेर; **संस्करण प्रथम** : 2022; **पृष्ठ संख्या**: 88; **मूल्य**: ₹200/-

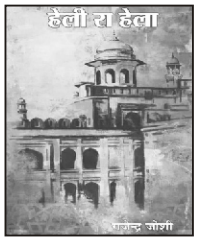

कविता की सत्ता जितनी विद्वजनों के विचार-मंथन का विषय है उससे कहीं अधिक आम जन की सहजानुभूति का। कविता मूलत: बौद्धिक व्यापार नहीं है, यह मनुष्य मन के संवेदित होने की रचनात्मक अनुक्रिया है। जैसे किसी झील में कंकर फेंकने से पानी के भंवर उठते हैं वैसे ही हर व्यक्ति अपने बाहर-भीतर के कुछ कारणों से संवेदित होते हैं। यह दीगर बात है कि कवि की मेधा संवेदना के उन पलों को शब्दों के माध्यम से सहेज लेती है जिनको हम कविता के नाम से जानते हैं। छंदबद्ध हो अथवा छंदमुक्त, एक भीतरी लय कविता की प्राण-ऊर्जा होती है, जो कविता को कविता बनाए रखती है। यह लय ही असल में कविता की ताकत है जो उसके संप्रेषण की साख को सवाई करती है। कविता बांचते-सुनते हुए पाठक उस लय से एक प्रकार का तारतम्य स्थापित कर लेता है और तब वह कविता केवल कवि की निजी संपदा नहीं रहती बल्कि सार्वजनीन हो जाती है। यही खासियत कविता को स्मृति में सुरक्षित रखती है। जिन रचनाओं को हम कालजयी होने का श्रेय देते हैं उनकी पहुँच और सार्वजनीनता का स्तर बहुत उच्च होता है। काव्य आलोचना में अक्सर यह कहा जाता है कि कविता लिखी नहीं जाती वरन स्वत: उतरती है। यह केवल कहने की बात नहीं है, वरन एक बड़ा सच है। सायास लेखन खास तौर पर कविता विधा में, भले ही प्रायोजित कार्यक्रम के तहत कितना ही श्रेष्ठ बताया जाए, मान सम्मान से नवाजा जाए, मगर वह पाठक के चित्त में जगह नहीं बना पाता। कविता विषयक इस चिंतन का मूल है कवि राजेंद्र जोशी का राजस्थानी कविता संग्रह 'हेली रा हेला'।

राजेंद्र जोशी की पहचान संस्कृतिकर्मी के रूप में रही है। वे लंबे समय तक साक्षरता कार्यक्रम से जुड़े रहे हैं और कला, साहित्य तथा सांस्कृतिक सरकारों के प्रति अपनी जिम्मेवारी का निर्वहन करते रहे हैं। यह सुखद है कि गत एक-सवा दशक से वे लेखन के क्षेत्र में भी निरंतर सक्रिय हैं। हिंदी और राजस्थानी दोनों भाषाओं में उनका दखल है। कविता और कहानी विधा में उनकी दर्जन भर किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। आलोच्य संग्रह 'हेली रा हेला' में तीन खंड हैं- 'दुनिया सरसै', 'सपना बरसै' और 'आभो तरसै'। इन तीन खंडों में कुल चोहत्तर कविताएँ संग्रह का हिस्सा बनी है। राजेंद्र जोशी का कवि अपने इर्द-गिर्द के परिवेश और समाज का सूक्ष्म अवलोकन करता है और इस प्रक्रिया में अपनी अनुभूतियों को काव्यात्मक रूप में प्रकट करता है। यहाँ आपको बीकानेरी परिवेश और स्थानीय समाज के जाने-पहचाने चित्र-प्रसंग प्रमुखता से देखने को मिलेंगे।

कवि अपने समय की जरूरी चिंताओं से भी बेखबर नहीं है और कविताओं के मिस वह अपने समय-समाज के ज्वलंत मुद्दों को न केवल उठाता है वरन उनके सटीक समाधान की ओर भी संकेत करता है। ये कविताएँ अमूर्त कलात्मकता की बजाय सीधे तरीके से अपनी बात कहने में यकीन करती हैं। इसे आप सपाटबयानी कह कर अनदेखा नहीं कर सकते क्योंकि इनमें अर्थ छवियों का समुचित विस्तार ध्यान खींचता है। मातृभाषा राजस्थानी की मान्यता की बात हो या फिर खेती-किसानी की चुनौतियाँ, कवि की कलम समय के सच को शब्दों में उतार कर पाठकों तक संप्रेषित करती है।

राजस्थान प्रदेश की मातृभाषा राजस्थानी गत सात दशको से संवैधानिक मान्यता के लिए संघर्ष कर रही है। दुनिया भर के विद्वानों ने राजस्थानी भाषा को समृद्ध और समर्थ बताया है। हजार सालों से भी पुराना साहित्यिक इतिहास, दो लाख से अधिक शब्दों का कोश, आठ करोड़ से अधिक बोलने वाले लोग तथा सशक्त समकालीन साहित्य के बावजूद राजनीतिक कारणों से राजस्थानी भाषा अपने वाजिब हक से वंचित है। जोशी जी राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए चल रहे आंदोलन से सतत जुड़े हुए हैं और समय-समय पर सत्ता और समाज को भाषा की मान्यता के प्रति जागरुक करने के लिए आयोजन आदि करते रहे हैं। संग्रह की कविता 'अेको करणो पड़सी' में कवि स्पष्ट तौर पर भाषा की मान्यता के लिए सामूहिक संघर्ष की वकालत करता है- ''मून रैया/कीड़ा पड़सी/ललकार री दरकार है/सगळा नैं अेको करणो पड़सी।''

बीकानेरी समाज की एक बड़ी खासियत है यहाँ का सांप्रदायिक सद्भाव। यह खास भाव यहाँ की सांस्कृतिक विरासत है। यह नगर विभिन्न धर्म-समाजों के तीज-त्योहारों को आनंद-उत्साह के साथ मनाता रहा है। इस उत्सव प्रिय नगर के अंतस में आज भी एक गाँव बसता है। यही गाँव यहाँ की चेतन शक्ति है। 'ताजिया रा चितराम' इसकी साख भरती रचना है।

मरु-परिवेश के प्रति कवि का अनुराग संग्रह की कई कविताओं में व्यक्त हुआ है। यह स्वाभाविक भी है। इर्द गिर्द का परिवेश किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को बांधता ही है। 'पतझड़' कविता की बानगी द्रष्टव्य है- ''सगळा सागो छोड़ाया/तपती लू मांय/बादळ भी रूस्या/खिंडता धोरा/मारग री पगडंडी नीं रैयी/जंगळ-शहर मोडा हुयग्या/फगत खेजड़ी ऊभी है।''

समेकित रूप से यह कहा जा सकता है कि 'हेली रा हेला' कविता संग्रह पाठकों को अपनी भाव धारा से रूबरू करवाता है। ये कविताएँ विविध संदर्भों में पाठकों को सोचने, समझने और महसूस करने का अवसर देती है। साहित्य का काम वस्तुत: संवेदनाओं को जगाना ही तो है। जागृत संवेदना वाला व्यक्ति निश्चय ही अपने मन विचार और कर्म से प्रकृति और मानव समाज का भला चाहता है।

इस सुरुचिपूर्ण संकलन के सृजन-प्रकाशन के लिए कवि और कलासन प्रकाशन बधाई के हकदार हैं। रमेश कुमार शर्मा के मनमोहक आवरण वाली इस किताब की छपाई-बंधाई भी बेहतरीन है।

समीक्षक- डॉ. मदन गोपाल लढ़ा
प्रधानाचार्य
144 लढ़ा निवास, महाजन, बीकानेर, (राज.)
मो: 9982502969

Rajasthan Education Department

सुनो विद्यार्थी

लेखक : गिरिराज व्यास; **प्रकाशक** : राजस्थानी ग्रंथागार, सोजती गेट, जोधपुर (राज.); **संस्करण प्रथम** : 2021; **पृष्ठ संख्या**: 208; **मूल्य**: ₹ 300/-

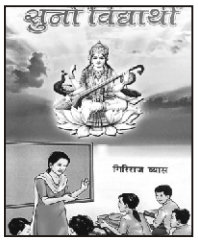

'सुनो विद्यार्थी' संबोधन ही अपने आप में सुनने-पढ़ने वालों को अपील करने वाला है। इस संबोधन में अंतर्निहित है कि कहने-लिखने वाला निश्चय ही विद्यार्थियों के हित में कुछ कहना-लिखना चाह रहा है। 'सुनो विद्यार्थी' शीर्षक से किसी पुस्तक का आना शिक्षक-शिक्षार्थी दोनों के लिए उत्साह एवं उत्सुकता का विषय होना स्वाभाविक है। इस पुस्तक के लेखक एवं प्रस्तुतकर्ता गिरिराज व्यास स्वयं शिक्षक हैं। अतः पुस्तक में सम्मिलित सामग्री व्यावहारिक अनुभव से तैयार हुई है; यह विश्वास किया जा सकता है। 'सुनो विद्यार्थी' कृति को अपनी ख्याति एवं परम्परा के मुताबिक बहुत मोहक व सुंदर ढंग से पाठकों के संसार में लाए हैं जोधपुर के नामचीन प्रकाशक राजस्थानी ग्रंथागार।

समीक्ष्य कृति 'सुनो विद्यार्थी' में कुल 42 अध्याय है। प्रथम अध्याय ब्रह्माण्ड एवं हमारी पृथ्वी में अनन्त ब्रह्माण्ड एवं पृथ्वी का विवेचन करते हुए आकाश गंगाओं, निहारिकाओं, तारों, क्षुद्रग्रहों, उल्काओं, उल्कापिंडों आदि के बारे में बताया गया है। सौर मण्डल के प्रधान सूर्य हैं। सूर्य सौरमंडल का 98 प्रतिशत भाग अकेले घेरे हुए हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सूर्य इतना बड़ा है कि उसमें 13 लाख पृथ्वियाँ समा सकती है। इस अध्याय में आध्यात्म एवं विज्ञान दोनों को आधार बनाकर बहुत उपयोगी जानकारी दी गई है।

हमारी शाश्वत ऋषि परम्परा में जीव की 33 करोड़ योनियाँ मानी गई है। इनमें मनुष्य योनी सर्वश्रेष्ठ है। जीव का प्रमुख उद्देश्य मुक्ति पाना यानी जन्म-मरण के आवागमन से मुक्ति पा लेना भारतीय दर्शन में माना गया है और यह मनुष्य योनी में ही संभव है। इस प्रकार मनुष्य में अप्रतिम क्षमताएँ हैं जो मुक्ति का मार्ग तब दिखाती है। स्वामी विवेकानंद विरचित ग्रंथ राजयोग में 'मानव जीवन ही सर्वश्रेष्ठ' मान्यता को बहुत सुंदर ढंग से समीक्ष्य कृति के अध्याय-2 'मानव जीवन विशेष' में प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में एक वीणा को प्रतीक बनाकर जीवन वीणा का बहुत ही सुन्दर दृष्टान्त पेश किया गया है। सुधि पाठकों को यह पुस्तक आद्योपांत पढ़नी चाहिए।

'नित्य कर्म' अध्याय-4 में अच्छी आदतों पर बहुत प्रभावी तरीके से प्रकाश डाला गया है। शिक्षा/विद्या (अध्याय 3) एवं वैदिक काल में शिक्षा के महत्त्व, शिक्षण विधियों, विद्यालयों, भाषा, विद्यार्थी, शिक्षक आदि के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी लिए है। इस बात की प्रशंसा की जानी चाहिए कि पुस्तक में अधुनातन एवं पुरातन दोनों को बहुत तर्कपूर्ण ढंग से एक साथ प्रस्तुत किया गया है। प्राचीन परम्परागत कहलाने वाले आधारों को वर्तमान वैज्ञानिक कसौटी पर कस कर कहना लेखन एवं प्रस्तुति की खूबसूरती है। अस्तु लेखक को साधुवाद।

शिक्षा के व्यापक फैलाव को बढ़ाते हुए नौ अध्याय पुस्तक की शोभा बढ़ा रहे हैं। ये अध्याय हैं- उत्तर वैदिक काल में शिक्षा (अध्याय-7), बौद्ध शिक्षा (अध्याय-8), प्राचीन व बौद्धकालीन प्रमुख शिक्षा केन्द्र (अध्याय-9), मध्यकालीन इस्लामी शिक्षा (अध्याय-10), मध्यकाल में हिन्दू शिक्षा (अध्याय-11), आधुनिक काल योरोपीय शिक्षा (अध्याय-12), मध्यकाल में हिन्दू शिक्षा (अध्याय-11), बेसिक शिक्षा (वर्धा योजना) (अध्याय-13), स्वातंत्र्योत्तर शिक्षा (अध्याय-14) एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (अध्याय-15)। इन सभी अध्यायों में संबंधित शीर्षक से जुड़ी आवश्यक जानकारियाँ सुंदर ढंग से दी गई है।

भारत की सत्य सनातन परम्परा में माँ को प्रथम गुरु तथा गुरु को भगवान के समान माना गया है। बहुत अपीलिंग दृष्टांतों के द्वारा इन दोनों महान पात्रों का माहात्म्य प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान भौतिक युग में परिवार अपनी अस्मिता खोते जा रहे हैं। दादा-दादी, ताऊ-पापा, भुआ-फूफा आदि अपनी पूर्व शानदार भूमिका में नहीं रहे। संयुक्त परिवार लगभग इतिहास के टॉपिक रह गए है। यूनानी दार्शनिक प्लेटो परिवार को मनुष्य की प्रथम पाठशाला कहते थे। इसी प्रकार विद्यालय को लघु समाज कहा जाता रहा है। बच्चे के व्यक्तित्व व जीवन निर्माण में विद्यालय व परिवार दोनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। पुस्तक सुनो विद्यार्थी में परिवार (अध्याय-8) एवं विद्यालय (अध्याय-9) का दार्शनिक एवं व्यावहारिक पक्ष प्रस्तुत किया गया है। श्री कृष्ण एवं सुदामा की मित्रता को मूल में रखकर पुस्तक में प्रस्तुत अध्याय-22 मित्र पठनीय एवं मननीय है।

समय का महत्त्व, जीवन में लक्ष्य की महत्ता, कर्म का महत्त्व जैसे अध्याय बार-बार पढ़े जाने योग्य है। शारीरिक एवं मानसिक उन्नति, योग एवं आसन, ब्रह्मचर्य, कुसंगति के दुष्परिणाम, स्वाध्याय, अभिप्रेरणा, स्वास्थ्य, अनुशासन, भाग्य एवं परिश्रम जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर अध्याय पुस्तक में दिए गए हैं।

हमारा देश भारत ऋषियों, मुनियों की तप तपस्या से निखरा महान राष्ट्र है। इसकी आध्यात्म शक्ति एवं संस्कृति अद्भुत है। संपूर्ण संसार इसे मानता है। दरअसल इसी में जीवन का वास्तविक आनंद निहित है। खुद को पहचानने (आत्मावलोकन) की शिक्षा महापुरुष सदैव देते रहते हैं। इन विषयों पर आधारित अध्याय पुस्तक में दिए गए है।

निष्कर्षतः पुस्तक 'सुनो विद्यार्थी' विविध विषयों को आधार बनाकर निर्मित एक सुंदर गुलदस्ता है। अक्सर शिक्षक इन विषयों पर विद्यार्थियों के मध्य चर्चा करते रहते हैं। प्रार्थना सभा, बाल सभा एवं उत्सव-पर्व आदि में व्याख्यान होते हैं। यह पुस्तक न केवल विद्यार्थियों के लिए ही अपितु शिक्षक-अभिभावकवृंद के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी, यह विश्वास है। पुस्तक का गेट-अप-बाइडिंग, प्रिंटिंग एवं समग्र प्रस्तुति आकर्षक है। आवरण पर विद्या की माँ सरस्वती एवं कक्षा-कक्ष में छात्र-छात्राओं को पढ़ भी शिक्षक के बहुरंगी चितराम अच्छे बन पड़े हैं। प्रूफ व पृष्ठ संयोजन में कहीं-कहीं सुधार की गुंजाइश लगती है। दो सौ आठ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य 300 रुपये, पुस्तकालय संस्करण की दृष्टि से उपयुक्त ही है। लेखक व प्रकाशक दोनों बधाई के अधिकारी है।

समीक्षक : **मंजू ओझा**
एम (हिन्दी, राजस्थानी), बीएड
विनायक लोक बाबा रामदेवजी रोड, गंगाशहर,
बीकानेर (राज.)

Rajshri Education Department

बालशिविरा

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपनी सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

विज्ञान का महत्त्व

विज्ञान से हर क्षेत्र मजबूत है।
विज्ञान के बिना हम नाबूत है।।

विज्ञान ने चाँद-सूरज को देखा है।
विज्ञान की ही अंतरिक्ष में रेखा है।।

विज्ञान के कारण ही तकनीकी बढ़ी है।
विज्ञान के बिना हमारी जिंदगी घटी है।।

विज्ञान ही चिकित्सा में परचम लहराया है।
विज्ञान के बिना मानव को हर क्षेत्र में हराया है।।

विज्ञान ने ही परमाणु हथियार को बढ़ाया है।
विज्ञान के बिना संसार दुखी कहलाया है।।

विज्ञान ने ही दुनिया को हवाई जहाज में पिरोया है।
विज्ञान ने गहरे सागरों को भी अपने हाथों में नहलाया है।।

विज्ञान ही हर आविष्कारों की जननी है।
विज्ञान के बिना हमारे अंदर नादानी है।।

विज्ञान ही हर सूचनाओं का जाल है।
विज्ञान के बिना हर बीमारी मानव का काल है।।

विज्ञान से ही शिक्षा में प्रगति है।
विज्ञान के बिना हमारी दुर्गति है।।

विज्ञान से ही राष्ट्र का निर्माण होता है।
विज्ञान के बिना प्रकृति का विनाश होता है।।

विज्ञान से ही हर चीजे सुरक्षित है।
विज्ञान के बिना हर स्थान दूषित है।।

विज्ञान ही ज्ञान का रूप है।
विज्ञान के बिना जीवन ही कुरूप है।।

सुभाष गर्ग, कक्षा-12 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय धमाणा का गोलिया, जालोर (राज.) मो :9610714084

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

बचपन के दिन

वो भी क्या बचपन का जमाना था
खुशियों का खजाना था
चाहत तो थी दुनियाँ की सैर करने की
पर कहाँ पैसों का खजाना था
ख्वाईश तो थी तारें तोड़ लाने की
मगर चंदा को मामा बनाना था

बसंत के झूले–झुलकर खूब आनंद उठाना था
बारिश में कागज की नाव बनाकर
समंदर तक ले जाना था
उड़ती कीट–पतंगों को
आसमान से चुराना था

दादी की कहानी सुनकर
माँ का प्यार पाना था
फूलों की खुशबू से होता मौसम सुहाना था
पर दिल तो तितलियों का दीवाना था
वो भी क्या बचपन का जमाना था
खुशियों का जमाना था।।

हीना मेघवाल, कक्षा-दशम 'अ' राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय ढाढाई, पाली (राज.)

पुरानी यादें

वो भी क्या जमाना था,
क्या खूब जमाना था।
कौएँ के बोलने पर मेहमानों का आना था।
कहाँ थे वो बिजली के बल्ब
लालटेनों का उजाला था।
दिन तो बीत जाता गप-सप और बातों में
और फिर सपने आते ठंडी-ठंडी रातों में
कहाँ थे वो पक्के मकान
झोपड़ियों का सहारा था।
वो भी क्या जमाना था,
क्या खूब जमाना था।
भोर होने से पहले उठते
फिर पाठशाला में जाना था।
दिन-भर सिखाएँ पाठ को
गुरुजी को बताना था।
प्रेम तो बहुत था पर कहाँ
पैसों का खजाना था।
दो मीठे बोल थे कहकर
पूरी महफिल को हंसाना
वो भी क्या जमाना था,
क्या खूब जमाना था।
खुशी भले ही कम पर
ज्यादा उसे जताना था।

मिनाक्षी, कक्षा-दश 'अ' राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय ढाढाई, पाली (राज.)

मेरे पापा

मेरे दिल की धड़कन है पापा
मेरी हर एक मुस्कान है पापा
मेरे लब्जों पे सिर्फ नाम है पापा
क्योंकि मेरी जान है पापा।।

मेरी हर काबिलियत की वजह है मेरे पापा
मेरे लिए देते बलिदान है पापा

घर के हर झगड़े में सुलह करते हैं पापा
लगता जैसे फलों के बागान है पापा
रोशनी देने वाली लालटेन है पापा

अरे! शब्द ही है वो एक अनोखा
जो कभी नहीं दे सकता धोखा
खिलते गुलाब की कली है पापा

जो चटकर मुझे उठाते है पापा
मेरी हर इच्छा है पापा
मेरी सारी खुशियाँ है पापा
मेरे दिल की धड़कन है पापा
मेरी हर एक मुस्कान है पापा
क्योंकि मेरी जान है पापा।।

हेमलता मेघवाल, कक्षा-10ए, राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय ढाढाई, पाली (राज.)

Rajasthan Education Department

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

भामाशाह सम्मान समारोह व गर्म स्वेटर वितरण

जोधपुर–ग्राम पंचायत देड़ा स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय जेठावतों की ढाणी प्रेम नगर, सेखाला, जिला जोधपुर में 3 दिसंबर को भामाशाह सम्मान समारोह व बच्चों को गर्म स्वेटर, जूते व अन्य अध्ययन सामग्री का वितरण किया गया। यह सामग्री भामाशाहों के सहयोग से वितरित की गई जिसमें स्वेटर वितरण में श्री बल्लाराम सेन देड़ा तथा अन्य सामग्री अलवर के भामाशाहों के सहयोग से वितरित की गई। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी सेखाला श्री दल्लाराम बॉस तथा विशिष्ट अतिथि सरपंच ग्राम पंचायत देड़ा तथा अध्यक्षता श्रीमती पुष्पलता रांकावत पीईईओ राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय देड़ा के द्वारा की गई। इसके अतिरिक्त 3 दिसंबर शनिवार को विद्यालय में अभिभावक–शिक्षक मीटिंग का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत राजस्थान में शिक्षा के बढ़ते कदम कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित प्रथम आकलन टेस्ट के परिणाम पर अभिभावकों को उनके बच्चों के प्रगति कार्ड के संबंध में विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की गई तथा बच्चों के रिपोर्ट कार्ड वितरित किए गए। साथ ही सभी बच्चों को राजस्थान की मुख्य योजनाओं में शामिल बाल गोपाल दुग्ध योजना व निःशुल्क पोशाक वितरण योजना के संबंध में सूचना दी गई। राजकीय प्राथमिक विद्यालय जेठावतों की ढाणी 2019–20 में भी अच्छे परिणाम व नामांकन के चलते उपखण्ड स्तर पर सम्मानित हो चुका है तथा पूर्व में 2018–19 में भी भामाशाहों के सहयोग से स्वेटर, जूते व स्टेशनरी का वितरण किया जा चुका है।

प्रधानाचार्य कक्ष निर्माण करवाने में प्रधानाचार्य व शिक्षक बने भामाशाह हुआ सम्मान।

बाँसवाड़ा– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिजौरी बड़ी में शनिवार शाम भामाशाओं द्वारा 5 लाख की लागत से निर्मित प्रधानाचार्य कक्ष का लोकार्पण, भामाशाओं का सम्मान व प्रधानाचार्य राजकुमार इन्द्रेश व स्थानांतरित शिक्षकों का विदाई समारोह विद्यालय परिसर में मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कुशलगढ़ शम्भू लाल नायक का मुख्य आतिथ्य, प्रधानाचार्य राजकुमार इन्द्रेश की अध्यक्षता, कुशलगढ़ प्रधानाचार्य भीम

जी सुरावत, टीमेडा बड़ा प्रधानाचार्य कन्हैया लाल डोडियार, चूड़ादा आवासीय विद्यालय प्रधानाचार्य डॉ. कचरू लाल गारी व इन्द्रा बुनकर के विशिष्ट आतिथ्य में संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि शम्भू लाल नायक ने कहा कि मैंने अपने जीवन में यह पहली बार देखा कि कोई संस्थाप्रधान एक लाख इक्यावन हजार रुपये देकर व स्टाफ को मोटिवेट कर विद्यालय में इतना शानदार ऑफिस अपने स्वयं के खर्चे से बनाकर मूर्त रूप दिया हो। विशिष्ट अतिथि भीमजी सुरावत ने बोलते हुए कहा कि घाटा क्षेत्र में भौतिक विकास से विहीन विद्यालय को संस्थाप्रधान बुनकर ने विशेष पहचान दिलवाई है, इसके लिए क्षेत्र के लोग आपको सदैव स्मरण करेंगे। विद्यालय प्रभारी सुरेश चन्द पहाड़िया ने बताया कि इस अवसर पर अतिथियों ने प्रधानाचार्य कक्ष का लोकार्पण किया। भामाशाह प्रधानाचार्य राजकुमार बुनकर का प्रधानाचार्य कक्ष निर्माण में एक लाख इक्यावन हजार रुपये का सहयोग देने पर आदिवासी क्षेत्र की पहचान तीर–कमान, तलवार, चांदी का ब्रेसलेट, शॉल, साफा व श्रीफल भेंट कर सम्मान किया। इसके साथ 21–21 हजार रुपये का सहयोग करने पर सुरेश पहाड़िया, नाथूलाल भाभोर, भूरालाल डिण्डोर, दशरथ पाटीदार, जीतमल निनामा, रामकरण मेघवाल, शंकर लाल, भुरजी निनामा, कमलेश चौधरी, कमलेश मईड़ा, नरेश निनामा, मनोज पारगी व रमेश पारगी व सरपंच पिता रालू भाई को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कौशम्या निनामा ने बताया कि विद्यालय से स्थानांतरण होने वाले शिक्षक बासड़ी फलां के प्रधानाध्यापक कमलेश कुमार दोषी, मांगीलाल भाभोर, दशरथ पाटीदार का भी सम्मान किया गया। स्थानांतरण होने पर प्रधानाचार्य राजकुमार बुनकर ने विद्यालय को पंद्रह हजार का साउंड सेट व कमलेश दोषी, मांगीलाल भाभोर व दशरथ पाटीदार ने विद्यालय को 3100– 3100 रुपये भेंट किया।

भामाशाहों से मिला 2 लाख 81 हजार 700 का शिक्षादान

टोंक–राउप्रावि. अजमेरी में वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह हुआ। प्रधानाध्यापक रामगोपाल शर्मा ने बताया कि समारोह में पूर्व जिला प्रमुख रामबिलास चौधरी, उप प्रधान मूल शंकर शर्मा, जिला शिक्षा समिति टोंक अध्यक्ष किशनलाल बैरवा, डीआर छोगालाल गुर्जर, एसीबीईओ श्योजी लाल बैरवा, पीईईओ खेमराज सोयल, पीईईओ सीतारामपुरा कांता प्रसाद बारेठ, नरेंद्र सिंह बिल्डर, दीपू सिंह, सरपंच

Rajasthan Education Directorate

प्रतिनिधि प्रभूलाल मीणा, जीएसएस अध्यक्ष हनुमान प्रसाद टेलर, शिक्षक संघ सियाराम जिला अध्यक्ष धनसिंह राजावत आदि अतिथियों ने विचार व्यक्त किए। समारोह में जिला शिक्षा समिति टोंक अध्यक्ष किशन लाल बैरवा से 2 लाख, नरेंद्र सिंह पुत्र शैतान सिंह से 21 हजार, विद्यालय स्टाफ से 11 हजार, दीपू सिंह से 5100 सहित कुल 2 लाख 81 हजार 700 रुपये का शिक्षादान मिला है। वहीं नरेंद्र सिंह पुत्र शैतान सिंह अजमेरी द्वारा शिक्षादान में वाटर प्योरिफायर लगाया जाएगा। समारोह में गिर्राज जाट, आशाराम जाट ने सभी के लिए भोजन व्यवस्था की। इस दौरान पीटीएम में राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम आकलन 2 के रिपोर्ट कार्ड अभिभावकों को देकर विद्यार्थियों की प्रगति से अवगत करवाया गया। साथ ही गत वर्ष सभी कक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी निभाने वाले अनुशासन, स्वच्छता, आज्ञा पालन, 100 फीसदी उपस्थिति दर्ज करवाने वाले विद्यार्थियों को भी प्रशस्ति पत्र दिए गए। विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस मौके शिक्षक धनसिंह राजावत, इरफान मोहम्मद, मोनिका, शिवरतन सैनी आदि उपस्थित थे।

वार्षिकोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया

जालोर– कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एसएमसी अध्यक्ष दुदाराम भादरू थे। अध्यक्षता संस्थाप्रधान सुरेंद्र सिंह परमार ने की। कार्यक्रम के प्रारंभ में विद्या की देवी सरस्वती की तस्वीर के आगे दीप प्रज्वलित कर माल्यार्पण कर आगाज किया। भावना, मोनिका, खुशी, सपना, खुशबू, संतोष, कंचन, करुणा, दरिया अंजलि, पायल, मोहसिना, सोनू, रागिनी, जयश्री, ललिता, पलक ने सुंदर नृत्य प्रस्तुत किए। वहीं छात्र हरसन, कुणाल, कृष्णगोपाल, आदि ने भी नित्य किए। इस मौके पर प्रतिभावान छात्रों को व खिलाड़ियों को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन जितेंद्र जीनगर ने किया। इस अवसर पर दलपत सिंह आर्य, राजेश बालोत, राजबाला पूनिया, पूजा शर्मा सहित बड़ी संख्या में अभिभावक उपस्थित थे।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय लालपोल,जालोर की मेगा पीटीएम विद्यालय विकास विद्यालय समिति के अध्यक्ष दुदाराम भादरू की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया। संस्थाप्रधान सुरेंद्र सिंह परमार ने बताया कि बैठक में बाल गोपाल योजना, मिड डे मील, छात्रों के प्रोग्रेस रिपोर्ट, नि:शुल्क पौशाक वितरण इत्यादि के बारे में व कमजोर छात्रों के बारे में अभिभावकों को अवगत कराया गया। सभी अभिभावकों से आग्रह किया कि बच्चों को नियमित स्कूल भेजें तथा सरकार की विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन दलपत सिंह आर्य ने किया। इस मौके पर राजेश बालोत राजबाला पूनिया, पूजा शर्मा सहित बड़ी संख्या में अभिभावक उपस्थित थे।

बच्चे अध्ययन के साथ-साथ सहशैक्षिक गतिविधियों में भाग लेकर परिवार और समाज का नाम रोशन करे

बीकानेर–समग्र शिक्षा अभियान के अतिरिक्त परियोजना समन्वयक गजानंद सेवग ने आज सादुल स्कूल के वार्षिक उत्सव कार्यक्रम मे बोलते हुए उन्होंने कहा– राज्य सरकार ने सरकारी विद्यालय मे अध्ययनरत विद्यार्थियों की प्रतिभाओं को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का एक मौका है और निजी विद्यालयों से प्रतिस्पर्धा का भी एक मौका है। उन्होंने बोलते हुए कहा कि सरकारी विद्यालय के बच्चे प्रतिभाशाली है। अतः इस प्रकार के कार्यक्रमों से उन्हें आगे लाने का मौका है। इस अवसर पर बोलते हुए क्षेत्रिय पार्षद रमजान कच्छावा ने कहा आज सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी हर क्षेत्र में आगे है और इन विद्यालय के अध्यापक कड़ी मेहनत से बच्चों को शैक्षिक और सहशैक्षिक गतिविधियों में अग्रणी रखने में सम्पूर्ण रूप से समर्पित रहते है। कच्छावा ने बच्चों की प्रस्तुतियों को देखकर कहा कि बच्चे व्यवसायिक तरह से आगे बढ़ रहे है। प्रधानाचार्य यशपाल पंवार ने शाला का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए विद्यालय की गतिविधियों के बारे मे विस्तृत जानकारी देते हुए विस्तृत ब्यौरा पेश करते हुए विद्यालय के बच्चो का शैक्षणिक, खेलकूद, कला उत्सव, स्काऊट, एन.सी.सी. और एन.एस.एस. की उपलब्धियों के बारे में जानकारी उपलब्ध करवाई। विद्यालय की कला उत्सव की प्रभारी हिमानी शर्मा के निर्देशन शाला के बच्चों ने रंगारंग प्रस्तुतियों दी। कार्यक्रम में पूर्व छात्र और भामाशाहों के साथ प्रतिभावान छात्रों और प्रभारी शिक्षकों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम की सफलता में भुवनेश सांखला, हिमानी शर्मा, रतन जीनगर, गिरिराज दाधीच, महेन्द्र मोहता, गणेश खत्री, शिवचरण शर्मा, प्रताप सिंह, अंशिका गोयल और समीर की अग्रणी भूमिका रही। कार्यक्रम का संचालन करते हुए सुभाष जोशी ने विद्यालय के विभिन्न गतिविधियों और उपलब्धियों की जानकारी प्रस्तुत की।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

ज्ञान संकल्प पोर्टल

भामाशाहों ने बदला विद्यालय का स्वरूप

महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय वार्ड नं. 10, लक्ष्मणगढ़ (सीकर)

❒ शारदा

सीकर जिले के लक्ष्मणगढ़ ब्लॉक का महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय लक्ष्मणगढ़ का नवीन भवन शिक्षा जगत में ही नहीं अपितु सामाजिक परिवेश में भी अपनी अलग पहचान रखता है क्योंकि फर्श से अर्श तक पहुँचाने का यह गुरुत्तर कार्य भामाशाहों द्वारा किया गया और विद्यालय के भवन के कलेवर को मूर्त रूप देने में भामाशाहों का सराहनीय योगदान रहा है। विद्यालय की शुरूआत वर्ष 2019 में तत्कालीन शिक्षामंत्री माननीय गोविन्द सिंह डोटासरा के कर कमलों द्वारा जिला मुख्यालय से हुई।

विद्यालय की पृष्ठभूमि– यह एक उच्च प्राथमिक विद्यालय था जिसमें मात्र 3 कक्षा कक्ष थे ओर उनकी भी छत से पानी टपकता था। चारदीवारी व शौचालय भी जीर्ण-क्षीर्ण अवस्था में थे जिनको भी मरम्मत की आवश्यकता थी। जहाँ एक तरफ निजी विद्यालयों में एक से बढ़कर एक सुविधाएँ उपलब्ध है वहीं दूसरी ओर इस विद्यालय में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता का कार्य शून्य से शुरू करना था जो एक बड़ी चुनौती थी। सर्वप्रथम अभिभावकों की मीटिंग लेकर एक मजबूत विद्यालय विकास समिति का गठन कर भावी विकास योजना का निर्माण किया तथा जिसमें विद्यालय को तत्काल आवश्यक मूलभूत सुविधाओं की सूची बनाकर उनकी अनुमानित लागत तय की गई। फिर विद्यालय स्टाफ विद्यालय विकास समिति सदस्यों व अभिभावकों ने मिलकर 378000 रुपये की राशि एकत्रित कर मुख्यमंत्री जनसहभागिता योजना के माध्यम से कुल राशि 945000 से भौतिक विकास कार्य करवाए गए।

भामाशाहों ने बदली तस्वीर– विद्यालय के संस्थाप्रधान व स्टाफ के अनवरत भामाशाहों से संपर्क के कारण मात्र 3 कमरों में संचालित विद्यालय वर्तमान में 11 कमरों का रूप ले चुका है। भामाशाहों ने पूरे जोश और नि:स्वार्थ भाव से प्रधानाचार्य के साथ मिलकर

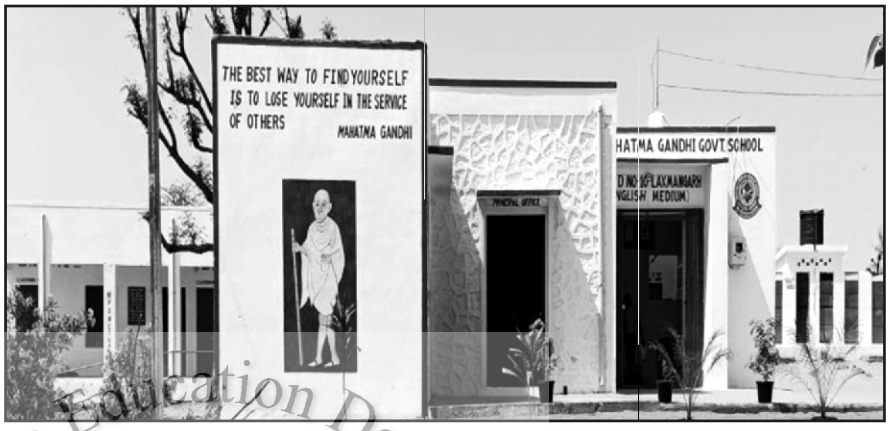

इस शिक्षा के मन्दिर को बनाने के लिए ग्रामवासियों से संपर्क किया। परिणाम ये हुआ कि ज्ञान संकल्प पोर्टल और जनसहयोग से 35 लाख से अधिक रुपये एकत्रित कर मुख्यमंत्री जनसहभागिता से यह स्तुत्य कार्य आरम्भ करवाया। हमारे विद्यालय के सम्मानित भामाशाह जिन्होंने हमारे मोटिवेशन से विद्यालय विकास में अपना योगदान दिया। तत्कालीन शिक्षा मंत्री राजस्थान सरकार माननीय डोटासरा जी द्वारा विद्यालय के फर्नीचर बनाने हेतु 10 लाख रुपये एवं विद्यालय में कम्प्यूटर लेब हेतु 5 लाख रुपये का योगदान दिया गया।

संक्षिप्त भामाशाह परिचय– श्री दिनेश सोमानी जी द्वारा 19 लाख 60 हजार रुपये का योगदान दिया गया जिनको मुख्यमंत्री जनसहभागिता योजना में लगाकर प्राप्त राशि से विद्यालय के 6 कमरों का निर्माण करवाया व विद्यालय में CCTV कैमरे लगवाए गए। जीमल तगाला जी द्वारा उच्च जलाशय क्षमता की पानी की टंकी का निर्माण हेतु विद्यालय को 1 लाख 50 हजार रुपये दिए। श्री रामचन्द्र तोदी जी (लक्ष्मणगढ़ परिवार मुम्बई) द्वारा 3 लाख 20 हजार रुपये दिए जिनको मुख्यमंत्री जनसहभागिता योजना में लगाकर प्राप्त कुल राशि 8 लाख रुपये से 1 कमरों का निर्माण करवाया। श्री ईश्वर मील जी द्वारा 50 हजार रुपये दिए जिनसे टीन शैड का निर्माण करवाया गया। श्री सुरेश मिश्रा जी द्वारा 50 हजार रुपये दिए। श्री बनवारी मण्डीवाल जी द्वारा 21 हजार रुपये दिए गये।

विभिन्न भौतिक सुविधाओं से सम्पन्न परिवेश– विद्यालय में हर तरह की सुख-सुविधा एवं संसाधन है जो कि एक आदर्श विद्यालय में होने चाहिए। हर कक्ष में लाइट, पंखे, ग्रीन बोर्ड, मानचित्र, दीवार घड़ी, टेबल-कुर्सी आदि सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। परिसर में छात्र-छात्राओं के लिए पृथक-पृथक सुलभ शौचालय, पेयजल हेतु ट्यूबवेल, निर्धारित स्थान पर कचरा पात्र, कम्प्यूटर, इन्वर्टर विद्यालय पोर्च, म्युजिकल उपकरण तथा कार्यालय में फर्नीचर, अलमीरा उपलब्ध करवाए गए। विद्यालय रंगरोगन, मैदान समतलीकरण तथा विद्यालय दीवारों पर पेंटिंग करवाई गई एवं बिजली फीटिंग करवाई गई।

सहशैक्षिक गतिविधियाँ– विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अध्ययन अध्यापन के कार्य के साथ-साथ विद्यालय में सत्रपर्यन्त नियमित रूप से सहशैक्षिक गतिविधियों का आयोजन भी किया जाता है जिसमें खेलकूद प्रतियोगिता नृत्य, गायन, निबन्ध, पोस्टर, मॉडल, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आदि का भी आयोजन किया जाता है। प्रत्येक बुधवार को

Rajasthan Education Department

एक्टिविटी दिवस रखा जाता है जिसमें कक्षा स्तर के आधार पर छात्रों को एक्टिविटी करवायी जाती है। प्रत्येक शनिवार को शैक्षिक सहगामी क्रियाओं हेतु रखा जाता है जिसमें कक्षा स्तर के आधार पर छात्र-छात्राओं से क्रियाएँ करवाई जाती है। इसके अतिरिक्त साप्ताहिक टेस्ट व क्विज प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जाता है। प्रत्येक सोमवार गृहकार्य जाँच दिवस के रूप में रखा जाता है।

पर्यावरण संरक्षण– हरियाली किसी भी परिसर की सुंदरता में चार चाँद लगाने का काम करती है तो इस दृष्टि से भी यह विद्यालय पर्यावरण संरक्षण का अनूठा उदाहरण है। विद्यालय स्टाफ के सहयोग से परिसर में लगभग 100 पौधें लगाए गए जिनमें आयुर्वेदिक औषधीय, फलदार एवं फुलवारी आदि कई किस्म लगाई गई हैं। बड़ी संख्या में पौधों की वजह से यह विद्यालय किसी हरित वाटिका से कम नहीं है। पेड़ पौधों से युक्त हरियालीमय वातावरण परिवेश में एक तरह का आनन्द भरता है जिससे विद्यार्थी भी सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण रहते हैं।

खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन – स्वस्थ शरीर स्वस्थ मस्तिष्क को जन्म देता है इस उक्ति को आत्मसात करते हुए विद्यालय में समय-समय पर खेलकूद गतिविधियों का आयोजन संकाय सदस्यों द्वारा करवाया जाता है। विद्यालय की टीम जिला स्तर एवं विद्यालय स्तर पर भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करती रही है। बैडमिंटन में छात्र प्रियांशु नागवान का राज्य स्तर पर चयन हुआ।

प्रधानाचार्य की कलम से– जब मैंने (श्रीमती शारदा) इस संस्था में 10 जुलाई 2020 को कार्यग्रहण किया जब तक यह एक उच्च प्राथमिक विद्यालय था। भौतिक संसाधनों के अभाव में विद्यालय स्टाफ और विद्यार्थी कई तरह की परेशानियों का सामना कर रहे थे। मैंने पूरी लगन और निष्ठा के साथ स्टाफ के साथ मिलकर ग्रामवासियों एवं भामाशाहों से सम्पर्क किया। मेरी स्कूली शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय से होने के कारण मैंने शुरू से ही इस विद्यालय को केवी व अन्य कॉन्वेन्ट स्कूल की तरह चलाने की योजना बनाकर काम प्रारम्भ किया। जिससे बहुत ही अल्प समय में विकास कार्य तेजी से हुए व मेरे कार्यकाल में विद्यालय का नामांकन 30 से बढ़कर 700 से अधिक हुआ। तत्कालीन शिक्षा निदेशक श्रीमान सौरभ स्वामी जी के द्वारा इन विद्यालयों की समस्याओं के निराकरण में व्यक्तिगत रुचि लेकर सम्बल प्रदान किया गया। साथ ही SDMC व भामाशाहों के योगदान के कारण अत्यंत अल्प समय में ही इस विद्यालय में लगभग 35 लाख से अधिक तक के कार्य हो पाए।

प्रधानाचार्य
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय लक्ष्मणगढ़,
सीकर (राज.)
वर्तमान **पदस्थान:** महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय
गुगारा, सीकर (राज.)

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से
राजकीय विद्यालयों को माह-दिसम्बर 2022 में 50 एवं अधिक राशि का सहयोग करने वाले भामाशाह

S. No.	Donar Name	School Name	Block Name	District	Amount
1	Kanta Prasad Changoiwala	Banarasi Devi Govt. Girls Upper Primary School Rajgarh (472507)	Rajgarh	Churu	1600000
2	Sanjeev Kumar	Govt. Senior Secondary School Dayalpura (221056)	Ahore	Jalor	349000
3	Tek Ram Meena	Govt. Senior Secondary School Saiwala (217829)	Gangapur City	Sawai Madhopur	321000
4	Shanta Devi	Govt. Upper Primary School Keharpura (475155)	Pilani	Jhunjhunu	300000
5	Mukesh Subhkaran Baid	Mahatma Gandhi Govt. School Bapunagar Ratangarh (215613)	Ratangarh	Churu	240000
6	Baid Mahendra Shubhkaran	Sanchiyalal Baid Govt. Girls Senior Secondary School Ratangarh (215605)	Ratangarh	Churu	240000
7	Vinod Bhanwarlal Sharma	Govt. Senior Secondary School Dhigarla (215200)	Rajgarh	Churu	210000
8	Keshavdeep Iron Traders Private Limited	Shri Vishveshvar Lal Dujod Wala Govt. Senior Secondary School Dujod (213298)	Dhod	Sikar	150000
9	Poonam Aggarwal	Saheed Dalip Singh Govt. Senior Secondary School Khohar Behror (216182)	Behror	Alwar	140000
10	Ram Murti	Saheed Dalip Singh Govt. Senior Secondary School Khohar Behror (216182)	Behror	Alwar	140000
11	Intimetec Visionsoft Private Limited	Anardevi Govt. Senior Secondary School Nagar (217063)	Nagar	Bharatpur	125000
12	Govind Chand Goyal	Govt. Girls Senior Secondary School Nayabas Sector Four Kala Kuan Alwar (215734)	Umrain	Alwar	111111
13	Rajkumar Dhayal	Shaheed Puranmal Govt. Senior Secondary School	Dhod	Sikar	100000

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

		Sanwaloda Dhayalan (213275)			
14	Ratan Singh	Govt. Senior Secondary School Peepli (215844)	Pilani	Jhunjhunu	100000
15	Ram Partap Aggarwal	Saheed Dalip Singh Govt. Senior Secondary School Khohar Behror (216182)	Behror	Alwar	100000
16	Tejasvi Dixit	Govt. Senior Secondary School Bardasar (215319)	Sardarshahar	Churu	100000
17	Ajay Aggarwal	Saheed Dalip Singh Govt. Senior Secondary School Khohar Behror (216182)	Behror	Alwar	100000
18	Vikram Singh	Shri Vishveshvar Lal Dujod Wala Govt. Senior Secondary School Dujod (213298)	Dhod	Sikar	100000
19	Surendra Kumar Baliwal	Govt. Senior Secondary School Malsar (215636)	Jhunjhunu	Jhunjhunu	100000
20	Gayatri Chaudhri	Govt. Senior Secondary School Kusumdesar (215570)	Ratangarh	Churu	79600
21	Bharti Road Carrier	Govt. Upper Primary School Shyampura (477505)	Churu	Churu	78000
22	Jai Baba Contraction Company	Govt. Senior Secondary School Jhalo Ka Gada (225320)	Garhi	Banswara	75000
23	Arvind Kumar	Govt. Senior Secondary School Khuddi (215224)	Rajgarh	Churu	71000
24	Pawan Kumar	Govt. Senior Secondary School Akora (219589)	Jayal	Nagaur	65000
25	Sunil Kumar	Shaheed Sub.omprakash Govt. Senior Secondary School Rampura Beri Block-rajgarh Dist- Churu (215254)	Rajgarh	Churu	61000
26	Krishan Kumar	Govt. Upper Primary School Chubkiyagarh (476796)	Rajgarh	Churu	60000
27	Ashok Kumar Sharma	Shri Mandi Kameti Govt. Senior Secondary School Dundlod Mandi (216096)	Nawalgarh	Jhunjhunu	60000
28	Khemaram	Govt. Senior Secondary School Jogaliya (215478)	Sujangarh	Churu	57650
29	Bhanwar Singh Dhayal	Shaheed Puranmal Govt. Senior Secondary School Sanwaloda Dhayalan (213275)	Dhod	Sikar	55000
30	Ramu Ram Beniwal	Govt. Senior Secondary School Luhara (215472)	Bidasar	Churu	53100
31	Kishan Lal	Govt. Upper Primary School Bhidasari Ladnun (477524)	Ladnun	Nagaur	51000
32	Ramnarayan Meena	Govt. Senior Secondary School Itawa (224446)	Itawa	Kota	51000
33	Pramendra Garg	Mahatma Gandhi Govt. School Rudawal (217421)	Roopwas	Bharatpur	51000
34	Jaikaran	Govt. Senior Secondary School Chubkiya Tal (215207)	Rajgarh	Churu	51000
35	Kanhaiyalal	Govt. Senior Secondary School Khuddi (215224)	Rajgarh	Churu	51000
36	Surendra Kumar	Govt. Senior Secondary School Suratpura (212406)	Bhadra	Hanumangarh	51000
37	Ashish Kumar	Shri Mandi Kameti Govt. Senior Secondary School Dundlod Mandi (216096)	Nawalgarh	Jhunjhunu	50000
38	Om Prakash Kasawa	Govt. Senior Secondary School Akora (219589)	Jayal	Nagaur	50000
39	Jaga Ram	Govt. Upper Primary School Ratau Ki Dhani (462274)	Ladnun	Nagaur	50000
40	Dayaram Vishnoi	Govt. Senior Secondary School Gulle Ki Bery (220980)	Sedwa	Barmer	50000
41	Dharmvir Singh	Shahid Shishram Nimar Govt. Senior Secondary School Norangpura (215270)	Rajgarh	Churu	50000
42	Col Rajesh Bhukar	Govt. Senior Secondary School Deenarpura Piprali Sikar (213379)	Piprali	Sikar	50000

Rajasthan Education Department

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह–दिसम्बर 2022 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	CHURU	280	5159840
2	JHUNJHUNU	81	1184330
3	NAGAUR	2229	987141
4	BANSWARA	412	921645
5	SIKAR	727	795437
6	ALWAR	114	644145
7	SAWAIMADHOPUR	1143	489437
8	JALOR	807	452718
9	BHARATPUR	293	241521
10	KOTA	172	169598
11	JAISALMER	968	134972
12	JAIPUR	466	132423
13	BUNDI	408	116221
14	JHALAWAR	208	109357
15	BIKANER	433	106018
16	CHITTAURGARH	79	104371
17	BARMER	64	101100
18	UDAIPUR	234	98289
19	HANUMANGARH	76	89150
20	PALI	187	80871
21	BHILWARA	149	71036
22	KARAULI	459	68861
23	BARAN	39	68557
24	AJMER	196	57404
25	RAJSAMAND	51	52007
26	DAUSA	6	46609
27	JODHPUR	199	46155
28	TONK	16	40070
29	GANGANAGAR	26	25963
30	PRATAPGARH	124	22877
31	DHAULPUR	1	10000
32	DUNGARPUR	8	5310
33	SIROHI	6	652
	Total	**10661**	**12634085**

ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृत प्रोजेक्ट

विभिन्न औद्योगिक घरानों/संस्थाओं/व्यक्तिगत दानदाताओं द्वारा राजकीय विद्यालयों में सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से स्वीकृति हेतु ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Create your own Projects में Projects Submit किए गए। माह दिसम्बर 2022 में अग्रांकित अनुसार **2 करोड़ 85 लाख से अधिक की लागत के कुल 07 Projects** स्वीकृत/अनुमति प्रदान की गई हैं–

क्र. सं.	कम्पनी/संस्था/दानदाता का नाम	प्रोजेक्ट संख्या	कम्पनी/संस्था/दानदाता द्वारा किए जाने वाले कार्य का विवरण	अनुमानित लागत/ व्यय (लाख में)
1	वंशिका कला शिक्षा कल्याण सोसायटी	1218	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, गैलरिया, सांगानेर सिटी, जयपुर में भवन, कक्षा-कक्ष (1-8), छात्र-छात्राओं का शौचालय, बिजली की सुविधा/ बिजली की फिटिंग, पीने का पानी, एचएम रूम, रैंप, कंप्यूटर रूम, लाइब्रेरी रूम, स्टाफ रूम का निर्माण कार्य	150.00
2	चम्बल फर्टिलाइजर एण्ड केमिकल्स लि.	1222	कोटा के 07 एवं बांरा के 02 राजकीय विद्यालयों में स्मार्ट क्लास की स्थापना का कार्य	10.00
3	चम्बल फर्टिलाइजर एण्ड केमिकल्स लि.	1223	कोटा के 02 राजकीय विद्यालयों में खेल मैदान के विकास का कार्य	100.00
4	श्री पिस्टन्स एण्ड रिंग लि.	1225	राजकीय प्राथमिक विद्यालय पथरेडी, तिजारा, अलवर मे सैनिटेशन एवं शौचालयों का निर्माण कार्यं	0.50
5	ए.यू स्मॉल फाइनेन्स बैक लि.	1226	राजकीय उच्च प्राथमिक मालेरा बरोडिया, विराटनगर, जयपुर में 20 स्टूल और टेबल का कार्य	0.34
6	श्रीमति सी. एम. मूंधडा मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट	1228	श्रीमति गीता देवी बागड़ी राबाउमावि नापासर, बीकानेर में बिजली सुविधा/ बिजली फिटिंग, फर्नीचर, प्रमुख मरम्मत, बाला/एबीएल गतिविधियाँ इत्यादि का कार्य	23.37
7	किशना राम	1229	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, खोजास, मोलासर, नागौर में पानी पीने की व्यवस्था जल मदिर का कार्य	1.11
	कुल राशि			**285.32**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : फरवरी, 2023 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे–97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर–302 004 फोन : 0141–2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक : सुनीता चावला, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

एपीजे अब्दुल कलाम व्यक्तित्व विकास योजनान्तर्गत मेधावी विद्यार्थियों के अंतर्राज्य शैक्षणिक भ्रमण की झलकियाँ

जोधपुर मण्डल के भ्रमण दल को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला एवं संयुक्त निदेशक, जोधपुर मण्डल श्री प्रेमचन्द सांखला।
जोधपुर मण्डल के भ्रमण दल द्वारा ताजमहल व फतेहपुर सीकरी का भ्रमण।

भरतपुर मण्डल के भ्रमण दल द्वारा साबरमती रिवर फ्रंट, बडौदा म्यूजियम एवं पिक्चर गैलेरी, कच्छ, स्टेच्यू ऑफ यूनिटी का भ्रमण।

कोटा मण्डल के भ्रमण दल द्वारा पंचमढ़ी, मोती मस्जिद, भीम बेटका भोपाल का भ्रमण।

पाली मण्डल के भ्रमण दल द्वारा एलोरा की गुफाएँ एवं
स्टेच्यू ऑफ यूनिटी का भ्रमण।

जयपुर मण्डल के भ्रमण दल द्वारा इण्डिया गेट एवं
स्वर्ण मंदिर अमृतसर का भ्रमण।

बीकानेर मण्डल के भ्रमण दल द्वारा अक्षरधाम मंदिर एवं
संजय गाँधी नेशनल पार्क मुम्बई का भ्रमण।

उदयपुर मण्डल के भ्रमण दल द्वारा एलोरा की गुफाएँ एवं
वराहमिहिर सौर वैधशाला उज्जैन का भ्रमण।

चित्र वीथिका : फरवरी, 2023

74वें गणतन्त्र दिवस के अवसर पर निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर में ध्वजारोहण करते हुए
निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री गौरव अग्रवाल एवं उपस्थित समस्त अधिकारी व कर्मचारी गण

बसंत पंचमी के शुभावसर पर निदेशालय परिसर में अवस्थित सरस्वती मंदिर में पूजन करते हुए निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री गौरव अग्रवाल,
अतिरिक्त निदेशक श्रीमती रचना भाटिया एवं उपस्थित अधिकारी व कर्मचारी गण

कार्यक्रम की झलकियाँ

18वीं जम्बूरी 2023 पाली में निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री गौरव अग्रवाल विभागीय अधिकारियों के साथ स्काउट गाइड गतिविधियों का अवलोकन करते हुए।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/414/2023-25 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● फरवरी, 2023 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 फरवरी, 2023 पृष्ठ 56 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

18वीं राष्ट्रीय जम्बूरी 2023 पाली, राजस्थान का आगाज महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, महामहिम राज्यपाल राजस्थान कलराज मिश्र, माननीय मुख्यमंत्री राजस्थान अशोक गहलोत एवं अन्य सम्माननीय अतिथिगण की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ।

Rajasthan Education Department